



केनरा ज्योति

अंक : 40

अप्रैल-जून 2024



केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking



सिंडिकेट Syndicate

Together We Can



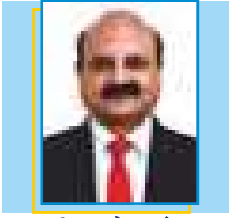
दिनांक 15 मई, 2024 को आयोजित प्रधान कार्यालय, राजभाषा अनुभाग, बेंगलूरु की 192वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 39वें अंक का विमोचन करते हुए श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री डी. सुरेन्द्रन, मु.म.प्र एवं अन्य कार्यपालक गण उपस्थित रहे।



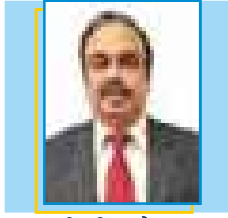
दिनांक 28.06.2024 को आयोजित प्रधान कार्यालय के मुख्य सम्मेलन कक्ष में 22वीं वार्षिक सामान्य बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री विजय श्रीरंगन, बोर्ड अध्यक्ष एवं श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने की। चित्र में श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक, श्री भावेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक, अन्य बोर्ड सदस्य और अन्य कार्यपालक गण देखे जा सकते हैं।



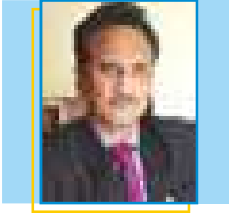
श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी



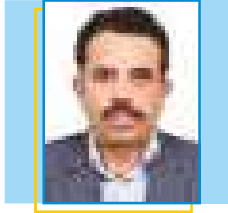
श्री अशोकचंद्र
कार्यपालक निदेशक



श्री डी. सुरेन्द्र
मुख्य महाप्रबंधक



श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक



श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक
मुख्य संपादक

संपादक

रिनु मीना, प्रबंधक

श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री विजय कुमार, अधिकारी
श्री मनीष अभिमन्यू चौरसिया, अधिकारी

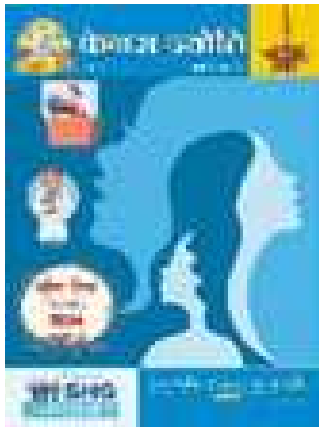
संपादन सहयोग

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
ई-मेल: hool@canarabank.com
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों
के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे
सहमत होना ज़रूरी नहीं है।



विषय सूची

पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश - के. सत्यनारायण राजु	2
मुख्य संपादक का संदेश - ई. रमेश	3
39वां अंक मेरी नज़र में हिन्दी दिवस विशेषांक - मनीषा शर्मा	4
एआई का उदय और बैंकिंग क्षेत्र में इसका अनुप्रयोग आकाश उत्तम ढोबले	5
राजभाषा में एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) - प्रकाश माली	8
ट्रांसफर - आशुतोष कुमार	14
मीत - दिव्या प्रजापति	14
झीलों के शहर - उदयपुर की यात्रा - उमा खंडेलवाल	15
मदद - अशोक कुमार मेहेर	17
मैं एक औरत हूँ... - पुजा तायल	18
माँ की पुण्यतिथि पर - मधुमिता कुमारी	18
भारतीय कृषि: चुनौतियां, प्रयास और संभावनाएं - निशा शर्मा	19
नागपुर से पुणे एवं समीपवर्ती स्थान - गौरव जोशी	23
कुछ कहना है - भावना	27
प्रकृति और प्रेम.. - ऋचा गुप्ता	27
सोशल मीडिया और डिजिटल बैंकिंग - चंद्रकांत तुंबडे	28
हेल्थ इंश्योरेंस: ज़रूरत, लाभ और चुनौतियां - शिखर प्रजापति	33
सम्मान निधि - निखलेश सोनी	38
मन गांव में ही रह गया - हिमाद्री मित्रा	39
के नरा की डिजिटल लहर.... - प्रणब महापात्रों	39
अरुणाचल प्रदेश - एक छोटी सी यात्रा - तेजस भारद्वाज	40
बैंको में परिचालन जोखिम - शीला कुमारी वर्मा	43
वित्तीय समावेशन में वृद्धि और भविष्य - शशि कान्त पाण्डेय	47
चुनावी दंगल - आदित्य कुमार	50
माँ की ममता - रवि कुमार	50
भारतीय अर्थव्यवस्था : कल, आज और कल - सुमित कुमार	51
धरा - निहारिका वशिष्ठ	55
अनुभूति - हेमा निम्बेकर	55
पापा की बेटी - ब्रिजेश कुमार श्रीवास्तव	56
जिंदगी - राजेश कुमार दास	56

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका केनरा ज्योति के 40वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका देश भर के कार्यालयों में राजभाषा के माध्यम से बैंकिंग विकास संबंधी प्रमुख सुझाओं को साझा करने का एक श्रेष्ठ माध्यम है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीति व नियमों का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित करते हुए बैंकिंग के सभी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार करने में अपनी अहम भूमिका निभाते रहें। हिंदी संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को जागृत रखती है। देश की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी समरसता वाली भाषा है जिसके कारण आम जन इससे आसानी से जुड़ जाते हैं। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की महत्ता को देखें तो हम यह महसूस करेंगे कि हिंदी आखिरी ग्राहक तक बैंकिंग सुविधाओं और सेवाओं को पहुंचाने में न केवल सरल और सुगम मार्ग प्रशस्त करती है बल्कि उपभोक्ताओं के विश्वास को जीतने में भी सहायता प्रदान करती है।

हमने संवेदनशील दौर में नए वित्तीय वर्ष में कदम रखा है। देश की वर्तमान परिस्थितियों में बेहतर और सुरक्षित ग्राहक सेवा के जरिए ग्राहक - केन्द्रित बैंक के रूप में हमारे बैंक की पहचान और भी सुदृढ़ होगी। गत वर्षों में पूरी दुनिया में बैंकिंग उद्योग में तकनीकी ने अकल्पनीय बदलाव लाए हैं। इंटरनेट और मोबाइल की पहुंच दुनिया भर के लोगों और संगठनों को जोड़ने वाले दूर-दराज़ के कोनों तक पहुंच गई है। ग्राहक तेज़ी से नए-नए ऑनलाइन उत्पादों और सेवाओं की ओर रुख कर रहे हैं। इसी क्रम में, बैंक सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से डिजिटल बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहकोन्मुखी नए-नए उत्पाद



विकसित करने की दिशा में अग्रणी रहा है। बैंक ने ग्राहकों की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए संगठनों के काम करने के तरीके को बदल दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी समर्पित टीम पूरी दक्षता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करती रहेगी तथा बैंकिंग सेवा की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए अपने नए प्रयासों को भी जारी रखेगी।

सभी लेखकों से अनुरोध है कि वे पत्रिका हेतु निरंतर विभिन्न बैंकिंग संबंधी लेखों के माध्यम से अपने बहुमूल्य सुझाव प्रेषित करते रहें तथा सभी पाठकगण निरंतर पत्रिका को पढ़ें व इसका संवर्धन करें। केनरा ज्योति पत्रिका का प्रकाशन एक सकारात्मक एवं सराहनीय प्रयास है, पत्रिका के पाठकों एवं संपादन मंडल को हार्दिक बधाई और पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

के. सत्यनारायण राजु

के. सत्यनारायण राजु

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति पत्रिका के 40वें अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। केनरा ज्योति के इस नवीनतम अंक में आप के समक्ष समसामयिक विषयों तथा ज्ञानवर्धक आलेख के साथ तनाव को दूर करने वाले हास्य लेख भी सम्मिलित हैं। यह अंक सुंदर शब्दों में पिरोए गए मन के कोमल भावों से सजी एवं मंत्रमुग्ध कर देने वाली कविताओं तथा ज्ञानवर्धक आलेखों से लेकर बैंक की विविध गतिविधियों की झलकियों का समागम है।

बैंकिंग एक ऐसा क्षेत्र है जहां नित नयी चुनौतियाँ एवं अवसर जन्म लेते रहते हैं, जो हमें निरंतर प्रगति करने तथा नयी ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करते हैं। यही वजह है कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। आज के बदलते वैश्विक परिवेश में वित्तीय चुनौतियों का सामना करने तथा बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए प्रत्येक संस्था द्वारा नए प्रयोग किए जा रहे हैं। परिवर्तन जीवन का अभिन्न अंग है, लेकिन परिवर्तन को स्वीकार करना एक दुरूह कार्य है। किंतु औद्योगिक आवश्यकताओं एवं कारोबार विकास के लिए समय की मांग के अनुरूप संगठनात्मक परिवर्तन लाना भी अनिवार्य है। इन परिवर्तनों से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए एक बेहतर मानव संसाधन प्रबंधन और नियोजन की आवश्यकता होती है।

परिवर्तन हो या जोखिम, अनर्जक आस्तियां हो या परिचालन लागत इन सभी का प्रबंधन करना अनिवार्य है। इन सब के आलोक में ज्ञानवर्धन का महत्व बढ़ जाता है। इसी क्रम में राजभाषा अनुभाग की पत्रिका 'केनरा ज्योति' प्रासंगिक एवं समसामयिक विषयों पर आलेखों को समाहित कर सभी केनराइट्स के ज्ञान का विस्तार करने में प्रयासरत है। आर्थिक मामलों में सभी को जानकारी प्रदान करने तथा हर तबके को बैंकिंग से जोड़ने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं, उसमें भाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।



निःसंदेह समावेशी विकास में जो भूमिका भारतीय भाषाएं तथा विशेष रूप से राजभाषा हिंदी निभा सकती है वह कार्य किसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। 'केनरा ज्योति' पत्रिका हिंदी भाषा के माध्यम से बैंकिंग तथा भाषा व साहित्य के विषय में जानकारी प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न सिर्फ बैंकिंग की बातें करते हैं बल्कि हमारे बैंक में मौजूद सृजनात्मक प्रतिभाओं को अपने कौशल प्रदर्शन का भी अवसर प्रदान करते हैं।

संपादक मंडल की ओर से, मैं उन सभी रचनाकारों और लेखकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी लेखन क्षमता से पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया है। 'केनरा ज्योति' की चिरंतर संवृद्धि के लिए आपकी प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

हमारी पत्रिका को केननेट के मुख्य पटल पर/ केनराइट्स ऐप/ वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। आप सभी पत्रिका को पढ़कर ज्ञानवर्धक जानकारी से लाभान्वित हो सकते हैं।

अनेक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,



ई रमेश

सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक



39वां अंक मेरी नज़र में

आपके प्रधान कार्यालय की तिमाही गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 'जनवरी-मार्च, 2024' अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस विशेषांक में महिलाओं की समाज निर्माण एवं कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका और नारी सशक्तिकरण को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत एवं समाहित किया गया है। विषय विविधता के साथ गहन ज्ञानवर्धन और पाठकों को जोड़ने की इस अंक में विशिष्ट क्षमता निहित है।

वैसे तो आपकी पत्रिका में सभी बहुत बढ़िया हैं परन्तु 'महिलाओं को प्रोत्साहन: राष्ट्र की उन्नति में सहयोग', 'भारत की प्रसिद्ध लेखिकाएं', 'मीराबाई चानू की कहानी', 'बिटिया रानी', 'एक सलाम नारी शक्ति के नाम', 'मानव कंप्यूटर - शकुंतला देवी', 'नारी: एक जीवंत समाज का आधार', 'मलयालम की महिला कहानीकार - एक परिचय', 'जीजाबाई', 'माँ तो माँ होती है' लेख पत्रिका को उत्कृष्ट बनाते हैं।

विविध पाठकवर्ग को ध्यान में रखते हुए यात्रा वृत्तांत, कविता रस, संस्मरण, राजभाषा गतिविधियाँ, अद्यतित बैंकिंग सूचनाएं आपकी पत्रिका में बखूबी प्रस्तुत की गई है। कुल मिलाकर कहा जाए तो एक संग्रहणीय अंक बना है, जिसके लिए आपको और संपादक मंडल को साधुवाद, हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक हेतु शुभकामनाएं, आशा है कि आगे भी हमें आपकी पत्रिका के ऐसे ही रोचक और ज्ञानवर्धक अंक प्राप्त होते रहेंगे।

- मनीषा शर्मा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नेशनल बैंक



आलेख

एआई का उदय और बैंकिंग क्षेत्र में इसका अनुप्रयोग

बैंकिंग क्षेत्र तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रहा है, जहाँ अत्याधुनिक तकनीकें इस परिवर्तन को दिशा दे रही हैं। इनमें से एक प्रमुख तकनीक है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), जो बैंकों के संचालन के तरीके में क्रांति ला रही है। एआई मशीनों को बुद्धिमान बनाने और मानवीय कार्यों को स्वचालित करने में सक्षम बनाने का विज्ञान है। यह मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और अन्य उन्नत तकनीकों का एक संयोजन है।

पिछले कुछ दशकों में, एआई का तेजी से विकास हुआ है और अब यह विभिन्न उद्योगों में व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है। बैंकिंग क्षेत्र भी इस क्रांति से अछूता नहीं रहा है। बैंक तेजी से एआई तकनीकों को अपना रहे हैं ताकि ग्राहक सेवा को बेहतर बना सकें, दक्षता बढ़ा सकें, लागत कम कर सकें और धोखाधड़ी का पता लगा सकें।

आने वाले वर्षों में, एआई बैंकिंग उद्योग को और भी अधिक प्रभावित करने वाला है। यह न केवल बैंकों के संचालन के तरीके को बदल देगा बल्कि ग्राहकों के बैंकिंग अनुभव को भी बदल देगा।

ग्राहक सेवा में क्रांति लाना :

ग्राहक सेवा बैंकों का एक महत्वपूर्ण विभाग है। पारंपरिक रूप से, बैंक शाखाओं और मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक सेवा प्रदान करते थे। हालांकि, ये विधियां धीमी और अक्षम हो सकती हैं। एआई इन प्रक्रियाओं को बदल रहा है।

एआई-आधारित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट अब 24/7 ग्राहक सहायता प्रदान कर रहे हैं। ये उपकरण सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, खाता संबंधी जानकारी प्रदान कर सकते हैं, खाता शेष राशि की जांच करने में सहायता कर सकते हैं, बिल भुगतान करने में मदद कर सकते हैं और यहां तक कि सरल लेनदेन करने में भी सहायता कर सकते हैं। इससे बैंकों को मानव कर्मचारियों के कार्यभार को कम करने और ग्राहकों को सुविधाजनक सहायता प्रदान करने में मदद मिलती है।



आकाश उत्तम ढोबले

प्रबंधक

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर-II

इसके अलावा, एआई प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण का उपयोग करके ग्राहकों के सवालों को समझने में सक्षम है। यह ग्राहकों को अधिक प्राकृतिक और सहज वार्तालाप करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, ग्राहक चैटबॉट से पूछ सकता है, मेरे खाते में कितना पैसा बचा है? और चैटबॉट ग्राहक को उनकी वर्तमान खाता शेष राशि बताएगा।

ग्राहक सेवा में एआई के अनुप्रयोगों के कुछ लाभों में शामिल हैं :

- 24/7 उपलब्धता : ग्राहक किसी भी समय, कहीं से भी सहायता प्राप्त कर सकते हैं।
- तेज और कुशल सेवा : एआई सरल प्रश्नों का जवाब जल्दी दे सकता है और ग्राहकों को लंबे समय तक इंतजार नहीं करना पड़ता।
- सुविधा : ग्राहक अपने फोन या कंप्यूटर का उपयोग करके सहायता प्राप्त कर सकते हैं।
- निजीकृत : एआई ग्राहक के वित्तीय इतिहास और आवश्यकताओं के आधार पर सहायता प्रदान कर सकता है।

कुल मिलाकर, एआई ग्राहक सेवा में क्रांति ला रहा है। यह बैंकों को अधिक कुशल और प्रभावी ग्राहक सेवा प्रदान करने में मदद कर रहा है।

ऋण प्रक्रिया का त्वरण :

पारंपरिक ऋण आवेदन प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली हो सकती है। इसमें कई फॉर्म भरना, दस्तावेज जमा करना और बैंक के



फैसले की प्रतीक्षा करना शामिल है। कई बार, ग्राहकों को ऋण स्वीकृति या अस्वीकृति के कारणों को समझने में भी कठिनाई होती है। एआई ऋण प्रक्रिया को तेज और अधिक कुशल बनाने में मदद कर सकता है, जोकि ग्राहकों के अनुभव को सरल बनाता है।

यहां बताया गया है कि एआई ऋण प्रक्रिया में कैसे सहायता करता है:

स्वचालित डेटा विश्लेषण: एआई-आधारित सिस्टम ग्राहक के वित्तीय डेटा, क्रेडिट इतिहास और अन्य प्रासंगिक जानकारी का विश्लेषण करके ऋण योग्यता का आकलन कर सकते हैं। यह डेटा बैंक खातों, क्रेडिट ब्यूरो रिपोर्टों, और अन्य स्रोतों से आ सकता है। एआई मॉडल इस डेटा का उपयोग करके ग्राहक की वित्तीय स्थिति का व्यापक मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं, जिसमें आय, व्यय, बचत इतिहास और ऋण दायित्व शामिल हैं।

तेज निर्णय लेना: पारंपरिक रूप से, ऋण अधिकारियों को ऋण आवेदनों की समीक्षा करने और निर्णय लेने में समय लगता है। एआई मॉडल, डेटा विश्लेषण के आधार पर, ऋण स्वीकृति या अस्वीकृति की सिफारिश कर सकते हैं। कुछ मामलों में, एआई स्वचालित रूप से कम जोखिम वाले ऋणों को मंजूरी दे सकता है, जोकि प्रक्रिया में लगने वाले समय को काफी कम कर देता है।

व्यक्तिगत ऋण प्रस्ताव: एआई ग्राहक की वित्तीय स्थिति और आवश्यकताओं के आधार पर व्यक्तिगत ऋण दरों और शर्तों की सिफारिश कर सकता है। यह ग्राहकों को सबसे उपयुक्त ऋण विकल्प चुनने में मदद करता है।

आवेदन प्रक्रिया में सुधार: एआई का उपयोग करके बैंक ऋण आवेदन प्रक्रिया को अधिक सहज बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, एआई ग्राहक को आवश्यक दस्तावेज़ जमा करने में मार्गदर्शन कर

सकता है और किसी भी त्रुटि या कमी को जल्दी से पहचान सकता है।

एआई ऋण प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने में भी मदद कर सकता है। ग्राहक यह समझने में सक्षम होंगे कि एआई मॉडल ने ऋण स्वीकृति या अस्वीकृति की सिफारिश क्यों की। इससे ग्राहकों को अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार लाने और भविष्य में ऋण के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए कदम उठाने में मदद मिल सकती है।

हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एआई मॉडल पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो सकते हैं, जिससे ऋण प्रक्रिया में असमानताएं पैदा हो सकती हैं। बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके एआई मॉडल निष्पक्ष और सटीक हों।

धोखाधड़ी का उन्नत पता लगाना और जोखिम प्रबंधन में सहायता :

बैंकिंग उद्योग में धोखाधड़ी एक गंभीर समस्या है। हर साल, बैंक अरबों रुपये धोखाधड़ी के कारण खो देते हैं। पारंपरिक धोखाधड़ी का पता लगाने के तरीके, जैसे कि लेनदेन राशि की सीमाएं, अब उतने प्रभावी नहीं हैं। जालसाज लगातार नए तरीके खोज रहे हैं ताकि बैंकों की सुरक्षा प्रणालियों को धोखा दिया जा सके।

यही कारण है कि एआई धोखाधड़ी का पता लगाने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभर रहा है। एआई बड़ी मात्रा में लेनदेन डेटा का विश्लेषण करके असामान्य लेनदेन पैटर्न की पहचान कर सकता है, जो संभावित धोखाधड़ी गतिविधि का संकेत दे सकता है। यहां बताया गया है कि एआई धोखाधड़ी का पता लगाने में कैसे मदद करता है:

वास्तविक समय विश्लेषण: एआई लेनदेन डेटा का वास्तविक समय में विश्लेषण कर सकता है, जिससे धोखाधड़ी का पता लगाने की गति और सटीकता बढ़ जाती है। पारंपरिक तरीकों के विपरीत, एआई को बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने में देरी नहीं होती है।

असामान्य पैटर्न का पता लगाना: एआई ग्राहक के खर्च करने की आदतों और लेनदेन इतिहास को सीख सकता है। इस जानकारी का उपयोग करके, एआई असामान्य लेनदेन पैटर्न की पहचान कर सकता है, जैसे कि असामान्य समय पर या असामान्य स्थानों से किए गए लेनदेन। उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राहक आमतौर पर भारत में अपने डेबिट कार्ड का उपयोग करता है और अचानक विदेश में लेनदेन करता है, तो एआई मॉडल इस लेनदेन को संदिग्ध रूप में देख सकता है।

निरंतर सीखना और अनुकूलन: एआई निरंतर सीखने और अनुकूलन में सक्षम है। इसका मतलब है कि यह नए प्रकार के धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए लगातार बेहतर होता जाता है। उदाहरण के लिए, एआई नए प्रकार के सोशल इंजीनियरिंग घोटालों की पहचान करने में सक्षम हो सकता है जो मनुष्यों को धोखा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

धोखाधड़ी का पता लगाने के अलावा, एआई धोखाधड़ी को रोकने में भी मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, एआई का उपयोग मजबूत ग्राहक प्रमाणीकरण विधियों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है। ये विधियां यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती हैं कि केवल अधिकृत उपयोगकर्ता ही खातों तक पहुंच सकें। कुछ उदाहरणों में फिंगरप्रिंट स्कैनिंग, फेशियल रिकॉग्निशन और मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन शामिल हैं।

जोखिम प्रबंधन में सहायता :

जोखिम प्रबंधन बैंकिंग का एक महत्वपूर्ण पहलू है। बैंकों को अपने ग्राहकों को ऋण देने से जुड़े जोखिमों का आकलन और प्रबंधन करना होता है। पारंपरिक जोखिम प्रबंधन मॉडल अपेक्षाकृत सरल होते हैं और आमतौर पर ग्राहक के क्रेडिट इतिहास जैसे कुछ कारकों पर विचार करते हैं। हालांकि, ये मॉडल हमेशा सटीक नहीं होते हैं और भविष्य के जोखिमों की भविष्यवाणी करने में विफल हो सकते हैं।

एआई जोखिम प्रबंधन को अधिक जटिल और सटीक बनाने में मदद कर सकता है। एआई बाजार के रुझानों, ग्राहक के वित्तीय इतिहास और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करके जोखिम का आकलन करने में सक्षम है। इस डेटा के आधार पर, एआई मॉडल भविष्यवाणी करने में सक्षम हो सकते हैं कि ग्राहक ऋण चुकाने में चूक करने की कितनी संभावना है। यह जानकारी बैंकों को बेहतर निर्णय लेने में मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए:

ऋण आवेदनों का मूल्यांकन : बैंक ऋण आवेदनों का मूल्यांकन करते समय एआई मॉडल का उपयोग कर सकते हैं। एआई मॉडल ग्राहक के क्रेडिट इतिहास, आय, व्यय, बचत इतिहास और ऋण दायित्वों जैसे कारकों पर विचार कर सकते हैं। यह बैंकों को ऋण चुकाने की संभावना वाले ग्राहकों की पहचान करने में मदद कर सकता है।

ऋण जोखिम मूल्यांकन: एआई मॉडल का उपयोग मौजूदा ऋण पोर्टफोलियो में जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए भी किया जा सकता है। यह बैंकों को उन ग्राहकों की पहचान करने में मदद कर सकता है जो ऋण चुकौती में चूक कर सकते हैं, जिससे उन्हें इन ग्राहकों के साथ अपने जोखिम को कम करने के लिए कदम उठाने में मदद मिल सकती है।

नियामक अनुपालन: बैंक एआई मॉडल का उपयोग नियामक आवश्यकताओं का पालन करने में कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एआई मॉडल का उपयोग धन शोधन और आतंकवाद का वित्तपोषण (एमएल/सीएफटी) गतिविधि की पहचान करने के लिए किया जा सकता है।

एआई का उपयोग जोखिम प्रबंधन के लिए कई अन्य तरीकों से भी किया जा सकता है। जैसे-जैसे एआई तकनीक विकसित होती रहेगी,

यह बैंकों को अपने जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद करेगी।

एआई अपनाने के लिए विचार और निष्कर्ष

एआई बैंकिंग उद्योग में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है, जिससे बैंकों को दक्षता बढ़ाने, लागत कम करने, धोखाधड़ी का पता लगाने और ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने में मदद मिल रही है। हालांकि, एआई अपनाने के साथ कुछ चुनौतियां भी आती हैं, जिन्हें बैंकों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

एआई अपनाने के लिए विचार

यदि बैंक सफलतापूर्वक एआई को अपनाना चाहते हैं, तो उन्हें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

स्पष्ट रणनीति होना: बैंकों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि वे एआई का उपयोग कैसे करना चाहते हैं। उन्हें यह पहचानने की आवश्यकता है कि उनकी सबसे बड़ी समस्या क्या और एआई इन समस्याओं को कैसे हल कर सकता है।

उच्च-गुणवत्ता डेटा का उपयोग करना: एआई मॉडल केवल उतने ही अच्छे होते हैं जितना डेटा उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किया जाता है। बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके पास उच्च-गुणवत्ता वाला, सटीक और अद्यतन डेटा है।

नैतिकता और जवाबदेही को ध्यान में रखना: एआई को जिम्मेदारी से और नैतिक रूप से विकसित और उपयोग किया जाना चाहिए। बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके एआई मॉडल निष्पक्ष और पारदर्शी हों।

नियामकों के साथ सहयोग करना: एआई तेजी से विकसित हो रहा है, और नियामक ढांचे के साथ सामंजस्य बैठाना है। बैंकों को नियामकों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे एआई का उपयोग कानून के अनुसार कर रहे हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में, एआई बैंकिंग उद्योग में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है। यह बैंकों को दक्षता बढ़ाने, लागत कम करने, धोखाधड़ी का पता लगाने और ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने में मदद कर रहा है। हालांकि, एआई अपनाने के साथ कुछ चुनौतियां भी आती हैं, जिन्हें बैंकों को संबोधित करने की आवश्यकता है। सावधानीपूर्वक नियोजन और कार्यान्वयन के साथ, एआई बैंकिंग के भविष्य को उज्वल बना सकता है और बैंकों को एक तेजी से बदलती दुनिया में सफल होने में मदद कर सकता है।



आलेख

राजभाषा में एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)

भूमिका :-

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को आज आधुनिक तकनीकी नवोन्मेषिता और सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे उत्कृष्ट आविष्कार माना जा रहा है। यह आविष्कार कोई स्थिर वस्तु नहीं है, अपितु तकनीकी उन्नयन के साथ-साथ, दिन-प्रतिदिन इसकी क्षमताओं में वृद्धि होती जा रही है। कम्प्यूटर-विज्ञान और सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे उन्नयन इसे गति प्रदान कर रहे हैं। कम्प्यूटर के माध्यम से विभिन्न प्रकार के आकलन, व्यवहारों / पैटर्नों और परिणामों को जानना अधिक आसान हो गया है। आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में एआई के अनुप्रयोग हमें आश्चर्यचकित कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्त, व्यवसाय, विधि, विनिर्माण, मीडिया, मनोरंजन, गेमिंग, सॉफ्टवेयर कोडिंग एवं आईटी प्रक्रियाओं, सुरक्षा, बैंकिंग और परिवहन आदि क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का व्यापक अनुप्रयोग हो रहा है। अब ये अनुप्रयोग राजभाषा के क्षेत्र तक भी पहुँच रहे हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का साथ पाकर राजभाषा भी ऊँची उड़ान भरने में सक्षम हो पायेगी।

राजभाषा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के अनुप्रयोगों के बारे में जानने से पहले, यह कहना समीचीन रहेगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) क्या है और यह कैसे काम करती है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीनों, विशेषकर कंप्यूटर सिस्टम द्वारा मानवीय बौद्धिक प्रक्रियाओं का स्टीम्यूलेशन (अनुकरण) है। एआई के इन विशिष्ट अनुप्रयोगों में विशेषज्ञ प्रणाली, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, वाक् पहचान और मशीन विज्ञान आदि शामिल होते हैं।

एआई कैसे काम करता है?

कम्प्यूटर के क्षेत्र में एल्गोरिद्म (algorithm) एक महत्वपूर्ण टर्म है, जिसे हिंदी में 'कलन-विधि' या 'गणना-विधि' कहा जाता। अतः



प्रकाश माली

वरिष्ठ प्रबंधक

क्षेत्रीय कार्यालय, मथुरा

संगणन और अन्य विधाओं में किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक चरणों के समूह को एल्गोरिद्म कहा जाता है। इसे किसी गणनात्मक समस्या के समाधान के आवश्यक उपकरण के रूप में समझा जाता है। एल्गोरिद्म एक व्यापक संकल्पना है। इसके व्यापक अर्थों में एल्गोरिद्म किसी कार्य को करने के लिए एक विशेष क्रम में लिखे गये निर्देशों का समूह होता है। ये निर्देश इस प्रकार लिखे जाते हैं कि कोई प्रयोक्ता उसे समझ कर, उसी क्रम में सही तरीके से पालन करता जाए, तो कार्य पूरा हो जाता है। एल्गोरिद्म का काम डेटा कलेक्ट करने के साथ-साथ उसका एनालिसिस (विश्लेषण) करना भी होता है। एल्गोरिद्म कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसी के माध्यम से मशीन लर्निंग प्रणाली कार्य करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म को लिखने और प्रशिक्षित करने के लिए विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर और हार्डवेयरों की आवश्यकता होती है। कोई भी प्रोग्रामिंग भाषा का मतलब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) नहीं है, लेकिन Python, R, Java, C++ और जूलिया एआई डेवलपर्स के बीच लोकप्रिय कम्प्यूटर भाषाएँ हैं।

एआई सिस्टम करोड़ों प्रशिक्षण-डेटा का संग्रहण करता है तथा उनके सहसंबंधों और पैटर्नों / व्यवहारों का विश्लेषण करके, भविष्य की स्थितियों के बारे में भविष्यवाणीयां करता है। आज तेज गति से विकसित हो रही जनरेटिव एआई तकनीकें रियलिस्टिक इमेज, टेक्सट, चित्र, संगीत और अन्य मीडिया-सामग्रियों का निर्माण करने में सक्षम हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रोग्रामिंग संज्ञानात्मक कौशल पर केंद्रित है, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएं शामिल हैं :

लर्निंग / सीखना: एआई प्रोग्रामिंग का यह पहलू डेटा प्राप्त करने और इसे कार्रवाई योग्य जानकारी में बदलने के लिए नियम बनाने पर केंद्रित है। नियम, जिन्हें एल्गोरिद्म कहा जाता है, कंप्यूटिंग उपकरणों को किसी विशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए चरण-दर-चरण निर्देश प्रदान करते हैं।

रिजनिंग / तर्कात्मकता : एआई प्रोग्रामिंग का यह पहलू वांछित परिणाम तक पहुंचने के लिए सही एल्गोरिद्म चुनने पर केंद्रित है।

सेल्फ करेक्शन / स्वयं सुधार : एआई प्रोग्रामिंग का यह पहलू एल्गोरिद्म को लगातार बेहतर बनाने और यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि वे यथासंभव सटीक परिणाम दें।

क्रिएटिविटी / रचनात्मकता: एआई का यह पहलू नई छवियां, नया टेक्स्ट, नया संगीत और नए विचार उत्पन्न करने के लिए न्यूरल-नेटवर्क, नियम-आधारित सिस्टम, सांख्यिकीय तरीकों और अन्य एआई तकनीकों का उपयोग करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार :

मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में इंटीग्रेटिव बायोलॉजी और कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर अरेंड हिंज़ ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया है, जो आज व्यापक रूप से उपयोग में आने वाले कार्य-विशिष्ट इंटेलेजेंट प्रणालियों से शुरू होकर, संवेदनशील प्रणालियों की ओर बढ़ रहे हैं। इन चार प्रकारों में से कुछ अभी अस्तित्व में नहीं हैं, लेकिन उनके अस्तित्व में आने की पूरी संभावना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के ये चार प्रकार निम्न हैं :-

प्रतिक्रियाशील मशीनें : इन एआई सिस्टम में कोई मेमोरी नहीं होती और ये कार्य-विशिष्ट होते हैं।

सीमित मेमोरी : इन एआई सिस्टम में मेमोरी होती है, इसलिए वे भविष्य के निर्णयों को सूचित करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग कर सकते हैं। सेल्फ-ड्राइविंग कारों में निर्णय लेने के कुछ कार्यों को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है।

थ्योरी ऑफ माइंड : थ्योरी ऑफ माइंड एक मनोवैज्ञानिक शब्द है। इसे जब एआई पर लागू किया जाता है, तो इसका मतलब है कि सिस्टम में भावनाओं को समझने के लिए सामाजिक बुद्धिमत्ता होगी। इस प्रकार का एआई मानवीय इरादों का अनुमान लगाने और व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सक्षम होगा। एआई का यही कौशल उसे मानव की तरह बनाने के लिए आवश्यक होगा।



सेल्फ -अवेयरनेस / आत्म-जागरूकता : इस श्रेणी के एआई सिस्टम में स्वयं के होने की भावना होती है, जो उन्हें चेतना प्रदान करती है। सेल्फ-अवेयरनेस को समझने वाली मशीनें अभी अस्तित्व में नहीं हैं।

विभिन्न प्रौद्योगिकियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का प्रयोग :

आज विभिन्न प्रौद्योगिकियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। जिन क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का इस्तेमाल हो रहा है उनमें से कुछ क्षेत्रों का वर्णन निम्नानुसार है:-

स्वचालन: एआई प्रौद्योगिकियों के साथ जोड़े जाने पर, स्वचालन उपकरण निष्पादित कार्यों की मात्रा और प्रकार का विस्तार कर सकते हैं। एक उदाहरण रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (आरपीए) है, एक प्रकार का सॉफ्टवेयर जो पारंपरिक रूप से मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले, दोहराए जाने वाले, नियम-आधारित डेटा प्रोसेसिंग कार्यों को स्वचालित करता है। इसे जब मशीन लर्निंग और उभरते एआई टूल के साथ जोड़ा जाता है, तो आरपीए उद्यम नौकरियों के बड़े हिस्से को स्वचालित कर सकता है, जिससे आरपीए के सामरिक बॉट एआई से खुफिया जानकारी प्राप्त करने और प्रक्रिया परिवर्तनों पर प्रतिक्रिया करने में सक्षम हो जाते हैं।

मशीन लर्निंग / यंत्र अधिगम : यह कंप्यूटर को बिना प्रोग्रामिंग के कार्य करने का विज्ञान है। डीप लर्निंग, मशीन लर्निंग का एक उपसमूह है, जिसे बहुत ही सरल शब्दों में, पूर्वानुमानित विश्लेषण के स्वचालन के रूप में जाना जा सकता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म तीन प्रकार के होते हैं:

पर्यवेक्षित अधिगम : इनमें डेटा सेट को लेबल किया जाता है, ताकि पैटर्न का पता लगाया जा सके और नए डेटा सेट को लेबल करने के लिए उपयोग किया जा सके।

अपर्यवेक्षित अधिगम : इसके अंतर्गत डेटा सेट को लेबल नहीं किया जाता है और समानता या अंतर के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है।

रि-इंफोर्समेंट अधिगम : डेटा सेट को लेबल नहीं किया जाता है, लेकिन एक क्रिया या कई क्रियाएं करने के बाद, एआई सिस्टम को फीडबैक दिया जाता है।

मशीन विज्ञान: यह तकनीक मशीन को देखने की क्षमता देती है। मशीन विज्ञान- कैमरे, एनालॉग-टू-डिजिटल रूपांतरण और डिजिटल सिग्नल प्रोसेसिंग का उपयोग करके दृश्य जानकारी को कैप्चर करती है और उसका विश्लेषण करता है। इसकी तुलना अक्सर मानव दृष्टि से की जाती है, लेकिन मशीनी दृष्टि जीव विज्ञान से बंधी नहीं है और उदाहरण के लिए, इसे दीवारों के पार देखने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है। इसका उपयोग हस्ताक्षर पहचान से लेकर चिकित्सा छवियों के विश्लेषण तक कई अनुप्रयोगों में किया जाता है। कंप्यूटर विज्ञान, जो मशीन-आधारित छवि प्रसंस्करण पर केंद्रित है, को अक्सर मशीन विज्ञान के साथ जोड़ दिया जाता है।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) : यह एक कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा मानव भाषा का प्रसंस्करण करना है। एनएलपी के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक स्पैम डिटेक्शन है, जो ईमेल के विषय और टेक्स्ट को देखता है और तय करता है कि यह जंक है या नहीं। एनएलपी के प्रति वर्तमान दृष्टिकोण मशीन लर्निंग पर आधारित हैं। एनएलपी के कार्यों में टेक्स्ट का अनुवाद, भावनाओं का विश्लेषण और वाक् पहचान आदि शामिल हैं।

रोबोटिक्स : इंजीनियरिंग का यह क्षेत्र रोबोट के डिजाइन और निर्माण पर केंद्रित है। रोबोटों का उपयोग अक्सर ऐसे कार्यों को करने के लिए किया जाता है, जिन्हें करना मनुष्यों के लिए कठिन होता है या जिन्हें लगातार करना मुश्किल होता है। उदाहरण के लिए, रोबोट का उपयोग कार उत्पादन, असेंबली लाइनों में, या नासा द्वारा अंतरिक्ष में बड़ी वस्तुओं को स्थानांतरित करने के लिए किया जाता है। शोधकर्ता ऐसे रोबोट बनाने के लिए मशीन लर्निंग का भी उपयोग करते हैं, जो सामाजिक सेटिंग्स में बातचीत कर सकते हैं।

स्व-चालित कारें : स्वचालित-वाहन, किसी निर्धारित लेन में रहते हुए और पैदल चलने वालों - जैसे अप्रत्याशित अवरोधों से बचने के लिए, वाहन चलाने के लिए स्वचालित-कौशल विकसित करने के लिए कंप्यूटर दृष्टि, इमेजों की पहचान और गहन अधिगम के संयोजन का उपयोग करते हैं।

टेक्स्ट (पाठ), इमेज (छवि) और ध्वनि निर्माण : एआई कोई एक तकनीक नहीं है। यह विभिन्न प्रकार की तकनीकों का समुच्चय है।

जेनेरेटिव एआई तकनीक, जो टेक्स्ट प्रॉम्प्ट से विभिन्न प्रकार की मीडिया-सामग्री बनाती है, को फोटोरिअलिस्टिक कला से लेकर, ईमेल प्रतिक्रियाओं और स्क्रीनप्ले तक की सामग्री की एक असीमित श्रृंखलाएं बनाने के लिए, व्यवसायों में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का महत्व :

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने हमारे रहने, काम करने और खेलने के तरीकों को बदल कर रख दिया है। इसका उपयोग व्यवसाय में ग्राहक-सेवा कार्यों, लीड जनरेशन, धोखाधड़ी का पता लगाने और गुणवत्ता-नियंत्रण सहित मनुष्यों द्वारा किए गए कार्यों को स्वचालित करने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। कई क्षेत्रों में, एआई मनुष्यों की तुलना में बेहतर कार्य कर सकता है, विशेष रूप से जब पुनरावृत्ति वाले, डिटेल्ड-ओरिएंटेड -कार्यों की बात आती है, जैसे कि संबंधित फील्ड्स को ठीक से भरने के लिए बड़ी संख्या में कानूनी दस्तावेजों का विश्लेषण करना। एआई उपकरण अक्सर कार्यों को जल्दी और अपेक्षाकृत कम त्रुटियों के साथ पूरा करते हैं। बड़े पैमाने पर डेटा सेट को संसाधित करने के कारण, एआई उद्यमों को उनके संचालन के बारे में ऐसी अंतर्दृष्टि भी दे सकता है, जिसके बारे में उन्हें भी जानकारी नहीं होती है। जेनेरिक एआई टूल्स की तेजी से बढ़ती संख्या, शिक्षा और विपणन से लेकर उत्पाद डिजाइन तक के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

एआई के अनुप्रयोग क्या हैं ?

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने विभिन्न प्रकार के बाजारों में अपनी जगह बना ली है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्नानुसार हैं :-

स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई.: आज मेडिकल कंपनियां इंसानों की तुलना में बेहतर और तेज़ चिकित्सा निदान करने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग कर रही हैं। सबसे प्रसिद्ध स्वास्थ्य देखभाल तकनीकों में से एक आईबीएम वॉटसन है। यह प्राकृतिक भाषा समझता है और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। सिस्टम एक परिकल्पना बनाने के लिए रोगी डेटा और अन्य उपलब्ध डेटा स्रोतों का खनन करता है, जिसे वह एक आत्मविश्वास स्कोरिंग स्कीम के साथ प्रस्तुत करता है। अन्य एआई अनुप्रयोगों में रोगियों और स्वास्थ्य देखभाल ग्राहकों को चिकित्सा जानकारी ढूंढने, नियुक्तियों को शेड्यूल करने, बिलिंग प्रक्रिया को समझने और अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं को पूरा करने में मदद करने के लिए ऑनलाइन वर्चुअल स्वास्थ्य सहायक और चैटबॉट का उपयोग करना शामिल है। कोविड -19 जैसी महामारी की भविष्यवाणी करने, लड़ने और समझने के लिए एआई प्रौद्योगिकियों की एक श्रृंखला का भी उपयोग किया गया।



व्यवसाय में एआई : ग्राहकों को बेहतर सेवा देने के तरीके के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को एनालिटिक्स और ग्राहक संबंध प्रबंधन (सीआरएम) प्लेटफार्मों में एकीकृत किया जा रहा है। ग्राहकों को तत्काल सेवा प्रदान करने के लिए वेबसाइटों में चैटबॉट्स को शामिल किया गया है। चैटजीपीटी जैसी जेनेरिक एआई तकनीक की तेजी से प्रगति के दूरगामी परिणाम होने की उम्मीद है जैसे कि नौकरियाँ खत्म होना, उत्पाद डिजाइन में क्रांति आना और बिजनेस मॉडल को परिवर्तित करना आदि शामिल है।

शिक्षा क्षेत्र में एआई : एआई प्रेडिक्टिंग-प्रणाली को स्वचालित कर सकता है, जिससे शिक्षकों को अन्य कार्यों के लिए अधिक समय मिल सकता है। यह छात्रों का आकलन कर सकता है और उनकी ज़रूरतों के अनुरूप ढल सकता है, जिससे उन्हें अपनी गति से काम करने में मदद मिलेगी। एआई ट्यूटर छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे ट्रैक पर बने रहें। यह तकनीक यह भी बता सकती है कि छात्र कहाँ और कैसे सीखते हैं, शायद कुछ शिक्षकों की जगह भी ले सकती है। जैसा कि चैटजीपीटी, गूगल बार्ड और अन्य बड़े भाषा मॉडलों द्वारा दर्शाया गया है कि जेनेरेटिव एआई शिक्षकों को पाठ्यक्रम-कार्य और अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करने और छात्रों को नए तरीकों से संलग्न करने

में मदद कर सकता है। इन उपकरणों के आने से शिक्षकों को छात्रों के होमवर्क और परीक्षण पर पुनर्विचार करने और साहित्यिक चोरी पर नीतियों को संशोधित करने के लिए भी मजबूर होना पड़ेगा।

वित्तीय क्षेत्र में एआई : इंट्रुइट मिंट या टर्बोटैक्स जैसे व्यक्तिगत वित्त अनुप्रयोगों में एआई वित्तीय संस्थानों को बाधित कर रहा है। इस तरह के एप्लिकेशन व्यक्तिगत डेटा एकत्र करते हैं और वित्तीय सलाह प्रदान करते हैं। आईबीएम वॉटसन जैसे अन्य प्रोग्रामों को घर खरीदने की प्रक्रियाओं में प्रयोज्य किय जा रहा है। आज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर वॉल स्ट्रीट में ट्रेडिंग कर रहे हैं।

विधि के क्षेत्र में एआई : कानून कंपनियां डेटा का वर्णन करने और परिणामों की भविष्यवाणी करने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करती हैं, दस्तावेजों से जानकारी को वर्गीकृत करने और उनसे निष्कर्ष निकालने के लिए कंप्यूटर विज्ञान का उपयोग करती हैं और सूचना हेतु अनुरोधों की व्याख्या करने के लिए एनएलपी का उपयोग करती हैं।

मनोरंजन और मीडिया के क्षेत्र में एआई : मनोरंजन व्यवसाय लक्षित विज्ञापन, विषय-सामग्री की संस्तुति, वितरण, धोखाधड़ी का पता लगाने, स्क्रिप्ट बनाने और फिल्में बनाने के लिए एआई तकनीकों का उपयोग करता है। स्वचालित पत्रकारिता न्यूज रूम को समय, लागत

और जटिलता को कम करके मीडिया वर्कफ्लो को सुव्यवस्थित करने में मदद करती है। मीडिया के क्षेत्र में न्यूज़रूम डेटा प्रविष्टि और प्रूफरीडिंग, विषयों पर शोध और हैडलाइन बनाने में सहायता करना जैसे नियमित कार्यों को स्वचालित करने के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है। पत्रकारिता का क्षेत्र आज विषय- सामग्री तैयार करने के लिए चैट जीपीटी और अन्य जेनेरेटर एआई का विश्वसनीय रूप से कैसे उपयोग कर रहा है, यह किसी से छुपा नहीं है।

सॉफ्टवेयर कोडिंग और आईटी प्रक्रियाओं के क्षेत्र में एआई : नए जेनेरेटिव एआई टूल का उपयोग प्राकृतिक भाषा संकेतों के आधार पर एप्लिकेशन कोड तैयार करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन इन टूल के लिए अभी शुरुआती दिन हैं और संभावना नहीं है कि वे जल्द ही सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की जगह ले लेंगे। एआई का उपयोग डेटा प्रविष्टि, धोखाधड़ी का पता लगाने, ग्राहक सेवा और पूर्वानुमानित रखरखाव और सुरक्षा सहित कई आईटी प्रक्रियाओं को स्वचालित करने के लिए भी किया जा रहा है।

सुरक्षा के क्षेत्र में : एआई तकनीकों को साइबर सुरक्षा के कई पहलुओं पर सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है, जिसमें विसंगति का पता लगाना, समस्याओं को हल करना और व्यवहारिक खतरे का विश्लेषण करना आदि शामिल है। विसंगतियों का पता लगाने और खतरों का संकेत देने वाली संदिग्ध गतिविधियों की पहचान करने के लिए सुरक्षा सूचना और इवेंट प्रबंधन (एसआईईएम) सॉफ्टवेयर और संबंधित क्षेत्रों में मशीन लर्निंग का उपयोग किया जा रहा है। डेटा का विश्लेषण करके और ज्ञात दुर्भावनापूर्ण कोड की समानता की पहचान करने के लिए लॉजिक का उपयोग करके, एआई मानव कर्मचारियों और पिछले प्रौद्योगिकी पुनरावृत्तियों की तुलना में बहुत जल्द नए और उभरते हमलों के लिए अलर्ट प्रदान कर सकता है।

विनिर्माण-क्षेत्र में एआई : वर्कफ्लो में रोबोट को शामिल करने में विनिर्माण क्षेत्र सबसे आगे है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक रोबोट, जो एक समय में एकल कार्य करने के लिए प्रोग्राम किए गए थे और मानव श्रमिकों से अलग थे, अब तेजी से रोबोट के रूप में छोटे और मल्टीटास्किंग रोबोट, जो मनुष्यों के साथ मिलकर गोदामों, कारखानों और अन्य कार्यस्थलों पर अधिक सक्रियता के साथ काम कर रहे हैं।

बैंकिंग के क्षेत्र में एआई : बैंक अपने ग्राहकों को सेवाओं और पेशकशों के बारे में जागरूक करने और ऐसे लेनदेन को संभालने के लिए चैटबॉट्स को सफलतापूर्वक नियोजित कर रहे हैं, जिनमें मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती है। एआई वर्चुअल असिस्टेंट का उपयोग बैंकिंग नियमों के अनुपालन में सुधार और

अनुपालन की लागत में कटौती के लिए किया जा रहा है। बैंकिंग संगठन ऋण देते समय निर्णय लेने में सुधार, क्रेडिट-सीमा निर्धारित करने और निवेश के अवसरों की पहचान करने के लिए एआई का उपयोग कर रहे हैं।

परिवहन के क्षेत्र में एआई : एआई प्रौद्योगिकियों का उपयोग यातायात को प्रबंधित करने, उड़ान में देरी की भविष्यवाणी करने और समुद्री शिपिंग को सुरक्षित और अधिक कुशल बनाने के लिए परिवहन क्षेत्र में किया जा रहा है। आपूर्ति श्रृंखलाओं में एआई- मांग की भविष्यवाणी करने और व्यवधानों की भविष्यवाणी करने के पारंपरिक तरीकों की जगह ले रहा है।

राजभाषा में एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) का प्रयोग

उपरोक्त वर्णित क्षेत्रों में एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के अनुप्रयोग की तरह ही आज राजभाषा के क्षेत्र में भी उसके अनुप्रयोग हो रहे हैं। इन अनुप्रयोगों में लगातार वृद्धि भी होती रहेगी। आज समस्त कम्प्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर की संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। जैसे - जैसे कम्प्यूटर और उसके सहायक उपकरणों की संज्ञानात्मक क्षमताओं (Cognitive capabilities) में वृद्धि होगी, हर क्षेत्र में एआई का प्रयोग, उतना ही अधिक बढ़ता जाएगा। राजभाषा के क्षेत्र में एआई के अनुप्रयोगों को निम्न रूप में देखा जा सकता है :-

अनुवाद के क्षेत्र में एआई का अनुप्रयोग : अनुवाद को सभ्यताओं का पुल कहा जाता है। अनुवाद के माध्यम से ही ज्ञान, संसार के विभिन्न भागों में विचरण करता है। राजभाषा के क्षेत्र में भी अनुवाद की महती आवश्यकता होती है। हमारे देश के दो सौ सालों तक अंग्रेजों के अधीन रहने के कारण समस्त प्रशासनिक दस्तावेज केवल अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हैं। आज उनके हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद की अत्यधिक आवश्यकता है। हमारा संविधान नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय की गारंटी देता है। अतः उन्हें केवल अंग्रेजी भाषा में दस्तावेज उपलब्ध कराकर हम उनके संवैधानिक अधिकारों का हनन कर रहे हैं। आजादी के बाद विभिन्न प्रकार के अनुवाद सॉफ्टवेयरों का निर्माण हुआ है। लेकिन उन सभी में कुछ न कुछ कमियाँ हैं। आज देश में प्रशासनिक दस्तावेजों का जो अनुवाद हो रहा है, वह अनुवाद दोयम दर्जे का है। उसकी दुरुहता, असटीकता और अर्थ-भिन्नता के कारण प्रयोक्ता अंग्रेजी पाठ को ही अपनाने पर मजबूर हो रहे हैं। आज प्रशासनिक अनुवाद-कार्यों में 'गूगल ट्रांसलेट' का व्यापक उपयोग हो रहा है। लेकिन वह भी पूर्णतः सटीक नहीं है। 'गूगल ट्रांसलेट' एक वैश्विक अनुवाद

सॉफ्टवेयर हैं। अतः उसमें संदर्भानुकूल अनुवाद संभव नहीं है। हालांकि मशीनी अनुवाद पूर्णतः सटीक हो भी नहीं सकता। उसमें मानवीय हस्तक्षेप की सदैव ही आवश्यकता रहेगी। एक स्थानीय और देशी अनुवाद सॉफ्टवेयर की आवश्यकता के मद्देनज़र हाल ही में भारत सरकार ने सी-डैक के सहयोग से 'कंठस्थ' नामक अनुवाद सॉफ्टवेयर का विकास किया है। इसका 2.0 वर्जन भी आ चुका है। एक भारतीय अनुवाद सॉफ्टवेयर होने के कारण इसके द्वारा प्रदत्त अनुवाद में संदर्भानुकूल सटीकता अधिक है। इसे एआई के माध्यम से और अधिक सटीक बनाया जा सकता है। आज 'गूगल ट्रांसलेट' सहित सभी प्रकार के अनुवाद सॉफ्टवेयर एआई का सहारा ले कर उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं। अनुवाद में स्पीच रिकग्निशन, टेक्स्ट-टू-स्पीच आदि तकनीकों का उपयोग तो हो ही रहा है, एआई का सहारा लेकर टेक्स्ट, इमेज और ध्वनि से भी अनुवाद करना संभव हुआ है। आगे इसमें लगातार सुधार होगा। इस प्रकार अनुवाद के क्षेत्र में भी एआई के अनुप्रयोग की अनंत संभावनाएं निहित हैं, जिसका लाभ अंततः राजभाषा को मिलेगा।

राजभाषा ई-टूल्स के क्षेत्र में एआई का अनुप्रयोग : आज हिंदी टाइपिंग के विभिन्न टूल उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में परम्परागत की बोर्ड- 'इंस्क्रिप्ट' से लेकर 'ट्रांसलिटिरेशन' तक की यात्रा संभव हुई है। एआई का अनुप्रयोग इसे और अधिक सुगम बना सकता है।

वॉइस टाइपिंग के क्षेत्र में एआई का अनुप्रयोग : आज एआई का सहारा लेकर वॉइस टाइपिंग अपने आपको और अधिक समृद्ध कर रही है। एआई के माध्यम से वॉइस टाइपिंग के दौरान सटीक शब्द - सुझाव मिल सकते हैं और हियरिंग बेहतर हो सकती है।

टेक्स्ट-टू-स्पीच और स्पीच-टू-टेक्स्ट तकनीक में एआई का अनुप्रयोग : एआई के माध्यम 'टेक्स्ट-टू-स्पीच' और 'स्पीच-टू-टेक्स्ट' तकनीक का बेहतर उन्नयन होना तय है। आने वाले समय में यह मानविक टाइपिंग को पूर्णतः स्थानापन्न कर सकता है।

दिव्यांगों के लिए सक्षम कम्प्यूटर-उपकरणों में एआई का अनुप्रयोग: राजभाषा के क्षेत्र में काम कर रहे दिव्यांग-कर्मियों के लिए एआई के माध्यम से बेहतर कम्प्यूटर उपकरणों का विकास किया जा रहा है। इन उपकरणों की सहायता से वे सामान्य राजभाषा कर्मियों की तरह काम करने में सक्षम हो पायेंगे।

राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमों एवं राजभाषा के संबंध में समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों के संबंध में एआई का अनुप्रयोग: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के माध्यम से राजभाषा अधिनियम-1963, राजभाषा नियम-1976 और समय-समय पर राजभाषा

विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा संबंधी दिशानिर्देशों की अनुपालना की निगरानी की जा सकती है। इस क्षेत्र में एआई के अनुप्रयोग की व्यापक संभावनाएं हैं।

शब्दावली के क्षेत्र में एआई का अनुप्रयोग : राजभाषा के क्षेत्र में विभागवार प्रशासनिक शब्दावलियाँ तैयार की गई हैं। इन शब्दावलियों के निर्माण, शब्द-रचना, शब्द-प्रयोग और नये शब्द-निर्माण में एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कार्यालयीन नोटों, पत्र-लेखन, कार्यालय-ज्ञापन आदि के क्षेत्र में एआई का अनुप्रयोग : प्रशासनिक कामकाज में अधिकतर पुनरावृत्ति वाले कार्य शामिल होते हैं। इन कार्यों में कार्यालयीन नोट, पत्र, कार्यालय-ज्ञापन, प्रारूपण, निविदा, टेंडर-फॉर्म, प्रेस-विज्ञप्ति, अनुज्ञा-पत्र आदि शामिल होते हैं। एआई के अनुप्रयोग से इन्हें बार-बार बनाना आसान हो सकता है। एआई इन्हें तैयार कर समय पर सही शब्द-सुझाव दे सकता है। कुछ वाक्यांश या वाक्यों के बार-बार प्रयोग को आसान बना सकता है।

ई-मेल लेखन और ई-मेल प्रबंधन में एआई का अनुप्रयोग : आज अधिकतर कार्यालयीन पत्राचार ई-मेल के माध्यम से ही संपन्न होता है। ई-मेल के क्षेत्र में एआई के प्रयोग से ई-मेल लेखन में आसान और सुगम हो सकता है। एआई के माध्यम से पुनरावृत्ति वाले ई-मेल आवश्यकता पड़ने पर एक क्लिक पर उपलब्ध हो सकते हैं। साथ ही एआई की मदद से ईमेलों का समय-प्रबंधन/ई-मेल सिड्यूल किया जा सकता है। ई-मेल में ही भावी कार्य-योजना बनाई जा सकती है। आगामी कार्यक्रमों की पूर्व-सूचना अंकित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त वीडियों मीटिंग भी की जा सकती है। इस तरह एआई के माध्यम से ईमेल के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हो सकते हैं।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आने वाले समय में समस्त तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से प्रभावित रहेगी। कम्प्यूटर मेमोरी, चिप, गेमिंग, ऑडियो-वीडियों माध्यमों और सूचना - प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित-नई प्रगति से एआई के विकास को गति मिलेगी और जीवन के तमाम क्षेत्रों में एआई का अनुप्रयोग अपरिहार्य हो जायेगा। संक्षेप में कहें तो आने वाले समय में हम एआई के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर पायेंगे, जैसे आज हम मोबाइल के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाँति राजभाषा के अन्यान्य क्षेत्रों में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के अनुप्रयोग की व्यापक संभावनाएं संनिहित हैं। हम उम्मीद करते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की लकड़ी का सहारा पाकर राजभाषा भी, अपने गंतव्य तक पहुँच पाने में सक्षम हो पायेगी।



कविता

ट्रांसफर



आशुतोष कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक

एम.एस.एम.ई., सुलभ पटना (प्रतिनियुक्ति)

फिर न जाने कहाँ से
वो घड़ी आई है
समय बीता
और ट्रांसफर की बारी
आई है।
कंधों पर जिम्मेदारियों
का बोझ है।
और कर्तव्य पालन
की भी जिम्मेदारी है
हँसी खुशी के पल
कब बीते
अब जुदाई की घड़ी
आई है।
घर में बड़ों की सेवा
की जिम्मेदारी है
और बच्चों की भी
शिक्षा और परवरिश है।
बहुत कठिन है
कुछ कर पाना कह पाना
नौकरी भी हमें है करनी
जिससे मिलती है हमें
रोटी और दवाई।
फिर ना जाने कहाँ से
वो घड़ी आई है
समय बीता और ट्रांसफर
की घड़ी आई है।



दिव्या प्रजापति
अधिकारी

जी टी रोड़, एटा



कविता

मीत

ना बनना प्रारब्ध किसी का,
तो प्रीत किसी की बन जाना।
बन ना पाओ मीत किसी का,
तो जीवन संगीत बन जाना।
स्वीकार करो किसी को अगर तुम,
उसका अंधेरा भी अपनाओ।
या अश्वेत को ही श्वेत समझकर,
उसकी कस्तूरी बन जाओ।
परिभाषित ना करना क्रंदन उसका
विलाप उसकी पहचान नहीं,
अंतकरण जब बह जाए उसका
मिट जाए मन की थकान कहीं।
परोशान है वह नादान नहीं।
ज्ञान का पाठ ना पढ़ाना,
सुन लेना बस उसे ध्यान से
पर बीच में ना समझाना।
अशक्त है वह उस क्षण में बस
मन खोकर मन से अपनाना,
क्लेश जब मिट जाए मन का
तब आशा का दीप जलाना।
क्या पता एक छोटा सा संवाद
किसी का विश्वास संजो पाए,
और मात्र इतने से प्रयास से
शायद वह प्रलय भी टल जाए।
जीवन क्षणिक है विषाद अनन्य है,
पर जो विषाद में साथ थे
वह मनुष्य धन्य है।
क्षण भर निकाल कर व्यस्तता से तुम
प्रीत किसी की बन जाना,
बन ना पाओ मीत किसी का
तो जीवन संगीत बन जाना।



यात्रा-वृत्तांत

झीलों के शहर - उदयपुर की यात्रा

अपनी रोज की दिनचर्या से मैं और मेरे मित्र कुछ बोरियत-सी महसूस करने लगे थे। इस बोरियत को दूर करने और अपने जीवन में नई ऊर्जा और नये जोश का संचार करने के लिए हम सब एक यात्रा पर जाने के लिए सहमत हुए। मगर इस सहमति में भी कई सारी असहमतियाँ थी। असहमतियों का कारण यात्रा के स्थान के बारे में सबकी भिन्न-भिन्न रुचि होना था। कुछ समय की सार्थक बहस के पश्चात और अपनी पारंपरिक भारतीय संस्कृति को गहराई से समझने तथा उसका अन्वेषण करने के लिए हमने अंततः झीलों के शहर उदयपुर का चयन कर लिया।

हम उदयपुर की यात्रा आरम्भ करने के लिए 24 जनवरी, 2024 को सायंकाल मेवाड़ एक्सप्रेस का इंतज़ार कर रहे थे। उसी दौरान एक हास्यस्पद एवं रोमांचक घटना घटित हुई। हमारे अनुमान में कुछ त्रुटि रह जाने के कारण हमारे आरक्षण वाली रेलगाड़ी का डिब्बा, हमारे खड़े होने की जगह से कुछ आगे निकल गया। डिब्बे में चढ़ने की जल्दबाजी के कारण हम लोगों को थोड़ी-सी दौड़ भी लगानी पड़ी। दौड़ लगाने के दौरान मेरी एक मित्र के थैले की चैन खुल जाने के कारण उसका बहुत सारा सामान, जिसमें मैकअप का सामान भी शामिल था, प्लेटफॉर्म पर बिखर गया। हम इस बात से बेखबर ट्रेन के डिब्बे में चढ़ने के लिए दौड़ लगा रहे थे। तभी एक सज्जन ने हमें पीछे की ओर से पुकारते हुए गिरे हुए सामान की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया और मेरी मित्र का सामान उठा कर देते हुए मजाक के लहजे में कहा कि -मैडम! अगर आज आपका ये मैकअप का सामान यहाँ रह जाता, तो आपकी यात्रा असफल हो जाती। हमने भी मुस्कुरा कर उसका धन्यवाद किया और अपने डिब्बे में चढ़ गए। सीट पर बैठने के बाद हमने चाय पकौड़े ऑर्डर लिए और गपशप करते हुए उनका आनंद लेने लगे। उसके बाद हमने 5-6 घंटे के लिए बिस्तर तान दिए। प्रातः काल हॉकरों की चाय-चाय की पुकार ने हमारी आँखें खोल दी। जैसे ही मैंने खिड़की से बाहर देखा, मेरी जिज्ञासा का ठिकाना नहीं था। वजह साफ थी। हम मेवाड़ की राजधानी, वीरों तथा झीलों के शहर उदयपुर पहुँच चुके थे।

रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते ही सबसे पहले हमने पोहा, ढोकला और कचौड़ी खाकर अपने पेट के उछलते चूहों को शांत किया। अब हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती ठहरने के स्थान को लेकर थी। एक

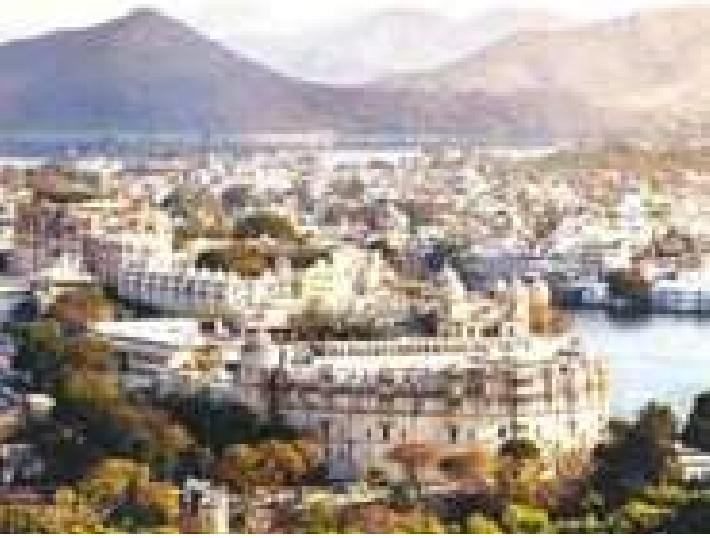


उमा खंडेलवाल
ग्राहक सेवा सहयोगी
राया शाखा

दर्जन से अधिक होटलों और गेस्ट हाउसों के चक्कर काटने के असफल प्रयास के पश्चात हमें 'होटल मुंबई पैलेस' ठहरने के लिए उचित और सुरक्षित स्थान लगा। होटल में कुछ समय विश्राम करने के बाद हम नगर भ्रमण के लिए रवाना हुए। अपने कुछ राजस्थानी मित्रों से दूरभाष पर चर्चा करने से पता चला कि टेम्पो और टैक्सी चालकों के नखरे उठाने से बेहतर है कि कोई वाहन किराए पर ले लिया जाए। मुझे स्कूटी चलने में महारत हासिल है, तो मैं लपक कर बोली कि क्यूं न स्कूटी किराए पर ले ली जाए। किस्मत से स्कूटी किराए पर देने वाले की दुकान भी नजदीक ही थी और उसका किराया भी वाजिब ही था। बस फिर क्या था। जिस प्रकार चिड़िया के चूजे पहली बार पंख फड़फड़ाकर अपनी पहली उड़ान भरते हैं, उसी प्रकार हम लोग भी अपनी स्कूटी लेकर उदयपुर की गलियों में उड़ान भरने निकल पड़े।

शहर को परखने के लिए हमने सबसे पहले 'सिटी पैलेस' को चुना। अपनी स्कूटी पर धड़धड़ाते हुए हम वहाँ पहुँच गए। टिकिट लेने के पश्चात हमारा परिचय उदयपुर तथा मेवाड़ के इतिहास से होने वाला था। वहाँ मेवाड़ राज्य के प्रमुख युद्धों के सबूत तथा ऐतिहासिक वस्तुएं थी। हथियारों के जखीरे की नुमाइश बड़े ही शानदार तरीके से की गई थी। इन सब प्रदर्शनों को देखकर एक बार को तो मैं भी इतिहास की नदी में गोता लगाने लगी। सिटी पैलेस से वीरता की आँधी अपनी रगों में समेट लेने के पश्चात हम आध्यात्म और ईश्वरीय कृपा के लिए जगदीश मंदिर के लिए रवाना हो गए। नागर तथा राजपूत शैली में निर्मित यह मंदिर दर्शनीय तो था ही, भगवान जगदीश के दर्शन करने से मन को शांति मिली।

भगवान जगदीश की मूर्त अपने मन में बसाकर हम गणगोर घाट के लिए उड़ चले। गणघोर घाट पर बहते जल की ध्वनि सुनकर मन प्रसन्नचित्त हो गया। पानी की कलकल आवाज हमारे कर्णों को



अलग-सा सुख दे रही थी। इसी बीच मेरा मन वहाँ पर लगी अनेकों चाट की रेडियों की ओर आकर्षित हो गया। फिर क्या था हम सभी ने जमकर चाट की दावत उड़ाई।

चाट के चटकारे लेने के पश्चात हम अपने अगले लक्ष्य - 'फतेहसागर झील' की ओर रवाना हुए। इसे केवल एक साधारण झील समझ लेना बेमानी होगा। यह हमें स्वर्ग की कोई झील प्रतीत हुई। यहाँ पहुँचकर नौका-विहार करते हुए हमने ढेरों सेल्फियाँ लीं और उसके बाद ऊँट की सवारी की। ढलते हुए सूरज के साथ कई सारे छायाचित्र लेने के बाद हम अपने होटल की ओर निकल गए।

होटल में कुछ क्षण आराम करने के बाद हम उदयपुर की गलियों में सैर-सपाटा करने निकल गए। इस दौरान मेरे एक मित्र की नज़र अलग से दिखने वाले एक भोजनालय पर पड़ी। निकट पहुँचने पर हमने पाया कि वह एक राजपुताना शैली में निर्मित भोजनालय है। होटल के प्रबंधक से बात करने पर पता चला कि यहाँ की मारवाड़ी थाली दुनियाभर में मशहूर है। फिर क्या था..हम बैठ गए..राजा-महाराजाओं के खाने का लुप्त उठाने। थाली के दिव्यदर्शन के बाद यह थाली बिल्कुल किसी महाराजा के ही भोजन की थाली लग रही थी। इसमें विभिन्न प्रकार के भोजन सम्मिलित थे। जिनमें स्ट्रॉबेरी का हलवा और गुजराती कढ़ी जैसे कुछ स्वादिष्ट, जायकेदार और हटकर अनुभव देने वाले भोजन सम्मिलित थे।

झीलों के शहर - उदयपुर की यात्रा

हमने अगला जो लक्ष्य चुना, वह था-वीरों एवं महावीरों की माता 'करणी माता का मंदिर'। हमने अपनी स्कूटी को मानों टेक ऑफ करार करणी माता-मंदिर पर लैंड करा दिया। इस मंदिर का नजारा बेहद आकर्षक एवं दर्शनीय था। इस मंदिर में वीरों की अटूट श्रद्धा आज तक महसूस की जा सकती है। मंदिर के दर्शन करने के लिए हम

आगे की ओर बढ़ गये। मंदिर में हम सुबह जल्दी ही पहुँच गये थे, इसलिए हमें कुछ खास भीड़ नहीं मिली और हमें बहुत ही संतुष्टिप्रद दर्शन हुए। मंदिर से बाहर आते हुए हमने अपने मोबाइल की अलार्म का हार्दिक आभार व्यक्त किया, क्योंकि अब बाहर दर्शन हेतु लगी लाइन देखकर हमें चक्कर से आने लगे थे। अब हमने नाश्ता करने का फैसला किया। दाल-बाटी-चूरमा का लुत्फ उठाने के बाद हम अपने आखिरी लक्ष्य की ओर उन्मुख हुए।

हमारा आखिरी लक्ष्य था-सज्जनगढ़। सज्जनगढ़ पहुँचने का पथ खतरनाक होने के साथ-साथ रोमांचक भी था। हाँ! राजस्थान में भी ठीक-ठाक ऊँची पहाड़ियाँ हैं, जो विश्व की सबसे प्राचीन-अरावली पर्वत श्रंखला के अंतर्गत आती हैं। ज्यों-ज्यों हम सज्जनगढ़ जाने वाले पथ पर आगे बढ़ रहे थे, त्यों-त्यों रोमांचकता से हृदय प्रफुल्लित होता जा रहा था। इस पथ में कई स्थानों पर हम सेल्फी खींचने के लिए रुके। जब तक हम किले के ऊपर पहुँचे, सूर्य देवता के ढलने का समय हो गया था। सूर्य देव पहाड़ों के बीच गोता लगाने के लिए उतावले लग रहे थे और हम उस दृश्य को अपनी आँखों में कैद करने के लिए बेताब थे। मेरे लिए इस अद्भुत नज़ारे को शब्दों में बयाँ कर पाना संभव नहीं है। सज्जनगढ़ की खूबसूरती को निहारने में हम लोगों ने स्कूटी के पेट्रोल की ओर ध्यान ही नहीं दिया। उसकी पेट्रोल संकेतक सूई बिल्कुल रेड जोन में आ चुकी थी। हमने डरते-डरते स्कूटी स्टार्ट की और नीचे उतरने लगे। करणी माता के आशीर्वाद और सौभाग्य से हम सुरक्षित नीचे उतरने में सफल रहे।

वापस आने के बाद हमने किराये की स्कूटी को वापस लौटा दिया और अपना सामान उठाने के लिए वापस होटल की ओर रवाना हो गये। होटल का भुगतान करके और अपने कमरे की जाँच करने के बाद हम अपना सामान उठाकर रेलवे स्टेशन की ओर रवाना हुए। हम शीघ्र ही रेलवे स्टेशन पहुँच गये। हमने वहाँ एक-एक कप चाय पी तथा साफ जगह पर बैठकर रेलगाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। प्रतीक्षा की इन घड़ियों में मेरे मस्तिष्क में कई मिश्रित विचार उमड़ रहे थे। इस यात्रा से एक शानदार अनुभव प्राप्त करने की प्रसन्नता तो थी ही, परंतु यहाँ से अब दूर जाने का दुःख भी हो रहा था। मुझे किसी लेखक का एक कथन याद आ गया कि जीवन एक यात्रा है और यात्रा एक जीवन है।

इस प्रकार-मैंने इस यात्रावृत्तांत के माध्यम से जीवन के कुछ सुखद क्षण, जो उदयपुर की यात्रा के दौरान जिए, उनसे आपका परिचय कराने का भरपूर प्रयास किया है। परंतु मैं स्वयं इस बात से सहमत हूँ कि शब्दों का कोई भी समुच्चय उदयपुर की भव्यता, नैसर्गिक सुंदरता और ऐतिहासिकता का वर्णन नहीं कर सकता। मैं स्वयं को बेहद खुश-किस्मत समझती हूँ कि ईश्वर ने मुझे उदयपुर की भव्यता और नैसर्गिक सुंदरता से साक्षात्कार करने का सुअवसर दिया।



संस्मरण

मदद

यह एक आँखों देखी घटना है जो मैं कभी भी भूल नहीं सकता। इतने सालों के बाद भी कभी-कभी नजरों के सामने आ ही जाती है और मैं मन ही मन मुस्करा लेता हूँ।

यह बात तब की है जब मैं पश्चिम बंगाल के एक दूरदराज क्षेत्र की एक शाखा में कार्यरत था। समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए झारग्राम रेलवे स्टेशन से कोलकता जाने वाली ट्रेन के इंतजार में प्लेटफॉर्म पर खड़ा था।

एक अधेड़ उम्र की महिला फटे हुए सफेद साड़ी में एक हाथ में छड़ी और दूसरे हाथ में भिक्षापात्र लिए सभी के पास जाकर सबसे मदद की गुहार लगा रही थी। जिसने दिया उसको दुआ देती थी और किसी ने नहीं दिया तो मुस्कराकर आगे बढ़ जाती थी। शरीर से कमजोर लग रही थी पर चेहरे पर मुस्कराहट थी।

मेरे पास खड़े दो लड़के, जो शायद कॉलेज के विद्यार्थी थे, के सामने जाकर जब वृद्धा ने भिक्षापात्र को उन विद्यार्थियों के आगे बढ़ाया तो एक लड़के ने तुरंत बोला मौसी पैसे की ज़रूरत तो मुझे है, हम तुम्हें क्या देंगे? तुम हमारी मदद करो।

आगे जो हुआ वह सुनकर / पढ़कर आप सभी दंग रह जाएंगे। भले ही लड़कों ने उसके साथ मजाक में ऐसे ही बोल दिया, पर महिला ने तुरंत मुस्कराते हुए अपने कटोरे में जितने भी पैसे थे



उसे अपने हाथ में रखकर सामने खड़े दोनों लड़कों को बोली - ले लो बेटा, तुम्हें इसकी ज़रूरत शायद मुझसे ज्यादा है। मेरी तो दो वक्त की रोटी ऊपर वाले की कृपा से नसीब हो जाती है।



अशोक कुमार मेहेर

मंडल प्रबंधक

अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

इससे ज्यादा मेरी कोई ख्वाहिश नहीं है। इतने लोग जो स्टेशन पर आते जाते हैं, उनसे मिली छोटी रकम से मेरा गुजारा हो जाता है। पर मैं तुम लोगों की मदद कर सकूँ तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। मैं भी किसी के काम आ सकूँगी यह मैंने कभी सोचा नहीं था। तो यह रख लो और खुश रहो।

दोनों लड़के स्तब्ध रह गये। उनको एहसास हो गया था कि किसी की मजबूरी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। और ना ही किसी का उपहास करना चाहिए। दोनों ने बिना कुछ कहे अपनी गलती स्वीकार करते हुए सर नीचे कर लिया। खुद की विवशता को पीछे छोड़कर दूसरे की मदद के लिए अग्रसर उस महिला के आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से भरे चेहरे को देखता रह गया। और मन ही मन सोचा कि किसी की मदद ना कर सके तो ना सही, पर किसी की मजबूरी पर उसका उपहास करना इंसानियत से परे है।

किसी की निंदा ना करें. अगर
अप्य मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते
हैं, तो जरूर बढ़ाएं. अगर नहीं
बढ़ा सकते, तो अपने हाथ जोड़िये,
अपने भाइयों को आशीर्वाद
दीजिये, और उन्हें उनके मार्ग पे
जाने दीजिये.





कविता

मैं एक औरत हूँ...



पुजा तायल

ग्राहक सेवा सहयोगी
क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा

सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं शारीरिक रूप से कमज़ोर नहीं,
ताकत मेरी कोख में पलती है।
सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं किसी पे बोझ नहीं,
कदम से कदम मिलाकर चलती हूँ।

सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं असहाय या बेबस नहीं,
पूरे परिवार को साथ बाँधकर रखती हूँ!
सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं किसी पर निर्भर नहीं,
घर के साथ दफ़्तर भी संभाल लेती हूँ।

सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं किसी से कम नहीं,
हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन करती हूँ!
सिर्फ इसलिए कि मैं एक औरत हूँ!
मैं नखरिली और ज़िद्दी नहीं,
हर माहौल में खुद को ढाल लेती हूँ।

मैं औरत एक हूँ, कोई तुलना की वस्तु नहीं,
जो बात- बात पर आँकते हो।
तुम्हारा मेरा वजूद एक नहीं,
यह बात तुम भलीभाँति जानते हो।
अभिमान है मुझे अपने उस नारीत्व पर,
जिसकी ममता को तुम सागर से भी गहरा मानते हो।।



कविता

माँ की पुण्यतिथि पर



मधुमिता कुमारी

ग्राहक सेवा सहयोगी
एच.एस.आर., लेआउट शाखा

माँ अब तुम कैसी हो?
क्या बिलकुल पहले जैसी हो?
तुम बिन जीवन के ये गुजरे साल
जैसे पेड़ की शाखों से झड़ गए हों फूल
स्वर्ग के सातवें तल्ले तक क्या मेरी आवाज जा पाती है?
थोड़ी-थोड़ी क्या तुमको भी याद हमारी आती है?

माँ अब तुम कैसी हो?
क्या बिलकुल पहले जैसी हो?
क्या वहां भी चाय लेकर खिड़की पर बैठा करती हो?
और गलत वर्तनी पर वैसे ही डांटा करती हो?
शुद्ध और सुन्दर लिखो, हिंदी हमारी माँ है,
ये सबको समझाती हो?

माँ अब तुम कैसी हो?
क्या बिलकुल पहले जैसी हो?
क्या अब भी एकला चलो रे गुनगुनाती हो?
और गुस्साने पर बांग्ला में भुनभुनाती हो?
क्या वहां भी बारिश में, खुशी से झूम जाती हो?
और पिता से रूठकर, कोने में छिप जाती हो?

माँ अब तुम कैसी हो?
क्या बिलकुल पहले जैसी हो?
तुम्हारे स्वर्ग में क्या-क्या है?
धूल, धूप, गर्मी, झूठ, ईर्ष्या, धोखा, या फिर
फूल, छाँव, समीर, सुगंध, प्रेम, सद्भाव
माँ बस इतना कह दो
इतनी दूर जाकर खुश तो हो?



आलेख

भारतीय कृषि: चुनौतियां, प्रयास और संभावनाएं

जमीन जल चुकी है, आसमान बाकी है,
सूखे कुएं तुम्हारा इम्तिहान बाकी है।
बादलों बरस जाना समय पर इस बार
किसी की ज़मीन गिरवी है,
किसी का लगान बाकी है।

भारत की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। इसके साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में भी कृषि का ही अहम योगदान है। भारत में 42 प्रतिशत भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। जो कि विश्व में अमेरिका के पश्चात द्वितीय स्थान पर है किंतु फिर भी हमारे देश में किसान की स्थिति अत्यंत दयनीय बनी हुई है। समस्या के मूल में झांके तो कई कारण नजर आते हैं।

सर्वप्रथम हमारे देश के किसानों में तकनीकी जागरूकता का नितांत अभाव है। वे आज भी परंपरागत तरीके से ही खेती करते हैं जिससे वांछित लाभ की प्राप्ति नहीं हो पाती। इसके अतिरिक्त वे कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयुक्त मात्रा में प्रयोग नहीं करते। इनके अधिक प्रयोग के कारण आर्थिक लागत भी बढ़ती है और पर्यावरण को भी अत्यधिक हानि होती है। हमारे यहाँ कृषक मृदा की गुणवत्ता के अनुसार फसलों की पैदावार नहीं करते जिससे उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जैसे पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में पानी की कमी होने के बावजूद वहाँ चावल की खेती की गई जिसके लिए बड़ी मात्रा में नहरों और भौमजल का प्रयोग किया गया नतीजतन वहाँ मृदा में लवणता बढ़ गई और रेह एवं कल्लर भूमि विकसित हो गई जो कि अनुपजाऊ होती है।

देश में कृषि से संबंधित अवसंरचना का भी अभाव है। एक तरफ हम विश्व के हंगर इंडेक्स में बदतर स्थिति में पाए जाते हैं, दूसरी तरफ पर्याप्त भंडारण के अभाव में न जाने कितना ही अनाज बाहर पड़ा सड़ जाता है। परिवहन के साधनों की कमी के कारण किसान अपना उत्पाद समय पर मंडी में नहीं पहुँचा पाते जिससे उन्हें उचित कीमत प्राप्त नहीं होती।

भारतीय कृषि की समस्याओं के संदर्भ में सबसे निर्णायक कारण मानसून पर निर्भरता है। भारत में वर्षा की स्थिति न सिर्फ अनियमित है



निशा शर्मा

प्रबंधक
उत्कृष्टता केंद्र, गुरुग्राम

बल्कि अनिश्चित भी है। कहीं सूखा पड़ रहा है तो कहीं वर्षा की अधिकता के कारण बाढ़, तूफान, कीटों की अधिकता जैसी आपदाएं आ जाती हैं।

देश में सिंचाई के वैकल्पिक साधन मौजूद हैं लेकिन इनका वितरण असमान एवं अविकसित है। साथ ही सीमांत एवं छोटी जोतों तक इनकी पहुँच भी सुनिश्चित नहीं है। एक अन्य समस्या है भूमि की उर्वरा शक्ति का क्षीण होना जो कि सदियों से एक ही भूमि पर कृषि करने का परिणाम है। भू-क्षरण एवं जल-रिसाव की समस्या ने भी देश में मृदा की उर्वरा शक्ति को क्षीण किया है। साथ ही रासायनिक खादों के अंधाधुंध एवं अनियोजित प्रयोग से भूमि की उत्पादकता लगातार कम हो रही है।

भारतीय कृषि में शिक्षा का नितांत अभाव पाया जाता है। अशिक्षा के कारण किसान अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते। अशिक्षा के चलते ही किसानों में संगठनात्मकता नहीं मिलती। असंगठित होने के कारण किसान प्रशासन की नीतियों से लाभ नहीं ले पाते और शोषित होते रहते हैं। वित्तीय साक्षरता के युग में भी बहुत से किसान सूदखोरों से उच्च ब्याज दर पर ऋण लेते हैं। कृषि उत्पादन कम होने के कारण ऋण न चुका पाने की स्थिति में किसान विवशता में मृत्यु का वरण करता है।

कुछ समस्याएं न सिर्फ कृषकों बल्कि संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती बनकर उभरती हैं। कर्ज माफी की व्यवस्था आज कृषकों और स्वयं भारत के लिए एक नासूर बन चुकी है। यह देश की अर्थव्यवस्था को अंदर से खोखला करती है। कल्याणकारी योजनाओं में लगने वाला पैसा कर्ज माफी की बली चढ़ जाता है, रचनात्मक व्यय में कमी आती है, देश का राजकोषीय घाटा बढ़ता है। एनपीए में डूबे बैंकों की हालत



और खराब हो जाती है, बैंक नए ऋण नहीं दे पाता और उत्पादक गतिविधियों में कमी के फलस्वरूप संपूर्ण अर्थव्यवस्था की गति मंद पड़ जाती है।

भारत सरकार द्वारा देश के कृषि क्षेत्र की भविष्य की दिशा तय करने हेतु नई राष्ट्रीय कृषि नीति की घोषणा की गई है जिसमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया गया है -

- सभी कृषिगत उपजों हेतु अधिकतम बिक्री मूल्य निश्चित करना
- मूल्यों में उतार-चढ़ाव से किसानों की सुरक्षा हेतु बाजार जोखिम स्थिरिकरण कोष का गठन
- सूखा एवं वर्षा से संबंधित जोखिमों से बचाव हेतु कृषि जोखिम कोष का गठन
- किसानों हेतु बीमा योजनाओं का विस्तार
- कृषि से संबंधित मामलों में स्थानीय पंचायतों के अधिकारों में वृद्धि
- राज्य सरकारों द्वारा कृषि हेतु अधिक संसाधनों का आबंटन

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के अधिक समग्र एवं समेकित विकास को सुनिश्चित करने के लिए कृषि जलवायुवीय, प्राकृतिक संसाधन और

प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए गहन कृषि विकास करने के लिए राज्यों को बढ़ावा देने हेतु एक विशेष अतिरिक्त केंद्रीय सहायता (एसीए) योजना की शुरुआत भारत सरकार ने वर्ष 2007-08 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की शुरुआत की थी जो तब से जारी है।

वर्तमान में इसका उद्देश्य कृषि और संबद्ध क्षेत्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करते हुए 12वीं योजना अवधि के दौरान वांछित वार्षिक वृद्धि दर को प्राप्त करना और उसको बनाए रखना है।

मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. राज्यों को प्रोत्साहित करना ताकि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सार्वजनिक निवेश को बढ़ाया जा सके। राज्यों को कृषि एवं संबद्ध योजनाओं के नियोजन एवं निष्पादन की प्रक्रिया में शिथिलता एवं स्वायतता प्रदान करना।
2. कृषि जलवायुवीय स्थितियों, प्रौद्योगिकी एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर जिला एवं राज्यों हेतु कृषि योजनाएं बनाई जाएं, यह सुनिश्चित करना।
3. यह सुनिश्चित करना कि स्थानीय आवश्यकताएं/ फसलों/ प्रथामिकताओं को राज्य की कृषि योजनाओं में ठीक प्रकार से प्रदर्शित किया जाए।
4. केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से महत्वपूर्ण फसलों में उपज अंतर को कम करने के लक्ष्य को प्राप्त करना।
5. कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के विभिन्न घटकों का समग्र प्रकार से समाधान करके उत्पादन एवं उत्पादकता में परिवर्तन लाना।

आयोजन एवं कार्यान्वयन

योजना के कार्यान्वयन हेतु राज्य कृषि विभाग नोडल विभाग रहेगा। प्रशासनिक सुविधा तथा कार्यान्वयन को आसान करने के लिए राज्य सरकारें फास्ट ट्रैक संबंधी योजना के कार्यान्वयन हेतु एक विशेष एजेंसी योजना की पहचान और गठन कर सकती हैं, जहाँ इस प्रकार की एजेंसी गठित/अभिनामित की जाती है, वहाँ आरकेवीवाई के उपयुक्त कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने का संपूर्ण उत्तरदायित्व राज्य कृषि विभाग का होता है।

राज्य अपने स्वयं के संसाधनों से 1 प्रतिशत की सीमा से अधिक कोई भी प्रशासनिक व्यय को पूरा कर सकते हैं।

फोकस क्षेत्र (उत्पादन वृद्धि)

मुख्य खाद्य फसलों जैसे गेहूँ, धान, मोटे अनाज, दलहन तथा तिलहन का समेकित विकास: किसानों को प्रमाणित/एचवाई की बीजों की

उपलब्धता; प्रजनक बीजों का उत्पादन; आईसीएआर, सार्वजनिक क्षेत्र बीज निगमों से प्रजनक बीजों की खरीद; आधारी बीजों का उत्पादन; प्रमाणित बीजों का उत्पादन; बीज उपचार; प्रदर्शन स्थलों पर किसान फील्ड स्कूल; किसानों को प्रशिक्षण आदि के लिए सहायता प्रदान की जा सकती है। अन्य फसलों जैसे गन्ना, कपास तथा वे प्रजातियां जो राज्य के लिए महत्वपूर्ण हो सकती हैं, के विकास के लिए इसी प्रकार की सहायता प्रदान की जाएगी।

कृषि मशीनीकरण – फार्म मशीनीकरण के प्रयासों, विशेष रूप से उन्नत तथा महिला अनुकूल उपकरणों, औजारों और मशीनरी के लिए वैयक्तिक लाभार्थियों को सहायता प्रदान की जा सकती है, साथ ही वे मशीनें जिनका निजी स्वामित्व आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं है, उनके लिए सहायता दी जा सकती है। सहायता केवल आरकेवीवाई (अवसंरचना तथा संपत्ति) स्ट्रीम के तहत कस्टम हायरिंग केंद्रों की स्थापना के लिए सीमित होनी चाहिए।

मृदा स्वास्थ्य के संबंध में गतिविधियां – किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण, सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदर्शन, प्रचार/उपयोग साहित्य के मुद्रण सहित जैविक खेती के प्रोन्नयन के लिए किसानों को प्रशिक्षण, क्षारीय तथा अम्लीय जैसी स्थितियों से प्रभावित मृदा के सुधार के लिए सहायता प्रदान की जा सकती है।

पनधारा क्षेत्रों में तथा इससे बाहर वर्षा सिंचित कृषि प्रणाली का विकास – गरीबी रेखा से नीचे के किसानों को आजीविका प्रदान करने के लिए समेकित कृषि प्रणाली (कृषि, बागवानी, पशुधन, मात्स्यिकी आदि) के प्रसार के लिए सहायता।

समेकित कीट प्रबंधन योजनाएं – इसमें कीट प्रबंधन प्रणालियां, साहित्य/अन्य जागरूकता कार्यक्रमों के मुद्रण पर फार्म फील्ड स्कूलों के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण देना शामिल होगा।

विस्तार सेवाओं को प्रोत्साहन – इसमें कौशल विकास के लिए नई पहलें तथा कृषक समुदाय को प्रशिक्षण तथा मौजूदा राज्य कृषि विस्तार प्रणाली का पुनरोद्धार शामिल होगा।

बागवानी उत्पादन की वृद्धि से संबंधित गतिविधियां – नर्सरी विकास तथा अन्य बागवानी गतिविधियों के लिए सहायता उपलब्ध होगी।

पशुपालन तथा मात्स्यिकी विकास गतिविधियां – चारा उत्पादन में सुधार, पशु तथा भैसों का आनुवांशिक उन्नयन, दूध उत्पादन में वृद्धि, चमड़ा उद्योग के लिए कच्चे माल के आधार में वृद्धि, पशुधन स्वास्थ्य में सुधार, कुक्कुट पालन विकास, छोटे पशुओं तथा बड़े हुए मछली उत्पादन के विकास के लिए सहायता उपलब्ध होगी।

जैविक तथा जैव उर्वरक – ग्राम स्तर पर विकेंद्रित उत्पादन तथा उसके विपणन आदि के लिए सहायता। बेहतर उत्पादन के लिए इसमें वर्मी कंपोस्टिंग तथा बेहतर प्रौद्योगिकियों को आरंभ करना शामिल है।

रेशम पालन – कोकून तथा रेशम धागा उत्पादन तथा विपणन के लिए विस्तार प्रणाली के साथ कोकून उत्पादन के स्तर पर रेशम पालन।

कृषि तथा कृषकों के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित कुछ योजनाएं इस प्रकार हैं –

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना – सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना भी शामिल है। इस योजना के अंतर्गत किसान को प्रति वर्ष 6000 रुपए तीन किस्तों में प्राप्त होते हैं। यह राशि सीधे उनके बैंक खातों में जाती है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना – अक्सर किसानों की तैयार फसल आंधी, ओलावृष्टि और तेज बारिश जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण नष्ट हो जाती है। ऐसे में किसान के लिए जीवन निर्वाह का प्रश्न खड़ा हो जाता है। ऐसी समस्याओं को देखते हुए सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत की गई।

किसान क्रेडिट कार्ड योजना – किसान क्रेडिट कार्ड की सहायता से पर्याप्त ऋण बेहद आसानी से मिल जाता है। जिससे किसान कृषि से संबंधित खाद-बीज, कीटनाशक आदि सामग्री खरीद सकते हैं। सबसे खास बात यह है कि 5 वर्षों में 3 लाख तक का ऋण लिया जा सकता है। यदि किसान इस कार्ड द्वारा लिए गए ऋण को 1 वर्ष के अंदर ही चुका देते हैं तो उन्हें ब्याज दर में 3 प्रतिशत की छूट मिलती है।

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना – यह किसानों के लिए पेंशन योजना की तरह है। इस योजना के तहत किसानों को 60 वर्ष की आयु पूरी करने के पश्चात न्यूनतम 3000 रुपए पेंशन दी जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए किसानों को 55 रुपए से लेकर 200 रुपए प्रतिमाह 60 वर्ष की आयु तक जमा करना होता है।

जैसे ही किसान 60 वर्ष की आयु पूर्ण करते हैं उन्हें पेंशन मिलने लगती है। इस योजना में जितना योगदान किसान करते हैं उतना ही सरकार करती है। यदि किसी कारणवश किसान की मृत्यु हो जाती है तो किसान की पत्नी को पारिवारिक पेंशन के रूप में 50 प्रतिशत पेंशन प्राप्त होती है।

पीएम कुसुम योजना – भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की समस्या अभी भी गंभीर बनी हुई है। जब किसानों के खेत को पानी की आवश्यकता होती है तो उन्हें समय से बिजली नहीं मिल पाती। पानी के अभाव में उनकी फसलें प्रभावित होती हैं। किसान भाईयों को

निर्बाध बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार की तरफ से पीएम कुसुम योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को सौर पैनल सब्सिडी पर मिलते हैं, जिससे वे बिजली का उत्पादन करके अपनी आवश्यकता के अनुसार उसका प्रयोग करने के बाद बाकी को बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।

डेयरी उद्यमिता विकास योजना – इस योजना का लाभ लेकर किसान या पशुपालक नई डेयरी की स्थापना कर सकते हैं, यदि वह पहले से डेयरी चला रहे हैं तो उसे आगे से बढ़ा सकते हैं। इस योजना के माध्यम से किसान को अनुदान दिए जाने का प्रावधान किया गया है, इसके साथ ही किसान भाई प्रशिक्षण भी ले सकते हैं।

पशुधन बीमा योजना – इस योजना की शुरुआत मुख्य रूप से दो उद्देश्यों से की गई है। किसानों या पशुपालकों को पशुओं की अचानक मृत्यु हो जाने पर उन्हें आर्थिक क्षति काफी होती है। इस प्रकार की क्षतिपूर्ति के लिए केंद्र सरकार द्वारा पशुधन बीमा योजना चलाई जा रही है। योजना के अंतर्गत दुधारु मवेशियों और भैंसों का बीमा उनके अधिकतम वर्तमान बाजार मूल्य पर किया जाता है। बीमा का प्रीमियम 50 प्रतिशत तक अनुदानित होता है। अनुदान की पूरी लागत केंद्र सरकार द्वारा वहन की जाती है। अनुदान का लाभ अधिकतम 2 पशु प्रति लाभार्थी को अधिकतम तीन वर्ष की एक पॉलिसी के लिए मिलता है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना – किसानों द्वारा अपने खेतों में उत्पादन बढ़ाने को लेकर असंतुलित उर्वरक का उपयोग कर रहे हैं। जिसके कारण मिट्टी की उत्पादकता निरंतर कम हो रही है, इसके साथ ही फसलों में विभिन्न प्रकार के रोग लग रहे हैं। खेत की उत्पादकता बढ़ने

की जगह निरंतर कम होती चली जा रही है। जबकि दूसरी तरफ अधिक उर्वरक तथा रोग के लिए कीटनाशक उपयोग करने से कृषि खर्च भी बढ़ ही रहा है।

जैविक खेती योजना (ऑर्गेनिक फार्मिंग स्कीम) – वर्तमान समय में उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों द्वारा रासायनिक खाद का अधिक इस्तेमाल किया जा रहा है। जो कई रोगों का कारण बन रहा है। इस समस्या को देखते हुए केंद्र सरकार द्वारा जैविक खेती योजना को बढ़ावा देने का हर संभव प्रयास किया जाता है।

आगे की राह –

छोटे और सीमांत किसानों को अन्य वैकल्पिक रोजगार भी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। साथ ही कृषि क्षेत्र में आवश्यकता से अधिक मानव श्रम लगता है। अतः, इस क्षेत्र से अतिरिक्त श्रम बल का स्थानांतरण कृषि संबद्ध क्षेत्रों में किया जाना चाहिए- जैसे पशुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खीपालन आदि।

ऋण माफी के दुष्प्रकार से कृषकों को बाहर निकालने के लिए अनुबंध कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है जिसमें कृषकों की आय निश्चित हो जाएगी। इसके अतिरिक्त खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों और मेगा फूड पार्कों द्वारा हम बंपर पैदावार वाली फसलों का समुचित दोहन कर पाएंगे।

अवसंरचना के स्तर पर योजनागत तरीके से काम करके भंडारण एवं परिवहन की खामियों को दूर करना होगा।

इन सभी समेकित प्रयासों के साथ भारत में कृषि तथा कृषक दोनों का ही विकास संभव है।



कृषि रोजगारोन्मुखी आर्थिक विकास को गति दे सकती है, बशर्ते कि यह बौद्धिक रूप से संतोषजनक और आर्थिक रूप से लाभप्रद हो। भविष्य उन देशों का है जिनके पास अनाज है, बंदूकें नहीं। यदि कृषि में गड़बड़ी होगी तो किसी भी अन्य चीज के सही होने की संभावना नहीं रहेगी।

– एम.एस. स्वामीनाथन





यात्रा वृत्तान्त

नागपुर से पुणे एवं समीपवर्ती स्थान

यूं तो हम घर पर जमे रहने वाले प्राणियों में से हैं परंतु जब पुराने मित्रों से मिलने की बात हो तो हमसे रुका भी नहीं जाता, रुकें भी कैसे, ये ही तो वो लोग हैं जिनसे मिलकर लगता है कि हाँ भाई कुछ तो किया है जीवन में मिठास लाने के लिए। हम कुछ माह पहले ही नागपुर में स्थानांतरित हुए हैं और हमारे एक और परम मित्र रहते हैं पुणे में, तो बस बन गयी योजना, सावन में पुणे और आस पास की जगह देखने लायक हैं तो एक मेल मिलाप तो बनता है। हमारे निवास से पुणे में हमारे मित्र के निवास की दूरी लगभग 760 किलोमीटर है और इसको पूरा करने में 11 घंटे का समय लगना था। तो हमने निश्चित किया कि 12 अगस्त को सवेरे 7 बजे निकल कर रुकते-रुकते शाम को 7 बजे तक हम पुणे पहुँच जाएंगे।

नागपुर से पुणे

हम दोनों ही पति-पत्नी समय के पके हैं और हमेशा की तरह दृढ़ निश्चय करके, अपने ढाई वर्षीय पुत्र के साथ समयानुसार, प्रातः 09 बजे अपनी बलेनो को अच्छी तरह ऐरावत का सा नहला कर और गाड़ी की सभी चीजें जाँच कर के हम निकल पड़े अपनी मंजिल पुणे की ओर। नागपुर से निकलते ही कुछ 20 किमी एनएच44 से होते हुए हमने समृद्धि महामार्ग/नागपुर-मुंबई एक्सप्रेस-वे पकड़ लिया जिसका पूरा नाम 'हिन्दू हृदया सम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग' है; यह नागपुर के ही एक गाँव 'शिवमदका' से शुरू होता है और अभी ईगतपुरी तक जाता है लेकिन हमे केवल शिर्डी तक ही लगभग 565 किमी इस रास्ते पर चलना था उसके बाद क्रमशः एनएच60 एवं एनएच48 पकड़ लेना था।

अत्यंत सुंदर समृद्धि महामार्ग पर चलते-चलते कुछ समय बाद हमें लगा कहीं हम किसी समानान्तर दुनिया में तो प्रवेश नहीं कर गए, कोई भी अन्य वाहन नहीं दिख रहा था, सिर्फ दूर-दूर तक फैला दक्कन का पठार और ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ जिनको दक्कन ट्रैप्स भी कहा जाता है। इन पहाड़ियों को देख कर ऐसा लगता है जैसे किसी ने छेनी हथौड़ी से तराशा है या कोई महाविशालकाय नदी सदियों पहले यहाँ की घाटी में बहती होगी जिसकी वजह से पहाड़ियों पर ऐसी रेखाएँ बनी दिखती हैं; हालांकि असल में ये आग्नेय चट्टानें हैं जो लगभग 6.6 करोड़ वर्ष अर्थात् हिमालय के निर्माण से भी 1 करोड़ वर्ष पहले एक ज्वालामुखी फटने जैसी ही एक घटना से निकलने वाले लावा के



गौरव जोशी

वरिष्ठ प्रबंधक

अध्ययन एवं विकास केंद्र, नागपुर

30,000 वर्षों तक परत दर परत ठंडा होने से बनी हैं इसी कारण ये पहाड़ियाँ ऊपर से ऐसी समतल दिखती हैं जैसे ऊपर से थाप दी गयी हों। इन पहाड़ों की मिट्टी भी भारत की अन्य मिट्टियों से भिन्न है, इसको काली मिट्टी या रेगुर मिट्टी भी कहा जाता है जो कपास की खेती के लिए उपयुक्त होती है। समृद्धि महामार्ग कई जगह पहाड़ियों को काट कर भी बनाया गया है और जब आप इन पहाड़ियों के बीच से निकलते हैं तो इन चट्टानों की परतों को अंदर की ओर से भी देख पाने का अनुभव ही अलग होता है, आप को एहसास होता है कि प्रकृति कितनी अद्भुत है, हर कण-कण में कितनी सुंदरता छिपी है।

रास्ते में पड़ रहे छोटे-छोटे गांवों को भी देखा हमने, यहाँ लोग अभी भी पारंपरिक वेशभूषा ही धारण करते हैं, महाराष्ट्र की विख्यात टोपी भी कई लोगों को लगाए देखा। चूंकि खाना तो हम अपना बांध के चले थे घर से तो होटल ढूँढने की जहमत उठाई ही नहीं; बीवी जी ने 3 दिन से घर में कड़छी-कड़ाही खोल रखी थी। नमकीन, बिस्किट का नाश्ता सब घर का बना हुआ और खाने में थी सुगंधित आलू-पूरी जिसकी खुशबू की वजह से एक घंटा पहले ही 1 बजे कवरादरी नामक जगह के आस-पास हाइवे पर ही गाड़ी रोककर पहले पेट पूजा की फिर थोड़ा सा अंगड़ाई लेकर आधे घंटे में आगे चल दिए। कुछ एक-दो जगह पर छोटे-छोटे पड़ाव हैं जहा रुक कर आप रेस्ट रूम इस्तेमाल कर सकते हैं। समृद्धि महामार्ग पर चलते-चलते 15 मिनट का एक और छोटा सा विश्राम लेने के बाद हमने गोनदे जगह के पास 5:00 बजे के करीब 'सिन्नार एक्जिट' से निकास किया और फिर वहाँ से एनएच60 पकड़ लिया।

पुणे आते हुए यूं तो बहुत सी नदियां पड़ी जैसे बोर, धाम इत्यादि लेकिन मुला और मुथा नदियों की कहानी बड़ी रोचक है। कहते हैं पुरातन काल में एक राजा थे राजा गजनक जो तपस्या करने सहयाद्री की पहाड़ियों में बैठ गए, तो देवराज इंद्र को असुरक्षा महसूस हुई और



उन्होंने राजा गजनक की इस तपस्या को भंग करने के लिए मुला और मुथा नाम की दो अप्सराओं को उनके पास भेजा, और तपस्या भंग होने पर राजा गजनक ने इन दोनों अप्सराओं को नदी बन कर बहने का श्राप दिया जो कि पुणे से हो कर बहती हैं। उनको मुक्ति तभी मिलती जब वे बहती हुई एक दूसरे से मिल जाएँ और भीमा नदी की रचना करें।

लगभग 7:00 बजे हम पुणे के जाम में फंसे हुए थे और 8:00 बजे अपने मित्र के घर पहुँच गए। वहाँ एक और मित्र और उनकी पत्नी पहले ही आए हुए थे, जैसे ही हमारे पुत्र ने उन सभी को चाचा-चाची कहकर पुकारा, सभी की आँखें 100 वाट के बल्ब की तरह चमक गयी और चारों उनको लेकर मशगूल हो गए, धीरे-धीरे हम पति पत्नी ने ही अपना सामान अंदर रखा और उन सभी को नागपुर की प्रसिद्ध संतरा बर्फी खिलाई। इतने लंबे सफर की थकान से हमारे छोटे उस्ताद को थोड़ी देर उछल-कूद करके नींद आ ही गयी। हमारी थकान उतारने के लिए चाय चढ़ा दी गयी थी और फिर देर रात तक बातों का सिलसिला चलता रहा।

पुणे से कर्जत

13 अगस्त की सुबह 9:30 बजे हम लोग पुणे से निकलकर कर्जत की ओर निकल चुके थे। अब कारवां बड़ा हो गया था, हमारे दो और कॉलेज के मित्र जो पुणे में रहते हैं वे भी अपनी-अपनी अर्धांगिनी सहित साथ हो लिए थे। हम सब कुल 10 लोग और हमारे 2.5 साल के लाडेसर को मिला कर 11 लोग दो कारों से रवाना हो गए थे। पुणे से कर्जत में हमारे स्टे की दूरी लगभग 100 किलोमीटर थी जिसको हम ढाई घंटे में पूरा करते। मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे से होते हुए रास्ते में हम एक जगह नाश्ते के लिए रुके और फिर वहाँ से 10:00 बजे तक रवाना हो लिए थे।

पुणे शहर से जैसे ही हम बाहर की ओर निकले तो सड़क के दोनों ओर ऐसे हरे भरे प्राकृतिक दृश्य देख कर सावन माह का सजीव एहसास हो

रहा था। बीच-बीच में रुकते और मनोरम दृश्यों का लुत्फ उठाते हुए हम 1:00 बजे तक अपने स्टे 'द ग्रीन मॉंटाना' में पहुँच गए। ये एक बेहद सुंदर फार्म हाउस है जो मराठी अभिनेत्री प्राजक्ता माली जी की संपत्ति है। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते ही हमने इतनी हरियाली देख ली थी और यहाँ आ कर तो दिल भी हरा हो गया जब फार्म हाउस के पीछे बहते प्राकृतिक झरने दिखे जो सिर्फ बरसात के दिनों में ही बनते हैं। 2:00 बजे लंच कर के सभी कुछ देर को आराम करके आस पास की जगह देखने निकल लिए।

आस-पास में अमरूद के काफी पेड़ थे, हमारी पत्नी जी तो खुशी से चहक उठी चूँकि ये उनका पसंदीदा फल है। एक और नई निहायती खट्टी चीज़ भी खिलाई वहाँ के केयरटेकर ने, उसका नाम बताया 'करवंद' बहुत देर बाद समझ आया की ये तो 'करौंदा' है। चूँकि समूह काफी बड़ा था हमारा, तो सबको साथ ले कर चलने के चक्कर में हमारे एक मित्र ने अपनी प्रिय धर्मपत्नी को ही नाराज़ कर दिया, अब तो सबमे सन्नाटा छाया हुआ था, सबको पता था कि ऐसे तो आगे की डगर मुश्किल हो जाएगी। हम भी माहौल को थोड़ा हल्का करने के लिए अपने पुत्र को कंधे पर बैठा कर उस से बतियाते हुए चलने लगे कि 'बेटा क्या खाएगा? अमरूद खाएगा? करौंदा खाएगा?' तो उस बेचारे मित्र का दिमाग भी बिजली की तेज गति से कौंधा और वो भी अपनी प्रिय धर्मपत्नी से पूछने लगे की 'बेटा क्या खाएगा?' तभी पीछे से दूसरे मित्र ने चटकारे लेते हुए कहा 'बताइयो मत, जब तक सर पे न बैठा ले!' सब ठहाका मार कर हंस पड़े, बेचारे मित्र की नाराज़ प्रिय धर्मपत्नी भी।

कर्जत में स्टे चुनने का एकमात्र लक्ष्य ये था कि प्रकृति की गोद में जा कर पड़े रहना है, बस! और वह उम्मीद यहाँ आ कर पूरी हो गयी। रात के खाने में हमने महाराष्ट्र की प्रसिद्ध झुणका-भाखरी, जिसको पिठला-भाखरी भी बोलते हैं, का आनंद लिया। झुणका एक प्रकार की तरकारी ही होती है जो प्रमुखतः बेसन के आधार के साथ हरे प्याज़ की पत्तियों, लहसुन इत्यादि के तड़के से बनाई जाती है एवं भाखरी के लिए यहाँ ज्वार और बाजरे का प्रयोग हुआ था, अत्यंत लज़ीज़ पकवान था ये।

हमने अपने रुकने के इंतज़ाम में कैंप-फ़ायर का भी विकल्प लिया था तो उसकी भी तैयारी केयरटेकर जी ने कर रखी थी लेकिन सभी लोग काफी थके हुए थे, हमारे छोटे उस्ताद भी दिन भर हल्ला काट कर सो चुके थे तो सभी ने अंदर जा कर पसरना ही उचित समझा। बातों का सिलसिला देश की अर्थव्यवस्था से शुरू हुआ और रात के 2 बजते-बजते वही हुआ जो हमेशा होता है 'भूत की कहानियाँ', पता लगा की सभी के विद्यालय के पीछे या नीचे कब्रिस्तान रहा है, और 3 बजते-बजते जिन पेड़ पौधों के पत्तों की सरसराहट कानों को सुकून दे रही थी, अब वही किसी आहट की आवाज़ लग रही थी, जिस झरने से झरता हुआ पानी शीतलता दे रहा था अब वही आवाज़ रोंगटे खड़े

कर रही थी, बस सभी को इस बात की तसल्ली थी की चलो सब एक साथ तो हैं, सचमुच कुछ हुआ तो भूत को भी दो घड़ी सोचना तो पड़ेगा ही। इस सब में नींद तो सभी की काफूर हो चुकी थी और अब सुबह का चार बज रहा था, बाहर अभी भी अंधेरा था लेकिन अब चिड़ियों की चीं-चीं सुनाई दे रही थी, इस रात की सुबह होने लगी थी। रात को जो कैप-फ़ायर अधूरा रह गया था, बाहर आ कर हमने वही अलाव जलाया, मौसम अभी भी ठंडा था, इतना ठंडा कि अलाव की आंच अच्छी लग रही थी। सब शांत थे, बस चिड़ियों का मधुर कलरव, झरने से बहते पानी की कल-कल ध्वनि, पत्तियों के बीच से आती मंद हवा, पैरों के नीचे ओस की ठंडी-ठंडी बूंदों का स्पर्श, और एक अलौकिक शांति।

इस शानदार अनुभव के बाद एक अदरक वाली चाय तो बनती ही थी, तो बस चढ़ा लिया पतीला और चाय की चुस्कियों के साथ सभी ने धीरे-धीरे करके नींद लेने के लिए खिसकना शुरू कर दिया। 5 बज चुके थे और सभी सिपाही निढाल सो रहे थे, फिर से उठ कर नई मंज़िल माथेरान की ओर जाने के लिए। हालांकि हमारी पत्नी जी बेचारी 7 बजे उठ कर बैठ गयी थी क्यूंकी बाँस 7 बजे उठ जाते हैं, उन्हें नहीं मतलब कि रात को आपने कैसे अपना समय व्यर्थ किया है। जब हम सब सो रहे थे तब तक ये माँ- सपूत की जोड़ी, आस पास में उपलब्ध हर प्रकार के जीव-जन्तु जैसे मुर्गा, बकरी, गाये-बछड़ा, घोड़ा सबसे मिलकर आ गए। पत्नी जी का नहीं पता हमारा सुपुत्र बहुत खुश था, पूरे परिसर में कुकडुकु करता घूम रहा था। हम सबकी नींद भी इसी बांग से प्रातः 9:00 बजे खुली। जब सब उठे तो केयरटेकर जी ने गरमा-गरम पोहा व आलू के परांठे चाय के साथ तैयार करके रखे थे।

ज्यादा लोगों के साथ यात्रा करने का एक फायदा ये भी है कि वे सब आपकी ज़िम्मेदारी भी बाँट लेते हैं तो हमारे सुपूत को बाकी 9 लोगों के भरोसे छोड़ कर पत्नी जी ने भी 2 घंटे की नींद ली। वो दो घंटे हम सबके लिए काफी भारी रहे, एक ढाई साल के बालक को बालक समझने की भूल हमने कर दी थी, उतने से समय में जितनी तबाही उस परिसर में हुई है उतनी पिछले पूरे दिन में नहीं हुई थी। जब पत्नी जी सो कर उठी तो बाकी सबने नतमस्तक हो कर इस छोटी सी आफत को उन्हे ही सौंप दिया और फिर हर एंगल में अकेले, जोड़े में, समूह में, पेड़ के साथ, झरने के साथ फोटो ले कर जब सबका पेट भर गया और सोशल मीडिया पर जब सबने सबको बता दिया कि 'देखो हम मजे कर रहे हैं!' अंततः 12 बजे हमने इस अत्यंत सुंदर जगह से विदा ली, और चल दिये अपनी अगली मंज़िल माथेरान की ओर।

कर्जत से माथेरान

कर्जत में जहाँ हम ठहरे थे वहाँ से माथेरान की दूरी करीब 25 कीमी थी, तो विचार बनाया गया कि एक घंटे में माथेरान पहुँच कर ही दोपहर का खाना खाया जाए। कर्जत-मुंबई रोड से नेरल होते हुए हम

लगभग 50 मिनट में माथेरान की पहाड़ियों की तलहटी तक पहुँच गए थे। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते सभी ने रास्ते में सड़क किनारे बिक रहे एक-एक दो-दो अमरूद (मराठी में पेरु) का सेवन भी कर लिया था, और क्या मीठे अमरूद थे, वाह ! सभी का मन तृप्त हो गया था।

माथेरान भी पश्चिमी घाट का ही एक हिस्सा है एवं बसाल्ट चट्टान का एक बेहतरीन उदाहरण है। ऊपर कि ओर बढ़ते हुए हम ऊपर से आते हुए छोटे-छोटे झरनों को देखते हुए चल रहे थे, रुकने का मन भी था सभी का किन्तु ऊपर पहुँच कर पेट-पूजा का कार्यक्रम भी करना था तो बस 'राही चला चल' गाते हुए आगे बढ़ते रहे। माथेरान एकमात्र ऐसा हिल स्टेशन है जहाँ किसी भी प्रकार के स्वचालित वाहन का प्रवेश वर्जित है, तो हमें कार से केवल यहाँ के पार्किंग तक जाना था उसके बाद ऊपर जाने के लिए यहाँ कि सुप्रसिद्ध टॉय ट्रेन से जाने का विचार था। नीचे से ऊपर आने में कुछ 15-20 मिनट ही लगे लेकिन इन 15-20 मिनट में सबका उत्साह अर्श से फर्श पर आ गया था, हम भूल गए थे कि इस सप्ताहांत केवल हम नहीं बल्कि हज़ारों और लोग भी स्वतन्त्रता दिवस मनाने निकले हैं। एक ऐसा हिल स्टेशन जहाँ गाड़ियों का प्रवेश वर्जित है वहाँ की खुली साफ हवा और प्रकृति का आनंद लेने की लिए वाहनों की एक अनंत जंज़ीर माथेरान के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी, कि कब हम अपनी गाड़ी और रोज़मर्रा की जिंदगी को पार्किंग में छोड़ें और निकल पड़ें कुछ पल शांति में बिताने को। पार्किंग से पहले इतनी लंबी लाइन देख कर तो सबके मन में धुकधुकी और में पेट में गुड़-गुड़ होने लगी। आगे पता किया तो मालूम पड़ा कि अभी 1-2 घंटा तो पार्किंग पहुँचने में ही लग जाएगा, हमारा और पत्नी जी का तो दिल बैठा जा रहा था ये सोच कर कि 1 बज रहा है और बाँस के खाने का समय हो चला है, एक-दो घंटे में तो एक नया ज्वालामुखी फट जाएगा यहाँ। धीरे-धीरे हमने दोनों कारों में बैठे हुए अपने मित्रों की भी थाह ली तो समझ आया कि भूख भी सबको लगी है और गाड़ियों की लंबी कतार देखकर ऊपर जाने कि बहुत रुचि भी नहीं बची है किसी में, लेकिन कोई स्पष्ट मना नहीं कर रहा है, तो हमने भी वही किया जो सभी माँ-बाप ऐसी स्थिति में करते हैं, सबकुछ बच्चे पर डाल दिया कि हमारा तो मन है लेकिन बच्चा परेशान हो जाएगा, तो सबने जल्दी से बहती गंगा में हाथ धोया कि हाँ हाँ बच्चा परेशान हो जाएगा, रहने दो चलो। बस फिर क्या था, जल्दी से गाड़ी घुमाई और सब के सब पुणे वापसी के लिए रवाना हो लिए।

बाकी सब तो खुश थे लेकिन एक मित्र और उनकी मोहतरमा का मुंह उतर गया था, उनको झरने के साथ फोटो खिंचानी थी, सो दूसरे मित्र ने कहीं से गूगल पर खोज कर एक और झरने का पता निकाला जो माथेरान और नेरल के बीच में ही पड़ता है और ज्यादा लोग वहाँ जाते भी नहीं हैं, रास्ता भी 20 मिनट का ही था तो सबने बचे हुए एक-एक अमरूद गटके और चल पड़े आनंद-वाड़ी नामक झरने की ओर। हमारे लाडेसर जो कि फलों के ज्यादा शौकीन नहीं हैं उनको पत्नी जी ने सुबह का पैक किया हुआ आलू का परांठा खिला दिया तो मामला 2 घंटे के लिए तो नियंत्रण में था ही।



आनंद-वाडी वॉटरफॉल नेरल रेल्वे स्टेशन से 3 किमी नेरल की ओर ही चलने पर पड़ता है, एक जगह पार्किंग करके आगे गाँव में से होते हुए पैदल का रास्ता है लगभग एक किलोमीटर। हम सब पूछते-पाछते और महाराष्ट्र के गाँव के जीवन को करीब से देखते हुए चले जा रहे थे। रास्ते में कई घरों में बच्चे व औरतें मिट्टी से गणपती जी की मूर्तियों को आकार देने में तल्लीन थे, तो ध्यान आया कि गणेश चतुर्थी भी आने वाली है और इस बार तो हमें महाराष्ट्र की प्रसिद्ध गणेश चतुर्थी देखने को मिलेगी। ऐसे ही गणपती जी की मूर्ति को तराशते हुए एक बच्चे से हमने पूछा कि “बेटा झरना कहाँ है?” तो उसने मुस्कराते हुए आगे की ओर इशारा कर दिया, हम सब उसकी बात मानते हुए चल पड़े लेकिन थोड़ा आगे चलने पर एहसास हुआ कि बच्चा मासूमियत से नहीं शरारत से मुस्करा रहा था। कुछ देर गलत रास्ते पर चलने के बाद सही रास्ता भी मिल गया और अंततः हम पोखर-पगडंडी पार करते हुए करीब 2 बजे पहुँच गए आनंद वाडी झरने तक। यह झरना ऊपर किसी चट्टान से गिरकर नीचे तरण ताल सा बना रहा था जहाँ तैराकी के शौकीन आराम से अपना शौक पूरा कर सकते थे, हमारे साथ तैराकी तो नहीं सुंदर लम्हों को कैद करने के शौकीन थे तो सभी ने मन भर कर फोटो खिंची और खिंचवाई, हाँ हमारे छोटे उस्ताद ने ज़रूर जी भर कर पानी में खेलने का आनंद लिया। एक घंटे में सभी थक कर और भीग कर वापस चल पड़े उस बच्चे को भी ढूँढते हुए जिसने गलत रास्ता बताया था। पार्किंग वाली जगह पर पहुँचने से पहले एक छोटी सी पनवाड़ी की दुकान से सभी ने 5-5 रु वाले बिस्किट भी चटका लिए क्यूंकी खाने का तो अभी कोई अता-पता नहीं था।

माथेरान से पुणे

पुणे के लिए वापस निकलते-निकलते हमें 4 बज गया था, अब तो बस सबको घर याद आ रहा था। पुणे का रास्ता लोनावाला हो कर

जाता है जो कि खुद भी एक बेहद खूबसूरत पर्यटक स्थल है। हमने यहाँ की ‘मगनलाल चिक्की’ का बड़ा नाम सुना था तो सोचा था कि रास्ते में ही पड़ा तो लेते हुए चलेंगे, लेकिन जब लोनावाला पहुँच कर इधर-उधर देखा तो मगनलाल चिक्की नहीं मानों कौरवों की सेना हो, सैकड़ों मगनलाल चिक्की की लाल रंग की दुकानें सड़क के दोनों तरफ सजी हुई थी और देखने में हूबहू सब एक जैसी की स्वतः मगनलाल जी भी न बता पाएँ कि असली कौन सी है। फिलहाल एक दुकान से जल्दी-जल्दी सभी ने अपनी पसंदीदा किस्म कि चिक्की खरीदी और चल पड़े अपने गंतव्य पुणे की ओर। हमारे सुपुत्र तो पानी में भीग कर और बिस्किट खा कर चुपचाप मीठी नींद में सो रहे थे, बाकी सब इस डर से चुप थे कि उठ न जाएँ। शाम का 6 बज रहा था और आसमान भी कुछ जामुनी सा हो चला था कार में पसरी इस शांति को भरने के लिए हमने हल्की आवाज़ में रेडियो चलाया तो गाना चल रहा था मोहित चौहान जी का गाया हुआ गीत ‘फिर से उड़ चला’।

पुणे के अपने साथियों से कुछ खोजबीन कर पता चला कि ‘शीतल दाँ ढाबा’ नाम से एक अच्छी खाने कि जगह है और रास्ते में ही पड़ेगा, तो लगभग 7 बजे हम सब अपनी पेट पूजा सम्पन्न करने वहाँ विराजमान हो गए। इतनी देर से मोहित चौहान व लकी अली जी के गाने सुनते-सुनते जो सब अपने खयालों में खो गए थे उन सबमें यहाँ का ज़बरदस्त पंजाबी संगीत, खाने की खुशबू व ढाबे की चकाचौंध देखकर शरीर में अलग ही ऊर्जा आ गयी। ढाबा सही में शानदार एवं आलीशान था और सबसे अच्छी चीज़ जो हमने खायी वह थी ‘रूमाली मसाला पापड़’ जिसको एक किस्म की रूमाली रोटी जितने पतले से पापड़ को एक टोकरी का आकार देकर बनाया गया था तथा उसमें मसाले के रूप में प्याज़-टमाटर इत्यादि थे, उम्दा स्वाद था। यहाँ से पुणे का हमारा अभी का घर भी लगभग 1 घंटे की दूरी पर ही था तो सभी को आश्वासन था कि देर-सवेर पहुँच ही जाएंगे। इस ढाबे की सजावट भी शानदार थी इसलिए भी कि ये पूरी तरह आज्ञादी के रंग में रंगा हुआ था। ये स्वतन्त्रता दिवस से पहले की शाम थी और हर तरफ छोटे-छोटे तिरंगे अपने पूरे गुरूर से लहरा रहे थे, तभी स्पीकर से आवाज़ आयी दलेर महंदा जी के प्रसिद्ध गीत ‘रंग दे बसंती’ की, जैसे जैसे गीत आगे बढ़ा हम सब भी देशभक्ति से सराबोर हो कर थकान भुला कर दिल खोल कर नाचे ‘ओह मोहे मोहे तू रंग दे बसंती, मोहे तू रंग दे बसंती’। इस दिन का इससे अच्छा समापन नहीं हो सकता था।

9 बजे हम यहाँ से निकल कर 10 बजे तक पुणे में अपने निवास स्थान पर पहुँच गए, रास्ते से दूध का पैकेट भी ले लिया था छोटे उस्ताद के हल्दी वाले दूध और अपनी चाय के लिए, अब दोस्तों का इतना जमावड़ा है तो नींद तो नहीं आएगी। अगले दिन फिर लोनावाला घूमने के लिए निकलना था, उसकी कहानी फिर कभी।



कविता

कुछ कहना है



भावना
प्रबंधक
कूचामन सिटी शाखा

क्या लिखूं इसी उधेड़बुन में हूँ,
तुझे कुछ कहना चाहती हूँ
बोलने के लिए हिम्मत लगेगी ज़्यादा
तुझे लिख के बताना चाहती हूँ।
काश सुन सकता तू मेरे अनकहे शब्द,
काश पढ़ सकता मेरी ना लिखी शायरी,
काश थम जाता ये वक्त कुछ लम्हे,
काश रुक सकते हम जब साथ थे।
तू पुकार लेता अगर, रुक जाती शायद मैं,
तू देखता पलट के तो मिल जाती वहाँ पे मैं,
अब वो लम्हा बस एक याद है
जिसमें हम दोनों साथ हैं।
तू मेरा नहीं है मालूम है लेकिन,
तुझे अपना कहना चाहती हूँ,
कैसे बयान करूं हाल-ए-दिल
इसी कश्मकश में हूँ,
इसलिए लिख के बताना चाहती हूँ,
पर क्या लिखूं इसी उधेड़बुन में हूँ
मैं तुझे कुछ कहना चाहती हूँ।



ऋचा गुप्ता
प्रबंधक
आर ए एच, कोलकाता



कविता

प्रकृति और प्रेम..

प्रकृति और प्रेम
इस आभा की कैसी माया,
इतने चंचल और खामोशी से कर रहे हमारा इंतजार,
ये लहरों का शोर और सिलसिला है सुकून दिलों में।
हमें जो है प्रकृति से प्रेम
बादलों में बैठ आई हूँ
मोह की तलाश और प्रेम का प्रकाश।
सफेद चांदनी रेतों का लिबास,
किनारों का श्रृंगार, कोरल
रहस्यमयी संसार, हृदय पसार
खो गई बन सतरंगी जलपरी निहार।

प्रेम का शाखत संगीत, हवाओं में बहार,
ये है अंडमान और निकोबार।





आलेख

सोशल मीडिया और डिजिटल बैंकिंग

डिजिटल बैंकिंग, पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं का स्वचालन, ग्राहक जुड़ाव, बेहतर लाभप्रदता और नियंत्रण की कुंजी है। इसने बैंक की भौतिक उपस्थिति को ऑनलाइन उपस्थिति से बदलकर बैंकिंग को फिर से परिभाषित किया और ग्राहक को शाखा में जाने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।

डिजिटल बैंकिंग ग्राहकों को विभिन्न सुरक्षित डिजिटल चैनलों के माध्यम से लेन-देन करने में सक्षम बनाती है, जबकि बैंक डेटा सुरक्षा, संबंधित जोखिम शमन और विनियामक पहलुओं का ध्यान रखता है। यह ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग सेवाओं को एनालिटिक्स, सोशल मीडिया, अभिनव भुगतान समाधान और मोबाइल प्रौद्योगिकी जैसी नवीनतम डिजिटल तकनीकों के साथ एकीकृत करके और ग्राहकों की अपेक्षाओं, सुविधा और अनुभव को बेहतर बनाकर किया जाता है।

डिजिटल बैंकिंग का विकास :

पिछले 20 सालों में पूरी दुनिया में बैंकिंग उद्योग में तकनीक ने अकल्पनीय बदलाव लाए हैं। इंटरनेट और मोबाइल की पहुंच दुनिया भर के लोगों और संगठनों को जोड़ने वाले दूर-दराज के कोनों तक पहुंच गई है। इसने ग्राहकों की उम्मीदों और संगठनों के काम करने के तरीके को बदल दिया है।

मोबाइल कनेक्टिविटी और संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ फिनटेक टेक्नोलॉजी कंपनियों ने बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश किया और ग्राहकों के लिए सुविधाजनक कई तरह के उत्पाद लॉन्च किए। अपने ग्राहकों को बनाए रखने के लिए बैंकों को अपनी प्रक्रिया और उत्पादों को फिर से तैयार करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप ऑटोमेटेड टेलर मशीन (एटीएम) की शुरुआत हुई, जो डिजिटल बैंकिंग की शुरुआत थी।

अगला चरण ग्राहकों की अपेक्षाओं के नए स्तर को पूरा करना था। इसने बैंकों को बेहतर नवाचारों, उत्पादों और सेवाओं के साथ आगे आने के लिए प्रेरित किया। 20वीं सदी के अंत तक, बैंक प्रौद्योगिकी की मदद से ग्राहकों को 24 x7 सेवाएं दे रहे थे। आज, ग्राहक अपने



चंद्रकांत तुंबडे

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर-II

स्मार्टफोन पर बैंकिंग कर्मचारियों की मदद के बिना, कभी भी कहीं भी बैंकिंग सुविधा अपने साथ ले जा सकते हैं।

डिजिटल बैंकिंग के लाभ

डिजिटल बैंकिंग का उद्देश्य बैंक के ग्राहकों के लिए जीवन को आसान बनाना है। इसके कुछ लाभ इस प्रकार हैं।

- घर बैठे बैंकिंग की सुविधा
- बैंकिंग कार्यों तक 24*7 पहुंच की उपलब्धता
- कागज रहित बैंकिंग
- नियमित उपयोगिता बिलों के लिए स्वचालित भुगतान की व्यवस्था सक्षम करता है
- ऑनलाइन शॉपिंग आदि के लिए ऑनलाइन भुगतान की सुविधा प्रदान करता है
- दूरदराज के क्षेत्रों तक बैंकिंग सेवाओं का विस्तार
- डिजिटल फंड ट्रांसफर से नकली मुद्रा का जोखिम कम हो जाता है
- ग्राहकों के लिए गोपनीयता और सुरक्षा को मजबूत करता है
- खोए हुए क्रेडिट कार्ड की तुरंत रिपोर्ट करने और ब्लॉक करने की सुविधा देता है
- काले धन के प्रचलन पर रोक
- मुद्रा की ढलाई की मांग कम हो जाती है

भारत में डिजिटल बैंकिंग

भारत में, केवाईसी के लिए भौतिक सत्यापन से आगे बढ़कर, बेहतर प्रक्रिया के लिए बाजार नियामक द्वारा वीडियो-आधारित सत्यापन

शुरू किया जा सकता है। कई बैंक डिजिटल बचत खाते भी पेश कर रहे हैं। ये खाते मूल बचत खाते के समान हैं, जो उपयोगकर्ताओं को न्यूनतम शेष राशि बनाए रखने के बिना पूर्ण बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान करते हैं, जिसमें वर्चुअल डेबिट कार्ड को भौतिक डेबिट कार्ड में बदला जा सकता है।

भारत में कुछ सर्वोत्तम शून्य शेष डिजिटल बचत बैंक खाते

- एक्सिस बैंक ASAP
- डिजीसेविंग्स - डीबीएस
- कोटक 811
- पाँकेट्स और इंस्टा सेव एफसी खाता - आईसीआईसीआई बैंक
- इंडस ऑनलाइन बचत खाता - इंडसइंड
- डिजिटल बैंकिंग का भविष्य

शोध के अनुसार, पूर्णतः डिजिटल बैंक बनने के लिए बैंक के पास होना चाहिए

- मुद्रा ऑर्डर करने का विकल्प
- अनुकूलन योग्य खड़े होने के विकल्प
- कार्ड ब्लॉकिंग सुविधा
- सुरक्षा तिजोरियों की दिशा में नवाचार
- कर छूट स्थिति से जुड़े खाते
- शेयर बाजार निवेश चैनलों के साथ एकीकरण
- वित्तीय प्रबंधन विश्लेषण
- विभिन्न बैंकों के खातों का समूहीकरण
- आसानी से सुलभ सहायता

भौतिक शाखा बैंकिंग को पूरी तरह से डिजिटल बैंकिंग से बदलने में कुछ समय लगेगा। ग्राहक ऋण लेने या इसके लिए शर्तों पर बातचीत करने जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए मानवीय संपर्क को प्राथमिकता देते हैं। हालाँकि, डिजिटल बैंकिंग आवर्ती बैंकिंग आवश्यक कार्यों के लिए उपयोगी साबित हो रही है।

इसलिए, सोशल मीडिया अब बैंकिंग उद्योग की कार्य-पुस्तिका को पुनः लिख रहा है, जिससे बैंकों को अपने मौजूदा या संभावित ग्राहकों से जुड़ने, संपर्क बढ़ाने, विश्वास बनाने और गुणवत्ता और सुरक्षा से समझौता किए बिना मूल्य प्रदान करने की सुविधा मिल रही है।

क्या आप यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि बैंकिंग उद्योग अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए सोशल मीडिया का किस तरह से लाभ उठा रहा है? पढ़ते रहिए और जानिए कि किस तरह से सोशल मीडिया बैंकिंग हर दिन नई ऊँचाइयों को छू रही है।



डिजिटल बैंकिंग इंटरनेट कनेक्शन द्वारा समर्थित ऑनलाइन बैंकिंग है। पारंपरिक बैंकों को राहत मिल रही है, क्योंकि ग्राहक ट्रैफिक का एक बड़ा हिस्सा डिजिटल बैंकिंग ऐप और नेट बैंकिंग द्वारा प्रबंधित किया जा रहा है। ग्राहक स्मार्टफोन, टैब, लैपटॉप, डेस्कटॉप और एटीएम जैसे डिजिटल उपकरणों के माध्यम से आसानी से अपने खातों और भुगतानों तक पहुँच सकते हैं। डिजिटल वॉलेट, बैंक ऐप और संपर्क रहित और कैशलेस भुगतान की लोकप्रियता ने गति पकड़ी क्योंकि अधिक से अधिक लोगों को डिजिटल बैंकिंग के लाभों का एहसास हुआ।

यह चलन अभी भी जारी है क्योंकि डिजिटल बैंकिंग की विशेषताएं निस्संदेह अधिक ग्राहक-केंद्रित हैं। डिजिटल बैंक 24x7 काम करते हैं और आपकी सुविधानुसार आपकी सेवा करने के लिए तैयार रहते हैं। इस तेज़ रफ़्तार दुनिया में जहाँ समय ही पैसा है, रिस्पॉन्सिव सेवाएँ एक वरदान हैं। हालाँकि फायदे चुनौतियों से ज़्यादा हैं, आइए हम आपको डिजिटल बैंकिंग के फायदे और चुनौतियों दोनों से रूबरू कराते हैं।

डिजिटल बैंकिंग के लाभ

वोका के उत्पाद उपाध्यक्ष एलाड हॉफमैन कहते हैं, यह जरूरी है कि ग्राहक यात्रा में हर कदम बैंक द्वारा ग्राहक के इतिहास और संदर्भ को समझने से शुरू हो - अब तक की यात्रा के दौरान उन्होंने जो कुछ भी अर्जित किया है। जबकि बैंक ग्राहकों के साथ अपने संपर्क को फिर से परिभाषित करते हैं, आइए हम समझें कि ग्राहकों को इस पूर्ण परिवर्तन की ओर क्या प्रेरित करेगा। ग्राहक-केंद्रित डिजिटल समाधान इस परिवर्तन की कुंजी होंगे। डिजिटल बैंकिंग में स्मार्ट डिजिटल संस्कृति की ओर अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करने के लिए कई फायदे हैं।

सुविधा का लाभ उठाना: डिजिटल बैंकिंग के सबसे बड़े लाभों में से एक प्रमुख लाभ यह है कि इसमें कहीं भी, कभी भी बैंकिंग की सुविधा मिलती है।

त्वरित डिलीवरी: किसी भी समय बैंकिंग की सुविधा के साथ-साथ, एक अच्छा इंटरनेट कनेक्शन आपको त्वरित बैंकिंग का आनंद लेने में मदद करता है।

सुरक्षा सुनिश्चित: बैंकों के पास जटिल कोड होते हैं जिनका उल्लंघन करना मुश्किल होता है। यह उन्हें अत्यधिक वश्वसनीय बनाता है और किसी भी तरह की हेराफेरी को नकारता है।

कई भुगतान विकल्प: डिजिटल बैंकिंग के फायदे भुगतान विकल्पों के विकल्प के साथ अतिरिक्त मूल्य पाते हैं। आप अपने मोबाइल डिवाइस पर बैंकिंग ऐप डाउनलोड कर सकते हैं या अपने डेबिट कार्ड से भुगतान कर सकते हैं। आपके बैंक के मोबाइल ऐप पर कई इंस्टेंट पेमेंट ऐप समर्थित हैं, या आप उन्हें स्वतंत्र रूप से डाउनलोड कर सकते हैं।

डिजिटल बैंकिंग इकाई (डीबीयू) में कियोस्क के अंतर्गत बैंक स्वयं सेवा और सहायक मोड दोनों माध्यम में निम्नलिखित सेवाओं के साथ कार्यरत है:

- एटीएम
- नकद निकासी
- डेबिट कार्ड हेतु ग्रीन पिन विकल्प
- खातों हेतु पुनः केवाईसी पुष्टि
- ऋणों के लिए अनुरोध
- सीआरएम (कैश रीसाइक्लिंग मशीन)
- नकद जमा और निकासी
- डेबिट कार्ड हेतु ग्रीन पिन विकल्प
- खातों हेतु पुनः केवाईसी पुष्टि
- ऋणों के लिए अनुरोध
- बहुआयामी कियोस्क
- उसी बैंक में और अन्य बैंक में रु. 5000/- तक का निधि अंतरण
- डेबिट और क्रेडिट कार्ड को ब्लॉक / हॉटलिस्ट करना
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) हेतु आवेदन करना
- लघु विवरण (मिनी स्टेटमेंट)
- चेक बुक हेतु अनुरोध
- स्वयं पासबुक मुद्रित करना

- आवर्ती जमा हेतु स्थायी अनुदेश सेटिंग
- इंटरैक्टिव टैब
- वीडियो-केवाईसी के माध्यम से बचत खाता खोलना
- बिल भुगतान
- तत्काल ऋण - शिशु मुद्रा, मुद्रा - किशोर और तरुण, नारी शक्ति, जीएसटी लाभ, टीयर ख संस्थानों हेतु शिक्षा ऋण, यूनिजन कैश डिजिटल-पेंशनर ऋण, डिजिटल केसीसी फ्रेश (वर्तमान में केवल डिजिटल बैंकिंग इकाई (डीबीयू) सागर में) हेतु एसटीपी जर्नी

पीएसबी59 पोर्टल के माध्यम से तत्काल ऋण स्वीकृति, जन समर्थ नेशनल पोर्टल के माध्यम से सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं हेतु आवेदन

- अटल पेंशन योजना हेतु आवेदन
- नामांकन हेतु पंजीकरण
- वैयक्तिकृत डेबिट कार्ड हेतु आवेदन
- ग्राहक शिकायतों और फीडबैक को स्वीकार करना एवं ट्रैक करना
- सेल्फ-पासबुक प्रिंटिंग कियोस्क
- अर्द्ध-स्वचालित स्वयं-पासबुक प्रिंटर
- इंटरनेट बैंकिंग कियोस्क/पीसी
- जिन ग्राहकों के पास लेनदेन करने हेतु घर या कार्यस्थल पर पीसी/लैपटॉप नहीं है, उनके लिए इंटरनेट बैंकिंग सुविधा प्रदान करना

डिजिटल बैंकिंग में चुनौतियाँ

कोविड के दौरान डिजिटल बैंकिंग पर निर्भरता बढ़ी है। डिजिटल बैंकिंग ने प्रौद्योगिकी आधारित खाता खोलने, डिजिटल ऋण देने, धन और निवेश को बढ़ावा दिया है। बैंकिंग अधिक सुलभ है, और बेहतर प्रौद्योगिकी के लिए ग्राहकों की रुचि बढ़ रही है। हालांकि, बढ़ती मांग और डिजिटल बैंकिंग दबाव के साथ, बैंकों को डिजिटल बैंकिंग अनुपालन के विभिन्न पहलुओं में नए ग्राहक व्यवहार से निपटने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। यहाँ एक त्वरित अवलोकन दिया गया है।

नवाचार के माध्यम से बैंकिंग आदतों और उत्पादों में बदलाव

त्वरित ग्राहक सेवा प्राथमिक फोकस होने के कारण, बैंकों को अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर तेज़ नेटवर्क प्रदान करने और ग्राहकों की चपलता को सुविधाजनक बनाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। डिजिटल लेन-देन लोकप्रिय हो रहे हैं और गैर-नकद भुगतान की मात्रा बढ़ रही है, इसलिए सभी वित्तीय सेवाओं के लिए इंटरैक्टिव टूल और कस्टमाइज़्ड उत्पादों के माध्यम से वित्तीय समाधान बनाना मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

ग्राहकों की मांगों को पूरा करने वाले उत्पादों को स्थानीय भाषा में इस तरह से प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि यह देश के विशेष रूप से टियर 2 और उससे आगे के क्षेत्रों में कम साक्षर आबादी तक पहुँच सके। नए उत्पादों को पेश करते समय विवाद प्रबंधन को कुशलतापूर्वक संभाला जाना चाहिए। ग्राहक की पसंद और उत्पाद आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए अधिक सटीकता प्रदान करने वाले ग्राहक वास्तविक समय अंतर्दृष्टि विश्लेषण को तेज़ी से पुनर्प्राप्त किया जाना चाहिए।

सुरक्षा चिंताएं

ग्राहकों की सुविधा के लिए डिजिटल बैंकिंग के प्रचलन में तेजी आने के साथ ही वित्तीय लेन-देन में धोखाधड़ी का खतरा ग्राहकों और बैंकों दोनों को ही ठगों के सामने ला खड़ा करता है। बैंक ग्राहकों के बीच जागरूकता फैलाने की दिशा में काम कर रहे हैं कि ग्राहकों को किन खतरों का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें कभी भी किसी अनजान कॉल करने वाले/ईमेल/संदेशों को गोपनीय वित्तीय जानकारी नहीं देनी चाहिए। बैंक ग्राहकों को सलाह देते हैं कि वे यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर (URL) की जाँच किए बिना कभी भी अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें। बैंकिंग लेन-देन के लिए आधिकारिक बैंकिंग ऐप या बैंक की आधिकारिक वेबसाइट का उपयोग किया जाना चाहिए। गोपनीय जानकारी प्राप्त करने के लिए धोखाधड़ी का लगातार खतरा बना रहता है:

क्रेडिट कार्ड के बहाने वित्तीय जानकारी साझा करना।

फ़िशिंग: नकली ईमेल/एसएमएस, जो इस प्रकार डिज़ाइन किए गए हों कि ग्राहक को लगे कि यह बैंक से आया है।

रिमोट एक्सेस: ग्राहक अनजाने में अपने मोबाइल/कम्प्यूटर पर कोई एप्लीकेशन डाउनलोड कर लेते हैं, जिससे ग्राहक डेटा तक पहुंच मिल जाती है।

पैसे एकत्र करने के लिए फर्जी संदेश भेजकर यूपीआई 'कलेक्ट रिक्वेस्ट' का दुरुपयोग करना। फर्जी बैंक नंबर/ई-वॉलेट/गलत सर्वर इंजन परिणाम/सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी। बैंकों को ग्राहकों को विश्वास में लेकर उन्हें यह जानकारी देने के लिए विशेष उपाय करने की आवश्यकता है कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, ताकि वे इन धोखाधड़ी गतिविधियों का शिकार होने से बच सकें।

तकनीकी मुद्दे:

बैंकों के लिए कनेक्टिविटी में विफलता और लगातार और सटीक डेटा की कमी एक बड़ी चिंता है। बैंक डिजिटल तकनीकों से बढ़ती

मांग के कारण होने वाली समस्याओं को पहले से ही हल करने की दिशा में काम कर रहे हैं। ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं के कारण तकनीकी रूप से उन्नत प्रणालियों पर भरोसा करना और बेहतर और तेज़ बैंकिंग न्यूनतम अपेक्षा है। बैंकों को कोर बैंकिंग सिस्टम पर आधारित बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए इंजीनियरों की SaaS टीमों को तैनात करना चाहिए जो आज की नई तकनीकों को पूरा करने के लिए कुछ हद तक पुराने हो चुके हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंकिंग डिजिटल सेवा भविष्य की तकनीकों को अपग्रेड और अपना सके।

व्यक्तिगत संबंधों का अभाव

ग्राहक सेवा एक महत्वपूर्ण कारक है जिसके माध्यम से बैंक अपने नए ग्राहक आधार को बनाए रखते हैं और प्राप्त करते हैं। सेवा प्रदाता के साथ खराब अनुभव को रिलेशनशिप ऑफिसर द्वारा सही समय पर कम नहीं किया जाना बैंक की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता है। डिजिटल बैंकिंग में तकनीक के पहले चेहरे के रूप में, गैर-मानव बॉट और ग्राहक सेवा हेल्पलाइन धीरे-धीरे व्यक्तिगत सेवा की जगह ले रहे हैं जिसे ग्राहक अभी भी पसंद करते हैं। ये स्वचालित सेवाएँ ग्राहकों को निराश कर सकती हैं और उन्हें छोड़ने पर मजबूर कर सकती हैं। अधिकांश ऑनलाइन बैंकिंग ऐप ग्राहकों के लिए संभावित प्रश्नों के सेट बना रहे हैं, ताकि समस्याओं का समाधान किया जा सके। लेकिन सभी प्रश्न ग्राहकों द्वारा उठाई गई विशिष्ट समस्याओं को संबोधित नहीं करते हैं। लोगों के पास समय की कमी है और वे अधिकतर अधीर होते हैं। वे तुरंत जवाब देना पसंद करते हैं। इसलिए, जब कोई यह जानना चाहता है कि ऋण लेने की प्रक्रिया में क्या शामिल है, तो उन्हें इसी तरह के सवालियों की एक सूची दी जाती है, जो ग्राहकों को परेशान करती है और उन्हें दूसरे सेवा प्रदाता के पास जाने के लिए हतोत्साहित करती है।

ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाएँ

ग्राहक तेजी से नए-नए ऑनलाइन उत्पादों और सेवाओं की ओर रुख कर रहे हैं। अगस्त 2023 में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) के माध्यम से भारत के डिजिटल भुगतान में 21.2 लाख रुपये की बढ़ोतरी इस बदलाव का सबूत है। महामारी के दौरान ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग ने भी तेजी से तरक्की की। ग्राहक अपने बैंकिंग ऐप से तेज और बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद कर रहे हैं।

डिजिटल बैंकिंग की सामान्य विशेषताएं

- डिजिटल बैंकिंग की सबसे आम विशेषताएं इस प्रकार हैं:
- सुरक्षित और सुविधाजनक प्लेटफॉर्म के माध्यम से निर्देशित बैंकिंग
- प्लेटफॉर्म पासवर्ड से सुरक्षित होना चाहिए
- ग्राहकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं का उपयोग करना आसान लगना चाहिए

- डिजिटल बैंकिंग खाता आसानी से सुलभ होना चाहिए
- प्लेटफॉर्म को नवीनतम अपडेट किए गए शेष राशि, अंतिम लेनदेन और खाता विवरणों के साथ ट्रेकिंग के आसान प्रबंधन को सक्षम करना चाहिए
- ऑनलाइन फंड ट्रांसफर के लिए डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं को बिना किसी रुकावट के NEFT, RTGS और IMPS का समर्थन करना चाहिए।
- इसमें त्वरित स्वचालित बिल प्रसंस्करण का विकल्प होना चाहिए
- निवेश और ऋण पर नज़र रखें
- स्वचालित भुगतान रद्द करें

सभी उद्योग विनियमों का अनुपालन करने तथा ग्राहक डेटा गोपनीयता की रक्षा करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, आप सोचेंगे कि बैंक सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति स्थापित करने की जहमत नहीं उठाएंगे।

लेकिन, जैसा कि पता चला, उन्होंने पाया कि यह प्रयास सार्थक है, और कई बैंक सोशल मीडिया पर अत्यधिक सक्रिय हैं। इस सवाल का जवाब देने के लिए कि सोशल मीडिया बैंकिंग समझ में आती है या नहीं, यह विचार करना पर्याप्त है कि यह माध्यम बैंकिंग उद्योग को क्या लाभ पहुंचाता है।

अपने ब्रांड के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना

लोग अब सिर्फ कॉफी मशीन खरीदने के लिए ही सोशल मीडिया का सहारा नहीं लेते, बल्कि वे बड़े फैसले लेने के लिए भी इस पर निर्भर करते हैं, जैसे ऋण के लिए बैंक का चयन करना।

इस संबंध में, बैंकों को सोशल मीडिया पर होने से लाभ होता है क्योंकि इससे उन्हें जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलती है, साथ ही विश्वास, पारदर्शिता और विश्वसनीयता की छवि बनती है, जो महत्वपूर्ण कारक हैं, जिन्हें लोग अपने वित्त को संभालने के लिए बैंक चुनते समय ध्यान में रखते हैं।

अपने दर्शकों के साथ संवाद स्थापित करना

दर्शकों से दोतरफ़ा बातचीत कर सकते हैं और उनकी ज़रूरतों और प्राथमिकताओं के बारे में मूल्यवान जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

ग्राहक सहायता में सुधार

आजकल, लोग किसी निश्चित ब्रांड या उत्पाद के प्रति अपनी भावनाओं को जल्द से जल्द और स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए उत्सुक हैं।

टिप्पणी अनुभाग नए संदेश बोर्ड और ग्राहक सहायता चैट बन गए हैं।

इसलिए, सोशल मीडिया बैंकों को पहले से कहीं ज़्यादा ग्राहकों की समस्याओं पर नज़र रखने, उन्हें पकड़ने और हल करने में मदद कर सकता है। ऐसा होने के लिए, सोशल मीडिया और ग्राहक सहायता टीमों को बहुत बारीकी से काम करने की ज़रूरत है ताकि कोई भी ग्राहक फ़ीडबैक छूट न जाए।

अपने उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करना

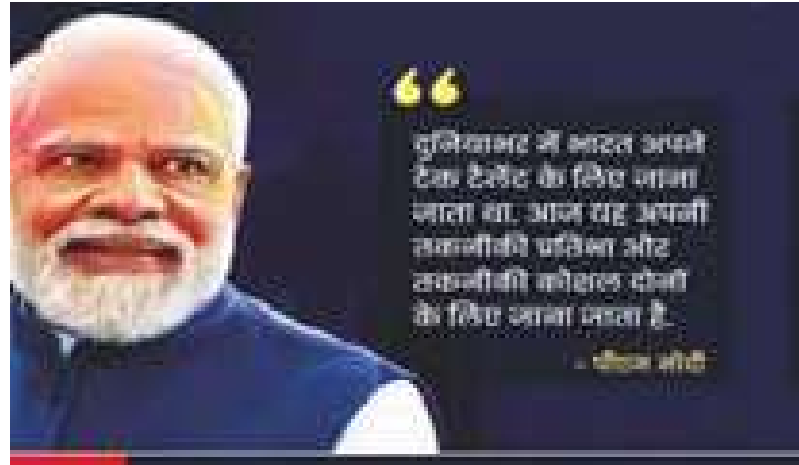
विभिन्न बैंकों का सोशल मीडिया के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण है, लेकिन बैंकों के अधिकांश सोशल मीडिया खातों में एक बात समान है कि वे अपने उपयोगकर्ताओं को यह शिक्षित करने के लिए कृतसंकल्प हैं कि उन्हें अपने उत्पाद का उपयोग कैसे करना है तथा सामान्य रूप से वित्तीय क्षेत्र में किस प्रकार काम करना है।

इस दृष्टिकोण से अंतिम उपयोगकर्ता और बैंक दोनों को लाभ होता है।

यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि सोशल मीडिया बैंकिंग की दुनिया जितनी उम्मीद की जा सकती है, उससे कहीं ज़्यादा विविधतापूर्ण है। शायद सबसे महत्वपूर्ण अंतर पारंपरिक, भौतिक शाखा बैंकिंग के बीच है, जिनकी ऑनलाइन उपस्थिति भी है और ऐसे बैंक जो विशेष रूप से ऑनलाइन काम करते हैं और सोशल मीडिया पर भी सक्रिय हैं।

सोशल मीडिया बैंकिंग उद्योग के मेरे विश्लेषण से, बैंकों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करने के तरीके में अंतर को पोस्टिंग करने वाले बैंक के प्रकार को देखकर समझाया जा सकता है।

यह कोई सख्त नियम नहीं है, लेकिन आम तौर पर, पारंपरिक बैंक सोशल मीडिया पर अपनी आवाज़ के लहज़े में अधिक रूढ़िवादी होते हैं, जबकि ऑनलाइन बैंकों का सोशल नेटवर्क पर एक बोल्ड लहज़ा और अधिक जीवंत व्यक्तित्व होता है।





आलेख

हेल्थ इश्योरेंस: जरूरत, लाभ और चुनौतियां

स्वास्थ्य को अच्छी तरह समझने एवं जागरूक होने के बाद यह अनिश्चता का एक क्षेत्र है। आज के दौर में हमें अपने कार्य क्षेत्र और जीवन शैली में सामंजस्य बैठाना पड़ता है जहां किसी एक चीज से ध्यान हटा नहीं कि दूसरी बिगड़ने लगती है यहां हम ज्यादातर लोग अपने कार्यों को ज्यादा महत्व देते हुए अपने स्वास्थ्य से समझौता कर लेते हैं, हमारे जीवन में चल रही इसी उथल-पुथल में सामंजस्य बिठाते हुए कब हम अपने स्वास्थ्य से दूरियां बना लेते हैं हमें पता ही नहीं चलता और एक दिन जीवन में आने वाली कोई भी अनायास घटना कब हमारे स्वास्थ्य को बिल्कुल बदल दे इसके लिए हम तैयार नहीं रहते।

गौर करने की बात यह है कि परिवार में किसी एक व्यक्ति का अस्वस्थ होना न सिर्फ उस व्यक्ति के लिए कष्टदायक है अपितु पूरे परिवार के लिए एक चिंता का विषय होता है, यह चिंता केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य के प्रति ही नहीं बल्कि उसके उपचार में आने वाले खर्चों के प्रति भी होती है जो किसी भी परिवार की आर्थिक स्थिति को बुरी तरह प्रभावित कर सकती है। एक अस्वस्थ व्यक्ति यदि परिवार का मुखिया हो या पालक हो तो उसमें यह सब सोचने समझने का समर्थ नहीं रह जाता और आर्थिक संकट पूरे परिवार को झेलना पड़ता है, इसलिए एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए जागरूकता एवं समझदारी की जरूरत है जिसमें स्वास्थ्य बीमा का महत्व प्रमुख है।

स्वास्थ्य बीमा में आधुनिक समय में बदलते वातावरण के साथ नई विशेषताएं भी आ रही हैं जो उपभोक्ताओं को और आकर्षित कर रही हैं, इस लेख में हम स्वास्थ्य बीमा के महत्व, नई विशेषताएं और उपभोक्ता व्यवहार के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

जब टीवी फ्रिज एसी में स्टेबलाइजर लगवा सकते हैं तो स्वास्थ्य बीमा क्यों नहीं ?

टीवी फ्रिज जैसे उपकरण महंगे होते हैं और लंबे समय तक उपयोग में आने के लिए खरीदे जाते हैं, विद्युत से संचालित होने वाले यह



शिखर प्रजापति

ग्राहक सेवा सहयोगी
आष्टा शाखा

उपकरणों का विद्युत में होने वाले उतार-चढ़ावों के होने से खराब होने की आशंका बनी रहती है। एक छोटे से कल पुर्जे के खराब होने से लेकर किसी बड़ी दुर्घटना के होने का अंदेशा बना रहता है, इन्हीं परिस्थितियों से बचने के लिए हम इनमें स्टेबलाइजर लगवाते हैं जो दिन भर में आने वाले उतार चढ़ावों को झेलते हुए हमारे महंगे उपकरणों को सतत बचाता रहता है और गौरतलब बात यह भी है कि उसे छोटे से स्टेबलाइजर की कीमत हमारे महंगे उपकरण की कीमत 0.5% से 5% के बराबर भी नहीं बैठती होगी।

इसी प्रकार स्वास्थ्य बीमा का होना हमारे स्वास्थ्य और वित्तीय सुरक्षा में एक अहम भूमिका निभाता है। यह एक प्रकार का साधन है जिसमें बीमा कंपनियों द्वारा प्रीमियम भुगतान के बाद आपके चिकित्सा खर्चों का भुगतान किया जाता है।

स्वास्थ्य बीमा आपको आकस्मिक चिकित्सीय खर्चों से बचाने में मदद करता है और यह आपको आर्थिक तौर पर इस प्रकार से सुरक्षित करता है कि आप बड़े चिकित्सीय खर्चों के साथ समझदारी से निपट सकें एक स्वस्थ बीमा कंपनी का कई छोटे बड़े अस्पतालों के साथ अनुबंध रहता है जिसमें किसी व्यक्ति के अस्पताल में भर्ती होने के दौरान नियमों और शर्तों के अधीन सभी शुल्क बीमा कंपनी द्वारा अनुबंधित अस्पताल को सीधे भुगतान किया जाता है। पॉलिसी धारक को कोई नगद भुगतान नहीं करना पड़ता है। इस व्यवस्था को कैश लेस सुविधा भी कहते हैं।

लेख के लिखने तक कैशलैस इश्योरेंस को लेकर आईआरडीए एवं जनरल इश्योरेंस काउंसिल ने मिलकर आमजन के लिए 100% कैशलैस इश्योरेंस हासिल करने के प्रयास में एक बड़ा निर्णय लिया है, जिसके अनुसार अब सभी हेल्थ इश्योरेंस पॉलिसी धारक को



आकस्मिक या पूर्व नियोजित अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में अपने पसंद के गैर अनुबंध अस्पताल में भी केशलेस सुविधा प्राप्त हो सकती है, इसमें हर कंपनी की अपनी कुछ बाध्यताएं रहेगी जैसे पूर्व नियोजित भर्ती होने की स्थिति में कंपनी को 48 से 72 घंटे पहले और आकस्मिक भर्ती होने की स्थिति में 24 घंटे के भीतर सूचित करना अनिवार्य रहेगा।

यह सुविधा एकल व्यक्ति या परिवार के लिए भी ली जा सकती है इस प्रकार की अनुबंधित व्यवस्था के चलते अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में किसी व्यक्ति को तत्काल उपचार मिल सकता है और चिकित्सा खर्चों के भुगतान के लिए नकदी की व्यवस्था करने की परेशानी से बच सकते हैं। गैर अनुबंध अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में कंपनी द्वारा आपको अस्पताल के बिल एवं दावों के अनुसार धनराशि की प्रतिपूर्ति करती है। दोनों ही स्थिति में आपकी जमा पूंजी की सुरक्षा ही होती है। अस्पताल में मौजूद कंपनी के टी पी ए या ग्राहक सहायता टीम किसी भी प्रकार की संबंधित कागजी कार्यवाही या दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया को आसान और सुलभ बनाने में मदद करते हैं।

स्वास्थ्य बीमा के बारे में हमारी जानकारी और स्थिति:

एक निजी फार्म पे नियर बाय द्वारा किए गए सर्वेक्षण में चौंकाने वाले आंकड़े आए हैं:

- 75% अर्ध शहरी एवं ग्रामीण आबादी के पास आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता नहीं है।
- एक सर्वे + के अनुसार लगभग 55% लोगों का कहना है कि उन्हें बीमा के बारे में कभी सुना ही नहीं है और 70% ने कहा कि उनके पास स्वास्थ्य बीमा नहीं है।

- उन लोगों के बीच जो जागरूक है सिर्फ 32 प्रतिशत ने कहा कि उन्होंने कभी बीमा लिया है जिनमें से केवल 28% ने अपने और परिवार के लिए स्वास्थ्य बीमा लिया है।

लोगों द्वारा बीमा नहीं लेने के कारण:

- सर्वेक्षण के दौरान 38% लोगों द्वारा बीमा खरीदने में असमर्थता सबसे बड़ी अड़चन है।
- 36 प्रतिशत द्वारा बीमा कैसे और कहां से खरीदने की अनिश्चितता प्रकट की है।
- 24% ने कहा कि उन्हें बीमा के फायदे के बारे में जानकारी नहीं।
- 32% लोग बीमा कंपनियों की सीमित संख्या और जानकारी के अभाव को वजह बताते हैं।
- 28% द्वारा उच्च प्रीमियम, 15% जटिल दस्तावेजीकरण प्रक्रिया, 18% विशिष्ट स्वास्थ्य देखभाल के लिए सीमित कवरेज और भाषा एवं जागरूकता से संबंधित बाधाओं के लिए 7% को कारण मानते हैं।
- जिनके पास बीमा है, उनमें 88% सरकार या राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित बीमा योजनाओं के अधीन आते हैं और 10% से भी कम ने निजी कंपनियों से बीमा लिया है जैसा कि स्वास्थ्य सर्वेक्षण में कहा गया है।

अब जानते हैं कि बीमा ना होने की स्थिति में लोगों द्वारा किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा:

लगभग 23 प्रतिशत लोगों द्वारा अस्पताल के खर्चों को वहन करने के लिए अनौपचारिक ऋण एवं उधारी का सहारा लेना पड़ा जहाँ:

- 6% लोगों ने कहा कि उन्हें चिकित्सा संबंधी बिल चुकाने के लिए अपनी संपत्ति बेचनी पड़ी।
- 53% में दावा किया कि उन्हें अपनी बचत का उपयोग चिकित्सीय खर्चों को बांटने के लिए किया।
- लगभग 45% उत्तरदाताओं द्वारा कहा गया कि उन्हें चिकित्सा एवं संबंधित सेवाओं के लिए अपने क्षेत्र से 10 किलोमीटर तक का सफर तय करना पड़ा।

उपरोक्त कहीं बातों से हमें अब स्वास्थ्य बीमा का महत्व अब समझ में आने लगा होगा। अब हम समझते हैं कि स्वास्थ्य बीमा कार्य कैसे करता है, उसकी विशेषताएं क्या होती हैं और इसके होने का क्या वित्तीय व मानसिक लाभ होता है।

जैसा कि पहले हमने यह जाना की बीमा पॉलिसी में कैशलेस सुविधा होती है, यह उसकी अनेक खूबियां में से एक विशिष्टता है, अब जानते हैं कि बाजार में मौजूद अनेक पॉलिसियों के कुछ सामान्य और खास विशेषताएं जो ग्राहकों की ज़रूरत और क्रय क्षमता के अनुसार सही पॉलिसी चुनने में मदद करती है:

संचर्ड बोनस/अधिलाभ:

यह पॉलिसी धारकों को बीमा क्लेम न करने के लिए कुछ अतिरिक्त लाभ के रूप में प्रदान किया जाता है पॉलिसी धारक द्वारा किसी वर्ष या कुछ वर्षों तक बीमा क्लेम न करने की स्थिति में कंपनी द्वारा इनाम या प्रतिफल पारितोषिक के रूप में ग्राहकों को अग्रेषित किया जाता है, कुछ कंपनियां बीमा राशि में ही यह लाभ जोड़ देती हैं और कुछ इस ग्राहक द्वारा पॉलिसी नवीनीकरण करने पर छूट के रूप में प्रदान करती हैं। संचर्ड बोनस बीमा राशि के बराबर या उससे अधिक भी प्रदान किया जाता है।

स्वचालित पुनर्स्थापना लाभ या ऑटोमेटिक रिस्टोर बेनिफिट:

इस सुविधा में किसी भी पॉलिसी वर्ष में बीमित द्वारा बीमा के पूर्ण या आंशिक उपयोग की स्थिति में कंपनी द्वारा आपकी बीमा राशि को पुनः स्थापित या रिस्टोर किया जाता है। इस सुविधा से ग्राहक को किसी पॉलिसी वर्ष में दोबारा बीमार होने की स्थिति में खुद को आर्थिक रूप से सुरक्षा प्रदान करने का दूसरा मौका मिल जाता है।

आयुष उपचार लाभ:

आजकल कंपनियां अपने ग्राहकों को उनके अनुरूप चिकित्सा पद्धति चुनने का विकल्प देती हैं, एलोपैथी के अलावा होम्योपैथी, आयुर्वेद, यूनानी आदि पारंपरिक और गैर पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में इलाज करवाने पर भी बीमा क्लेम मिलता है।

घरेलू उपचार या डोमिसिलेरी ट्रीटमेंट:

आमतौर पर कंपनी द्वारा बीमा क्लेम का भुगतान तब किया जाता है जब मरीज किसी चिकित्सालय में कम से कम 24 घंटे दाखिल रहे लेकिन डोमिसिलेरी ट्रीटमेंट एक ऐसी सुविधा है जिसमें बीमा कंपनी आपके घर पर होने वाले चिकित्सीय उपचार को कवर करती है, जिसमें मरीज को अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत नहीं, ऐसा डॉक्टर की सलाह के अनुसार उन बीमारियों में होता है जिसमें मरीज को अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत नहीं हो (जैसे छोटी बीमारी) या फिर ऐसी स्थिति में हो जिसमें मरीज को अस्पताल तक नहीं लाया जा सकता हो।

हवाई एम्बुलेंस:

डॉक्टर या चिकित्सक की सलाह पर आकस्मिक या आपातकालीन स्थिति में मरीज को किसी दूसरे या बेहतर सुविधा वाले अस्पताल में भर्ती करने हेतु हवाई जहाज से स्थानांतरित करने के लिए एयर एंबुलेंस के उपयोग में होने वाले खर्चों की प्रतिपूर्ति कंपनी द्वारा की जाती है।

दूसरी सलाह या सेकंड ऑपिनियन:

बीमा कंपनी किसी बीमारी या निदान के मुद्दे के संदर्भ में एक और चिकित्सक या विशेषज्ञ के सलाह लेने की सुविधा प्रदान करती है। किसी अन्य विशेषज्ञ या कंपनी द्वारा मनोनीत चिकित्सक, जो भारत या दूसरे देश में हो से दूसरी सलाह लेने में सहायता करती है।

ओपीडी खर्च:

कुछ बीमा कंपनियां ग्राहकों को ओपीडी खर्चों का भुगतान भी करती हैं।

सालाना चेकअप:

बीमा कंपनियां ग्राहकों को सालाना चेकअप के लिए प्रोत्साहित करती हैं। ऐसा करने से किसी ग्राहक के स्वास्थ्य की स्थिति समझने और रोग निवारण में मदद मिलती है। सालाना चेकअप करवाने से ग्राहक अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहता है और किसी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए ऐहतियाती उपाय कर सकता है। यह सुविधा भविष्य में होने वाली किसी बीमारी के रोकथाम या टालने में ग्राहकों को होने वाली और सुविधा और कंपनी का पैसा बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह ग्राहक और कंपनी दोनों के लिए पारस्परिक लाभ की स्थिति हो सकती है।

ऑर्गन डोनर का खर्च

किसी रोगी के अंग प्रत्यारोपण की स्थिति में अंग दानकर्ता के इलाज में होने वाले खर्चों का भुगतान भी कंपनी द्वारा किया जाता है; इसे दान करता को अपने इलाज एवं खर्चों की चिंता नहीं रहती और रोगी को बेहतर उपचार भी मिल जाता है।

मातृत्व लाभ :

कुछ बीमा कंपनियां गर्भावस्था के दौरान से लेकर प्रसव होने तक और उसमें होने वाली जटिलताओं को भी बीमित करती है यह सुविधा भारत में अभी प्रारंभिक चरण में है और बहुत कम कंपनियों द्वारा दी जाती है हालांकि इसमें कई नियम व शर्तें भी रहते हैं लेकिन इसमें सुधार और दायरा बढ़ाने की बहुत संभावनाएं हैं।

गैर चिकित्सीय खर्च :

गैर चिकित्सीय खर्च जैसे दस्ताने, सिरिंज, बैंडेज इत्यादि जो कोविड के दौरान अस्पताल के खर्चों का लगभग 40% तक का हिस्सा थे, वह भी अब कंपनियों द्वारा बीमा में समायोजित किए जाते हैं। कोविड के दौरान लोगों को इलाज से ज्यादा गैर चिकित्सक खर्चों ने परेशान किया और कई लोगों की आर्थिक हालात तक बिगड़ गई थी। लोगों की मांग के अनुसार अब लगभग सभी कंपनियां इस प्रकार के खर्चों को अनिवार्य रूप से पॉलिसी में सम्मिलित करती हैं।

अस्पताल में भर्ती होने के पहले और बात के खर्च (प्री और पोस्ट हॉस्पिटलाइजेशन)

प्री हॉस्पिटलाइजेशन: यह वह खर्च होते हैं जो पॉलिसी धारक के चिकित्सालय में भर्ती होने से पहले के होते हैं जैसे कि डॉक्टर की सलाह पर निर्धारित टेस्ट जांच और उपचार जिसमें आपके इलाज शुरू होने से पहले के खर्चों को सम्मिलित किया जाता है जिससे आपका वित्तीय बोझ कम होता है।

पोस्ट हॉस्पिटलाइजेशन:

यह पॉलिसी धारक के अस्पताल से डिस्चार्ज या छुट्टी होने के बाद के खर्चों जैसे दवाइयां एवं अन्य उपचार को सम्मिलित करता है, यह दोनों ही खर्च (प्री हॉस्पिटलाइजेशन 60 से 90 दिन) और पोस्ट हॉस्पिटलाइजेशन (90 से 180 दिन) तक कंपनी द्वारा वहन किए जाते हैं।

प्रीमियम भुगतान अवधि:

कई स्वास्थ्य बीमा कंपनी अपने ग्राहकों को बीमा के प्रीमियम का भुगतान आसान और व्यावहारिक किस्तों के रूप में या एकमुश्त सुविधा के रूप में प्रदान करती हैं। ग्राहक अपनी क्रय योग्यता के अनुसार मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक प्रीमियम का भुगतान भी कर सकते हैं। 1 साल से अधिक की पॉलिसी लेकर वह कंपनी द्वारा दिए जाने वाले कई प्रकार की छूट या अधिलाभ का भी फायदा उठा सकते हैं।

डे केयर:

ऐसी चिकित्सीय प्रक्रियाएं जिसमें मरीज को अस्पताल में पूरा दिन या 24 घंटे नहीं बिताना पड़ता; इनका भुगतान भी स्वास्थ्य बीमा द्वारा किया जाता है। इस प्रकार की प्रक्रियाओं में आमतौर पर छोटी सर्जरी, टेस्ट इत्यादि होते हैं और यह सुविधा बीमा पॉलिसी में विशेष शर्तों और नीतियों के तहत उपलब्ध रहती हैं।

को पेमेंट:

यह एक वित्तीय प्रावधान होता है जिसमें बीमा के प्रीमियम को ग्राहक अपनी क्रय योग्यता के अनुसार एक हद तक कम करवा सकता है। इसमें कंपनी और ग्राहक के बीच अनुबंध होता है जिसमें ग्राहक चिकित्सीय सेवाओं का उपयोग करते समय एक निश्चित राशि (सामान्यतः बीमा का लगभग 20%) का भुगतान कंपनी को करता है और बाकी का भुगतान बीमा कंपनी अस्पताल को करती है। क्योंकि इस प्रकार की सुविधा में ग्राहक कंपनी के साथ यह अनुबंध करता है कि वह बीमा का कुछ हिस्सा खुद वहन करेगा तो कंपनी भी ग्राहक को प्रीमियम में छूट देती है। यह सुविधा कम उम्र के ग्राहकों के लिए ज्यादा उपयोगी रहती है जिनके आमतौर पर चिकित्सालय में भर्ती होने की संभावना बड़ी आयु वर्ग के मुकाबले कम होती है इससे वह लंबे समय तक प्रीमियम में छूट का फायदा भी उठा सकते हैं।

सुपर टॉप अप हेल्थ प्लान:

यह ग्राहकों को कम कीमत में अतिरिक्त कवर देने के उपयोग में लाया जाने वाला इंश्योरेंस उत्पाद है। ये उन्हीं को अप्रेषित किया जाता है जिनके पास पहले से ही एक बुनियादी बीमा कवर होता है। इससे वे उपचार के दौरान आपके बुनियादी बीमा कवर खत्म होने की स्थिति में सुपर टॉप अप का इस्तेमाल कर सकते हैं, यह सामान्य स्वास्थ्य बीमा के मुकाबले काफी सस्ता भी पड़ता है और बचा हुआ सुपर टॉप अप बीमा अवधि के दौरान उपयोग में लाया जा सकता है।

अनलिमिटेड रिस्टोर सुविधा:

यह सुविधा ग्राहकों के बुनियादी सम इंश्योर्ड के पूर्ण या आंशिक उपयोग पर तुरंत 100% बुनियादी सम एंश्योर्ड को दोबारा जोड़ देता है, यह वैकल्पिक कवर अपने नाम के अनुसार एक पॉलिसी वर्ष में अनगिनत बार लागू हो सकता है और सभी अनुवर्ती क्लेम के लिए उपलब्ध होता है।

यह तो थी एक बीमा पॉलिसी की कुछ आम व खास विशेषताएं आइए समझते हैं स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में उपभोक्ता व्यवहार को:

आईआरडीएआई की एक रिपोर्ट के अनुसार बीमारियों पर होने वाले खर्च का करीब आधा यानी 48% अब भी जेब से खर्च किया जा रहा है, हालांकि सरकारी योजनाओं और इंश्योरेंस की वजह से बीमारियों पर जेब से होने वाले खर्चों में कमी आई है। रिपोर्ट के अनुसार जहां 2014 में 64.2 प्रतिशत खर्च जेब से हो रहे थे वहीं 2019 में यह 48% रह गया। (सोर्स दैनिक भास्कर 1/8/2023)

बीमा खरीदते समय हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए, निम्नलिखित बिंदु कुछ ऐसे कारक हैं जिसकी परिधि में बीमा कंपनी प्रचालन करती है, जैसे:

- अनुबंधित कैशलेस हॉस्पिटल का नेटवर्क
- गैर अनुबंधित अस्पताल एवं ब्लैक लिस्टेड अस्पताल
- क्लेम सेटलमेंट रेश्यो
- पहले से मौजूद बीमारी का खुलासा
- एच आई वी इंफेक्शन
- खेलकूद संबंधी गतिविधि (ऐसे खेल जिसमें स्वास्थ्य का जोखिम हो)
- युद्ध की स्थिति में
- खुद को पहुंचाई गई चोट
- नशा आदि

उपरोक्त परिस्थितियों में कंपनी अपनी नीतियों के अनुसार आपके बीमा दावे को खारिज कर सकती है।

भारत में तेजी से महंगा हो रहा है इलाज:

महंगाई की बात करें तो इसकी रफ्तार भारत में सबसे तेज है। भारत में यह 14 प्रतिशत की दर से महंगा हो रहा है, जबकि चीन में 12% इंडोनेशिया और वियतनाम में 10% व फिलिपींस में 9% की दर से मेडिकल की महंगाई बढ़ रही है (सोर्स दैनिक भास्कर 01/08/23)।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एनएफएस) की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान में सबसे ज्यादा 88% परिवार में काम से कम एक सदस्य इंश्योर्ड है, दूसरे नंबर पर आंध्र प्रदेश है जहां के 80% परिवार में इंश्योर्ड लोग हैं। बीमा के मामले में जम्मू कश्मीर सबसे पीछे हैं, उसके बाद बिहार का नंबर आता है, केंद्र प्रशासित राज्यों में अंडमान निकोबार सबसे पीछे है।

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 95 करोड़ लोग किसी न किसी स्वास्थ्य बीमा का लाभ ले रहे हैं। भारत में इलाज की अच्छी सुविधाएं हैं लेकिन गंभीर बीमारियों का इलाज करना औसत आय वाले परिवार के लिए मुश्किल होता है (दैनिक भास्कर 01/08/23)।

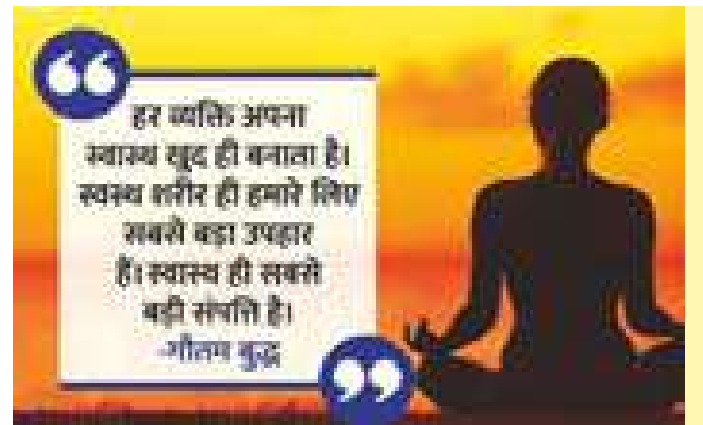
उपरोक्त अनुच्छेद तो यह बताता है कि भारत में कितने लोग बीमित हैं और बीमा का लाभ उठाते हैं, लेकिन क्या उनकी नीमित राशि पर्याप्त है? क्या जरूरत पड़ने पर बीमा राशि कम तो नहीं पड़ जाएगी? आइए जानते हैं:

भारत दुनिया के कुछ सबसे कम इंश्योरेंस (बीमा) लेने वाले देशों में शुमार है और इंश्योरेंस लेने वालों में भी जागरूकता का अभाव दिखाई देता है। फर्स्ट इंश्योरेंस कंपनी एको के एक सर्वे के मुताबिक देश में 68% पॉलिसी धारकों के पास 10 लाख रुपए से कम का हेल्थ कवर है, 27 प्रतिशत के पास पांच लाख से भी कम का मेडिकल कवर है, उपरोक्त पॉलिसी धारकों में से 64% ऐसे हैं जिन्होंने पिछले साल से अपना हेल्थ कवर नहीं बढ़ाया है। (सोर्स दैनिक भास्कर 8/9/23)

बीमा को लेकर देश में बड़े बदलाव हो रहे हैं, यहां पश्चिमी देशों के जैसा माहौल बनता जा रहा है; जहां स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर एवं पेशेवर होती जा रही हैं वहीं इससे लागत भी बढ़ती जा रही है। पश्चिमी देशों में मोटे तौर पर देखा जाए तो ऐसे हालात हैं कि ज्यादातर लोग या तो सरकारी बीमा व्यवस्था से जुड़े हैं या तो निजी बीमा से; चाहे वह किसी भी वित्तीय पृष्ठभूमि से आते हों क्योंकि दैनिक जीवन जैसे भी चल रहा हो लेकिन अगर इलाज करवाने की नौबत आ गई तो बिना बीमा के वहां इलाज करवाना संभव ही नहीं है। भारत में भी यही स्थिति धीरे-धीरे निर्मित हो रही है जिसके लिए हमें अभी से तैयार होना होगा।

बीमा एक ऐसा विषय और उत्पाद है जो भारत में अपनी प्रारंभिक अवस्था को पार करके विकसित होने के चरण में आ रहा है। चाहने न चाहने के बावजूद हमें भविष्य में बीमा; चाहे वह किसी भी रूप में हो की ओर रुख करना पड़ेगा, तो क्यों ना हम खुद को सही तरीके से तैयार करके और खुले मन से इस सुरक्षा कवच को स्वीकार करें और अपना वर्तमान एवं भविष्य सुरक्षित करें क्योंकि:

‘समझदारी का मतलब है कि हमें पता हो कि हमें किस चीज को स्वीकार करना है, किसे बदलने की कोशिश करनी है, और किसे छोड़ देना है।’ - (रेनहोल्ड निबुर)





लघुकथा

सम्मान निधि

माँ, तुम भी न यह क्या पिता जी की जरा सी 10000/- रुपये की पेंशन के लिए इतना माथापच्ची कर रही हो, अरे इससे ज़्यादा तनख्वाह तो हम एक कर्मचारी को दे देते हैं..

कुलदीप अपनी माँ के साथ केनरा बैंक की लंबी कतार में लगने की बजाय माँ को घर वापस ले जाने के लिए आग्रह करने लगा।

वैसे, कुलदीप ने सच ही कहा था, करोड़ों का बिजनेस था उनका, लाखों रुपये तो साल भर में यूँ ही तनख्वाह और भत्ते के नाम पर कर्मचारियों पर निकल जाते हैं, फिर मात्र 10000/- रुपये प्रतिमाह की पेंशन पाने के लिए, केनरा बैंक की लम्बी कतार में खड़े होकर पेंशन की औपचारिकता पूर्ण करने के लिए इतना समय व्यर्थ करने का क्या औचित्य ?

कुलदीप के पिता शैलेंद्र जी का निधन पिछले माह ही बीमारी की वजह से हुआ था, वह लगभग 5 वर्ष पूर्व एक सरकारी स्कूल में प्राध्यापक पद से रिटायर हुए थे, तब से उनके नाम पर पेंशन आया करती थी, शैलेंद्र जी की मृत्यु के उपरांत आधी पेंशन उनकी पत्नी गीता जी को मिलने का शासकीय योजना के अनुसार प्रावधान था, जिसके लिए गीता जी आज केनरा बैंक में अपने बेटे कुलदीप के साथ जाकर पेंशन की औपचारिकता पूर्ण करने आई हुई थी।

उस दिन कुलदीप के बेटे विहान का आठवां जन्मदिन था, उसने अपनी दादी से साइकिल की फ़रमाइश की थी, गीता के खुद के बैंक अकाउंट में पैसे नाममात्र के ही बचे थे, उनकी पेंशन अभी शुरू नहीं हुई थी..इसलिए उन्होंने कुलदीप से 10000/- रुपये माँगें...कुलदीप अपने ऑफिस जाने की तैयारी में व्यस्त था, उसने अचानक माँ के द्वारा दस हजार रुपये की माँग पर थोड़ा अचरज से देखा, फिर अपनी पत्नी दामनी को माँ को दस हजार रुपये देने को कहकर चला गया।

दामनी ने एक दो बार माँगने पर अपनी सास को दस हजार रुपये देते हुए कहा, पता नहीं आजकल बहुत मंदी चल रही है, थोड़ा हाथ सम्भालकर खर्च करना... हालांकि शाम को जब गीता ने उन पैसों से विहान की साइकिल खरीदी, तो घर का माहौल पूर्ववत हँसी मज़ाक का हो गया।

अगले हफ्ते कुलदीप की बड़ी बहन दो दिन के लिए मायके आई थी, जब तक शैलेंद्र जी जीवित थे, गीता को कभी पैसे के लिए किसी से



निखलेश सोनी

राजभाषा अधिकारी
अंचल कार्यालय, भोपाल

पूछना नहीं पड़ता, वह खुद ही अपनी पेंशन से एक रकम निकाल कर गीता को दे देते थे, मगर आज बेटे की विदाई के लिए गीता को बहू से पैसे माँगते समय उसके शब्द “पता नहीं आजकल बहुत मंदी चल रही है”, याद आ गए और बहुत दुःखी मन से बेटे को बिना कुछ दिए ही विदा करने लगी, तब बहु ने खुद आकर गीता के हाथ में 2000/- रुपये पकड़ाकर कहा, बेटे को खाली हाथ विदा करेंगी क्या? गीता ने महसूस कर लिया था कि बहु की बात में अपनापन कम उलाहना ज़्यादा है।

ऐसा नहीं था कि गीता के जीवन में पैसे का आभाव आ गया हो, उसके इलाज़ के लिए, दवा के लिए, मोबाइल रिचार्ज करना, छोटी-मोटी ज़रूरतों के लिए तो कुलदीप बिना कुछ कहे ही पैसा लाकर दे देता था, परन्तु इसके अलावा गीता को जो भी खर्च करना होता जैसे किसी मंदिर में दान करना, नौकरों को उनकी ज़रूरत या त्योहार पर पैसा देना या अपने रिश्तेदारों के आने पर उपहार देना जैसे छोटी मोटी ज़रूरतों के लिए उसे कुलदीप या बहू से पैसा माँगना उसके स्वाभिमान को चोट करता था।

आज जैसे ही उसके मोबाइल पर पहली बार केनरा बैंक का एसएमएस आया, गीता ने आश्चर्य से मैसेज खोलकर देखा, पिछले पांच महीने की पेंशन 50000/- रुपये उसके अकाउंट में क्रेडिट होने का मैसेज था।

गीता नज़दीक के एटीएम से 10000/- रुपये निकालकर जब गीता घर आ रही थी, उसके आत्मविश्वास और कदमों की चाल ही बता रही थी कि पेंशन को सम्मान निधि क्यों कहते हैं।

अपने करोड़पति बेटे की करोड़ों की दौलत से ज़्यादा वजन गीता को अपने पति की पेंशन से मिले 10000/- रुपयों में लग रहा था।

इसलिए समझ आया कि क्यूँ इसे पेंशन नहीं सम्मान निधि” कहा जाता है।



कविता

मन गांव में ही रह गया



हिमाद्री मित्रा

वरिष्ठ प्रबंधक

अध्ययन व विकास केंद्र, कोलकाता

पढ़े लिखें परिदे कैद हैं, माचिस से मकान में।
9 से 6 की ड्यूटी, और मानसिक थकान में।

मन गांव में ही रह गया, शरीर शहर का वासी है।
ताज़ा बस, खबर यहाँ, तासीर बासीबासी है।

दो जन दोनों कमाने वाले, बच्चों को कौन संभाले।
टारगेट के पीछे भाग रहे हैं, तन को कर, बीमा के हवाले।

यारों का न संग रहा, न न्योता न व्यवहार।
खुद के घर जाते हैं बन, जैसे रिश्तेदार।

कर बंटवारा एकड़ बेचा, वर्ग फीट के दरकार में।
बिछड़े, पिछड़ा कह के, खो गए अगड़ों के कतार में।

शुरूआती; मज़ा बहुत है, एकांकी; स्वप्न; संसार में।
मुसीबत हमेशा हारा है, संगठिक संयुक्त परिवार में।

मात, पिता न आने को राजी, गांव में नौकरी है कहां जी।
जिनके पास दोनों है बंधुओं, उनका जीवन है शान में।

पढ़े लिखें परिदे कैद हैं, माचिस से मकान में।
9 से 6 की ड्यूटी, और मानसिक थकान में।



कविता

केनरा की डिजिटल लहर....



प्रणब महापात्रों

वरिष्ठ प्रबंधक

केनरा अध्ययन एवं विकास केंद्र, राँची

ऐसे क्षेत्र में जहाँ परंपरा नये से मिलती है,
केनरा बैंक की डिजिटल लहर चमक रही है।
विश्वास और तकनीक का सहज मिश्रण,
एक आधुनिक चमत्कार एक आभासी यात्रा।।

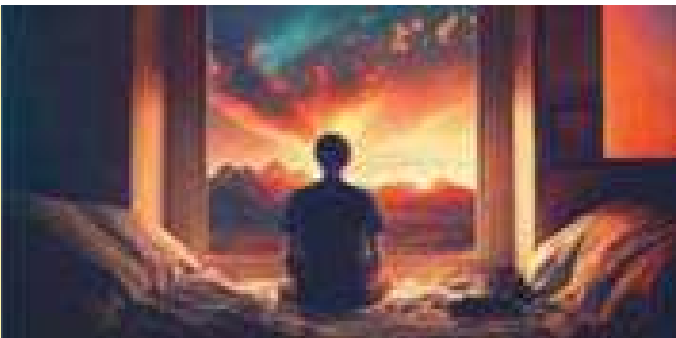
प्रत्येक क्लिक के साथ एक दुनिया खुल जाती है,
ए-आई वन और ई-पासबुक आपको सारी सुविधा देती है।
पैसे का लेनदेन अब नहीं कोई परेशानी,
घर बैठे ही हो जाती है हर ज़रूरत की पूर्ति आसान।।

सीबीडीटी हो या नेट बैंकिंग,
आसानी से पैसा भेजो और बिल चुकाओ।
सुरक्षित तेज और हमेशा निकट,
केनरा का भविष्य एकदम स्पष्ट।।

डिजिटल ताकत से सपनों को सशक्त बना रहे हैं,
दिन-रात ग्राहकों की सेवा कर रहे हैं।
केनरा रेडी कैश और केनरा माइ-मनी के द्वारा,
ग्राहकों को घर बैठे ऋण दिला रहें हैं।

शेयर मार्केट में पैसा लगाना, केन-मनी द्वारा हुआ आसान,
मेडिकल इमरजेंसी में पैसे की ज़रूरत हो तो,
केनरा-हील करेगा इंतजाम।

नए युग का नया सपना, डिजिटल बैंकिंग की है शान,
हर कदम पर आपकी सेवा में, केनरा बैंक करे योगदान।।





यात्रा वृत्तांत

अरुणाचल प्रदेश - एक छोटी सी यात्रा

मई का महिना 14 तारीख की सुबह, जैसे ही धूप की रोशनी हमारे होटल के कमरे में प्रवेश करती है तो लगा जैसे सुबह के 6 या 7 बज रहे होंगे लेकिन घड़ी देखते ही नज़रें अटक गई कि अभी सिर्फ 4 ही बज रहे हैं और पूरा आकाश काले से नीला हो रहा था, रोशनी अपनी छटा बिखेर रही थी। हम थे... भारत के सबसे पूर्वी हिस्से अरुणाचल प्रदेश के तवांग में। पर्वतों और बादलों के बीच एक छोटा सा शहर जो भारत के सबसे बड़े बौद्धमठ का घर भी है।

यह दूरगामी क्षेत्र एक समय में भारत चीन के युद्ध का साक्षी रहा था किन्तु आज सैलानियों का प्रिय स्थान बन गया है।

गुवाहाटी तक हवाई यात्रा करने के बाद वहाँ रुक कर हमने माँ कामाख्या देवी के दर्शन किए, लम्बी दीर्घा होने के कारण हमे करीब 2.30 घंटे लग गए, किन्तु वहाँ मौजूद लोगो के जज्बे को देख हमें समय का पता ही नहीं चला, दर्शन करके हम तवांग के लिए सड़क मार्ग से रवाना हो गए।

कोविड से समस्त परिवार के ग्रसित होने के बाद से ही किसी सुदूर पहाड़ियों में जाने की बहुत इच्छा थी, किन्तु किसी न किसी कारणवश पूरी नहीं हो पा रही थी। गुवाहाटी से मात्र 3 घंटे में ही धीरे - धीरे पहाड़ों का आगमन होने लगा और फिर उन्होंने मैदानी क्षेत्रों को अलविदा कह दिया और अगले कुछ दिनों के रोमांचकारी सफर के लिए हमें आमंत्रित किया।

अरुणाचल जाने से पहले परमिट हमने पहले ही बनवा लिया था जिसे अरुणाचल बॉर्डर पर जांच के बाद ही हमें आगे जाने दिया गया, थोड़ी ही देर में गाड़ियों का शोर, इमारतें, प्रदूषण, धुआं सब पीछे रह गए और हम हरियाली, झरने और पहाड़ों के प्रदेश में आ गए।

एक छोटे से घरनुमा ढाबे पे हम दोपहर का भोजन करने रुके तो वहाँ सिर्फ पत्तों की आवाज थी, ठंडी हवा थी और मनोरम दृश्य के अलावा कुछ नहीं था। आप उसे घर भी कह सकते हैं आप उसे ढाबा भी कह सकते हैं। सिर्फ हमारा परिवार था और होटल वालों का परिवार एक छोटे से घर में खाने की जगह बस।



तेजस भारद्वाज

वरिष्ठ प्रबंधक

अध्ययन व विकास केंद्र भोपाल

कुछ देर बाद हम वहाँ से आगे बढ़े, पहाड़ियों की ऊँचाइयाँ बढ़ती चली जा रही थी, तीव्र मोड़ के आने पर कभी-कभी भगवान भी याद आ जाते थे। गहरी खाइयों का भय, हरे-भरे पहाड़, हमारी गाड़ी होड़ लगाते बादल का मनोरम दृश्य देख के मिले जुले एहसास हो रहे थे।

रास्ते कभी ऊँचाईयों पे ले जाते, कभी नीचे उतार ले आते थे, शायद जीवन में उतार चढ़ाव को दर्शा रहे थे कि रास्ते, हो सकता है कभी-कभी नीचे की तरफ जाए लेकिन वो भी उंचे लक्ष्य को पाने की ही प्रक्रिया है। फिर शाम होते-होते हम अपने पहले पड़ाव टेंगा केम्प पहुँचे। जहाँ मुझे मेरे बचपन का दोस्त जो फौज में अफसर है मिला। उसने हमें टेंगा के बारे में बहुत सी बातें बताई, फिर अगली सुबह हम अपनी अगली मंज़िल की तरफ बढ़ चले।

ऐसे अनेक पहाड़ों पर आगे बढ़ कर हम पहुंचे सेला पास जो कि 13000 फीट की ऊँचाई पर स्थित था, बर्फ से ढँकी पहाड़ों और एक सुन्दर सी झील, आकाश एकदम नीला मानों..... किसी ने आकाश को कपड़े से साफ़ किया हो और बादल एक-दम सफेद..... मानो नहा के आए हों, प्रकृति बिना मानवीय हस्तक्षेप के कितनी सुंदर रहती है।

हर एक दृश्य इतना लुभावना था कि यह समझ नहीं आता कि नज़ारे देखें या उसकी तस्वीरें उतार लें।

वहाँ से ज़रा से आगे बढ़ने पर हमारी छोटी बिटिया कुछ बोलते-बोलते सो गई, फिर नींद में कुछ बड़बड़ाने लगी और यह ध्यान आया कि ऑक्सीजन की कमी के कारण बेहोश हो रही थी अब हम सब आपाधापी में थे, कि अब क्या करें, किससे मदद मांगे शायद ज्यादा ऊँचाई पर होने के कारण ऐसा हुआ। अब आगे जाके जसवंत सिंह स्मृति स्थल पर चिकित्सा उपलब्ध है ऐसी जानकारी मिली, चूंकि

उसके बाद ऊँचाई घटने के कारण और ऑक्सीजन बढ़ने के कारण मेरी बेटी वापस होश में आ गई थी पर आगे के सफर के लिए मन में संदेह उत्पन्न हो रहे थे।

जसवंत सिंह मेमोरियल जो कि एक बहादुर सिपाही की वीर दास्ताँ की निशानी है कि कैसे एक अकेले राइफल मैन जसवंत सिंह 3 दिनों तक चीनी सैनिकों को इतनी दुर्गमता के बावजूद लोहा लेते हुए वीर गति को प्राप्त हुए और आज भी उनकी वर्दी, बिस्तर सब वैसे ही रखे हुए हैं। आज वह मरणोपरांत भारतीय सेना के मेजर जनरल के पद पर हैं। इसके अलावा हमने सेला और नूरा दो बहनों के बारे में भी जाना, जिन्होंने चीन संग युद्ध में भारतीय सेना की खूब मदद की थी। वहाँ सैनिकों के द्वारा चलाई जाने वाली कैटीन में हमने खाना खाया।

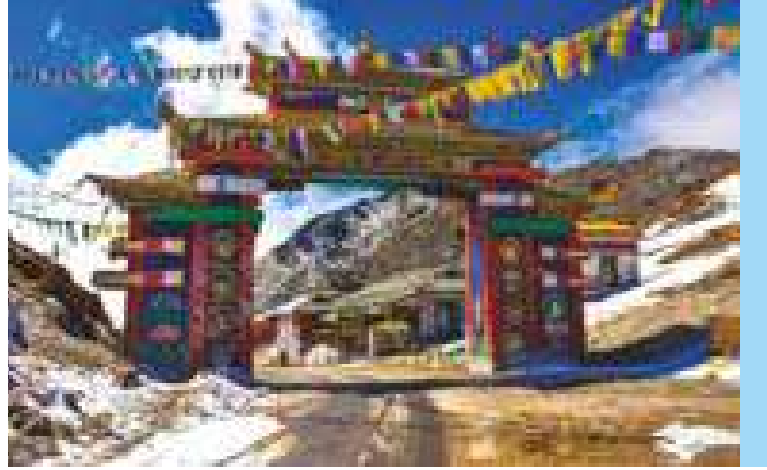
वहाँ से आगे बढ़ने पर हम गगनचुंबी जंग जलप्रपात पहुँचे, जाते ही लगा कि जलप्रपात नहीं बल्कि आकाश से दुग्ध धारा बरस रही है, उसकी हल्की-हल्की बूँदे दूर खड़े रहने पर भी चेहरे पर पड़ रही थी और सैलानियों के चेहरे पर खुशी देखते ही बन रही थी। 5 बजने वाले थे.....और सूरज छिपने की जल्दी में था, हमने तो हमारे शहर में सूरज को शाम 6 बजे से 6.30 तक आग बरसाते हुए देखा है। खैर हम आगे बढ़े और फिर पहाड़ों के रास्ते शाम होते-होते एक स्वर्ग जैसे शहर तवांग पहुँच गए, शाम में घरों में लकड़ियों के जलने के धुएँ और बादलों में अन्तर जान पाना मुश्किल हो रहा था।

हम अपने गेस्ट हाउस पहुँच गए और अब हमे ठंड का एहसास हो रहा था, कमरे में अलाव जलाया, तब जाकर कुछ राहत मिली। हमारे पूरे रास्ते मैगी का सेवन चरम पर था, हर जगह ठंड और मैगी कि उपलब्धता और बच्चों की जिद में 'मैगी' ही जीती।

अत्यधिक थके होने के कारण हम जल्दी ही सो गये। अगले दिन हमारी सुबह 4 बजे रोशनी के कारण नींद टूटी, याद ही नहीं रहा कि हम अरुणाचल में हैं और घड़ी देखी तो आश्चर्य हुआ कि सुबह 4 बजे इतनी रोशनी कैसे हो सकती है? आज मौज-मस्ती के साथ परीक्षा का भी दिन था। आज हमने 15200 फीट पर जाना था 'बुमला पास' जो कि भारत-चीन सीमा पर स्थित है और वहाँ ऑक्सीजन की कमी भी रहती है।

भारत चीन बॉर्डर, मन में शंका थी कि जाऊँ या ना जाऊँ? एक तरफ लग रहा था कि इतनी दूर आके भी आगे नहीं गए तो क्या होगा और एक तरफ छोटी बेटी के 13000 फीट पर उसकी हालत, और परिवार के बाकी सदस्यों की सेहत की चिंता। फिर सोचा जिंदगी में ऐसा मौका फिर शायद दोबारा ना मिले, तो हम सब ने तय किया कि आगे ही चलते हैं।

अब हम तवांग से बुमला के लिए निकल पड़े. अब पहाड़ और ऊँचे हो रहे थे, रास्ते और दुर्गम हो रहे थे, मोड़ उतने ही खतरनाक हो चले थे,



लेकिन हर थोड़ी दूर पर भारतीय सेना का कोई वाहन दिख जाता था तो लगता था कि हम सुरक्षित है, और हमारी मदद के लिए कोई है। हर कुछ दूरी पर हमारे भारतीय जवान अभ्यास करते दिख जाते थे, जिससे हमारा मनोबल हमसे कहता कि हम तो सिर्फ घूमने जा रहे हैं पर ये हमारे भारतीय जवान दिन रात, शून्य से नीचे के तापमान में अपने परिवार को छोड़कर भी दुश्मन से लोहा लेने की तैयारियां करते रहते हैं और हर परिस्थिति में सदैव तैयार रहते हैं।

साथ ही खूबसूरती भी बढ़ती जा रही थी बुमला पास से पहले हम पहुँच शंगत्सर लेक जो माधुरी लेक के नाम से भी प्रसिद्ध है। वहाँ पहुँच के हमें लगा कि हम किसी दूसरी दुनिया में आ गये हैं, रंग बिरंगे झंडे, साफ पानी कोई गंदगी नहीं... वहाँ हमने जी भर के फोटो खिंचवाई, गरम-गरम चाय तो हर समय चाहिए ही रहती थी फिर हम अपने गंतव्य के लिए बढ़ने लगे।

इसके बाद बर्फ की चादर बढ़ने लगी, पेड़ पौधे दिखने बंद हो गए, मेरा ध्यान अपनी बेटी और अपनी माँ पर ज्यादा था कि कहीं कुछ दिक्कत तो नहीं, लेकिन धीरे-धीरे सुंदरता निहारते हुए हम बुमलापास पहुँच ही गए, वहाँ हमारे भारतीय जवान ने अपने जोशीले अंदाज़ व भाषण से सबको भाव विभोर कर दिया, उन्होंने भारतीय सेना की अनेक वीर गाथायें सुनाई, हम करीब 150 सैलानी थे और सारे के सारे मंत्रमुग्ध हो गए। यह सब चल ही रहा था कि अचानक धम्म से आवाज आई, थोड़ी अफरा तफरी सी मच गयी तो पता चला की एक सैलानी गिर गया है, साँस लेने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन की कमी के कारण ऐसा हुआ। फिर वहाँ मौजूद सैनिकों ने उनकी मदद की, पानी पिलाया और उसे ठीक कर दिया, सारे लोग सहम से गए, फिर उस जवान ने फिर से हमें बताना शुरु कर दिया, उस जवान ने हमें और बताया कि कैसे हमारे जवानों ने कम संसाधनों के बीच 1962 में चीन से लोहा लिया था और कितने जान-माल का नुकसान हमारे देश को हुआ था आज इनका कहना है कि इनके पास सारे आधुनिक उपकरण

हैं, सारे हथियार हैं। कुछ ही दूरी पर हमें चीनी सैनिक दिखा दे रहे थे और उनके और हमारे बीच बस एक लकड़ी का फाटक था। फिर वहाँ भारत माता की जय जयकार होने लगी और फिर हम सब उंचाई और ऑक्सीजन वगैरह सब कुछ भूल भाल के देशभक्ती के रंग में घुल गए। सैलानी तो वहाँ बहुत आये थे कोई गुजरात से, कोई बंगाल से, कोई पंजाब से, कोई तमिलनाडु से लेकिन वहाँ सब भारतीय से ज्यादा कुछ नहीं थे, काश..... ऐसा माहोल देश के हर कोने में हो जाए।

जिस जगह एक समय पर पहुँचना हमारे जवानों के लिए मुश्किल था आज वहाँ पूरे परिवार के साथ लोग जा रहे हैं। पड़ोसी देश के सैनिक इस बात से भी खौफ खाते होंगे कि भारतीयों ने कितना ज्यादा अपना बुनियादी ढाँचे को बना लिया है जहाँ आज परिवार संग बच्चा-बच्चा भी जा पा रहा है।

ये है आज का मजबूत भारत, ऐसा मुझे एहसास हुआ फिर वहाँ हम कुछ देर रुके, फोटो खिंचवायी, थोड़ी मौज मस्ती की.. और वापस चल दिए।

वापस आते समय मैं सोच रहा था कि यही तो सफर का सबसे खूबसूरत पड़ाव था जो सबसे दुर्गम तो लग रहा था लेकिन यहाँ नहीं आते तो कितना कुछ छूट जाता। जिंदगी भी ऐसे ही है, जहाँ आपका मन विचलित हो जाए लेकिन उसके बावजूद जरा सी हिम्मत कर लीजिए तो आपको कोई नहीं रोक सकता, और उस जीत के एहसास को बयान करना बहुत मुश्किल है।

अब हम वापसी के रास्ते में थे, आते हुए हमने तवांग वार मेमोरियल देखा वहाँ शाम को चलचित्र का आयोजन किया जाता है जिसमें तवांग का इतिहास व 1962 में चीन के युद्ध का वर्णन होता है। अगले दिन हमने तवांग का बौद्धमठ देखा, जो तवांग की रूह की तरह है, एक अलग-सी पहाड़ी में पीले रंग में सुनहरी काया जिसमें कितने बौध भिक्षु रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वहाँ से हम अब वापसी के रास्ते में थे, फिर उतार-चढ़ाव के रास्ते से होते हुए हम जसवंत सिंह मेमोरियल पहुँचे तो बहादुर सिपाही जसवंत जी की कहानी ताजा हो गयी, फिर इस बार हम आ गये सेला टनल जो कि एक बुनियादी ढाँचे की एक मिसाल है। यह सुरंग 13000 फुट की उंचाई पर स्थित है और इस सुरंग से तीव्र घाटी वाले सेला का रास्ता 2 घंटे कम हो जाता है। फिर पहाड़ों से लुका-छिपि करते हुए हम दिरांग पहुँचे वहाँ हम एक होमस्टे में रुके थे, दम्पत्ती ही उसको चलाते थे, मालिक भी वहीं और नौकर भी वहीं। वहाँ से हम मंडलाटाँप के लिए निकल गए, इस बार रास्ते थोड़े कम चौड़े थे व वहाँ पहुँचते ही लगा कि बादलों के घर आ गए बहुत ठंड और बादल ही बादल, वहाँ का तापमान काफी कम था लेकिन वहा कोई भी नहीं था सिर्फ हम ही थे। शायद शाम होने वाली थी, इसलिए हम भी अंधेरा होने से पहले अपने कराओके होमस्टे पहुँच जाना चाहते थे। फिर रात में हमने

अच्छा खाना खाया और उस दम्पत्ती को लगन के साथ काम करते हुए देखा, वो सैकड़ों मील हमसे दूर रहते हैं, दिखने में भी हमसे अलग हैं, रहन-सहन सब अलग लेकिन वो हमारा कितना ध्यान रख रहे हैं और उनके आने पर हम उनके साथ कैसा बर्ताव करते हैं यह सोचने का विषय है।

फिर हम अगले दिन दिरांग से भलुष्कपोंग की तरफ बढ़े यह सोचते हुए कि अब तो उंचे पर्वत खत्म लेकिन हमें क्या पता था कि असली रोमांच तो आगे आने वाला है, रास्ते में एक सुरंग आयी निचिफु टनल, जिसको पार करते ही रास्ता दिखायी देना ही बंद हो गया सिर्फ बादल ही बादल और एक तरफ गहरी खाई। मानो बादलों ने हमारे जाने का रास्ता रोक लिया हो। करीब 1 घंटे तक हम धीरे-धीरे सड़क की सफेद पट्टी देख चल रहे थे, कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था, फिर हम उसको पार कर घने जंगल में आ गये, अब रास्ते सिर्फ नीचे वहाँ भी जहाँ बारिश हो रही थी, बादल अब भी थे पर रास्ता साफ दिख रहा था। आगे हमें थोड़ा जाम मिला, पता करने पर पता चला कि आगे एक पुल टूट गया है कुछ देर बाद गाड़ियों की लंबी कतार धीरे-धीरे कच्चे रास्ते पर चलने लगी, बारिश के कारण वो मिट्टी का रास्ता और दुर्गम हो गया था, करीब 2 घंटे फंसे होने के बाद हम वापस मुख्य सड़क पर वापस आ गए और शाम को अपने भलुष्कपोंग के गेस्ट हाऊस शाम होते-होते पहुँच गये। गेस्ट हाऊस के बगल में नदी बह रही थी, कल-कल करती नदी की अवाज़ रात भर हमें आ रही थी, सुबह उठते ही पहाड़ जो अब कम ऊंचे थे, दिखने लगे, मैदान आने की शुरुआत हो चुकी थी, अब हम अपने सफर के अंतिम पड़ाव पर थे।

अगले दिन हमने अपने लिए कुछ याद के रूप में कुछ खरीदारी की, रिश्तेदारों के लिए गुवाहाटी से कुछ तोहफे खरीदे.... हमने वापस अपने शहर की तरफ आने के लिए हवाई यात्रा प्रारंभ करी, पूरा सफर मानो एक स्वप्न की तरह लगने लगा, सब आँखों के सामने दोहराने लगा, एयरपोर्ट पर इंतज़ार करते दूसरे मुसाफिरों को देख कर लगता मानों वो भी शायद इतना सुंदर सफर तय करके आ रहे हों, अपने आगे के सफर के लिए।

जिंदगी वाकई कोई मंजिल नहीं बस सफर ही है।

वाकई, भारत एक अद्भुत विविधताओं से भरा एक विशाल देश है जहाँ वेशभूषा, भाषा... तो अलग हो सकती है लेकिन भारतीय होना सबको एक ही धागे से जोड़ देता है, आज का भारत सुरक्षा को सर्वप्रथम प्राथमिकता देता है अपने सैनिकों का ध्यान रखता है, वहीं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुगम रास्ते, विमान सेवा और होटल को भी बढ़ावा देता है यह सोचते हुए, हम फिर से अपने शहर की तरफ लौट आए।



आलेख

बैंको में परिचालन जोखिम

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।।

उक्त पंक्तियों में कहने का तात्पर्य यह है कि निम्न श्रेणी के लोग विघ्न/जोखिम के डर से कार्य की शुरुआत ही नहीं करते हैं, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य शुरुआत कर के किसी प्रकार के विघ्न आने पर कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं लेकिन उत्तम श्रेणी के लोग बार-बार विघ्न आने पर भी जो कार्य शुरू किया है उसे कभी नहीं छोड़ते।

भूमिका :-

एक समृद्ध अर्थव्यवस्था देश की उन्नति व समृद्धि का प्रतीक है। प्रतिस्पर्धी वैश्विक कारोबारी माहौल में अर्थव्यवस्था के विकास और उसकी स्थिरता हेतु स्वस्थ, गतिशील व्यवसाय के साथ जीवांत बैंकिंग प्रणाली नितांत ज़रूरी है जो वास्तव में अर्थव्यवस्था का मेरुदंड है। अनिश्चितताओं और अवसरों का नाम ही व्यवसाय है। बैंकिंग जगत में अपरिहार्य होने के कारण जोखिम प्रबंधन बैंकिंग गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जोखिम वे अनिश्चितताएं हैं जिनके कारण व्यवसाय में आशा से भिन्न परिणाम मिलने की सम्भावनाएं होती हैं। वस्तुतः जोखिम, परिणाम में अनिश्चितता का पर्याय है जो कि लाभ अथवा हानि दोनों रूपों में परिणत हो सकता है। जोखिम की सन्निहित संभावना को कम करने के लिए एहतियाती कदम उठाना ही मोटे तौर पर जोखिम प्रबंधन है। जोखिम रहित बैंकिंग की कल्पना करना संभव नहीं है। ऐसा कह सकते हैं कि बैंक एवं जोखिम दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जोखिम प्रत्येक व्यवसाय में अंतर्निहित है तथा हर जोखिम तथा उसके संभावित परिणामों का पूर्वानुमान लगाना दुष्कर है। परंतु कुशल जोखिम प्रबंधन के माध्यम से व्यवसाय में संभावित नुकसानों को न्यूनतम स्तर पर रखकर लाभप्रदता बढ़ाना संभव है।

बैंकिंग कारोबार में जोखिम :-

बैंकिंग में जोखिम एक अंतर्निहित और अपरिहार्य तत्व होता है। सभी प्रकार के बैंकिंग क्रियाकलापों में जोखिम निहित है और यह बैंकिंग



शीला कुमारी वर्मा

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय गाजियाबाद

कारोबार का एक अभिन्न अंग है। बैंकिंग किसी भी अर्थव्यवस्था में जोखिम भरा व्यवसाय है क्योंकि इसमें जो जनता की पूंजी दांव पर लगी होती है। इस कारण भी आधुनिक बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन बैंकिंग कारोबार से जुड़ा है क्योंकि सभी पणधारियों के हितों की सुरक्षा करना अनिवार्य है।

ऐसी जोखिमों का प्रभावी रूप से प्रबंधन करने के लिए बैंक ने कई जोखिम प्रबंधन प्रणालियां तैयार की हैं और इनको कार्यान्वयन में लाया जा रहा है। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार बैंक ने अपनी जोखिम प्रबंधन प्रणाली को मजबूत बनाए रखा है जिसमें नीतियां, साधन, तकनीक, प्रबंधन प्रक्रियाएं और एमआइएस शामिल हैं।

परिचालनात्मक जोखिम की अवधारणा :-

बेसल II और बेसल III में परिचालनात्मक जोखिम को इस तरह परिभाषित किया गया है :-

परिचालनात्मक जोखिम का तात्पर्य अपर्याप्त या विफल आंतरिक प्रक्रियाओं, लोगों तथा प्रणालियों या बाहरी घटनाओं के फलस्वरूप होने वाली हानि का जोखिम है। परिचालनात्मक जोखिम में विधिक जोखिम शामिल है मगर रणनीति या प्रतिष्ठा से संबन्धित जोखिम शामिल नहीं है।

परिचालनात्मक जोखिम का वर्गीकरण :-

मुख्यतः जोखिम को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:-

वित्तीय

गैर वित्तीय

तकनीक - आधारित

परिचालनात्मक जोखिम आमतौर पर चार अलग-अलग तरीकों से होता है: लोग, प्रक्रियाएं, प्रणाली एवं बाह्य कारक। परिचालन जोखिम के कई पहलुओं के लिए, कंपनियों को प्रत्येक श्रेणी के भीतर जोखिम को यथासंभव कम करने का प्रयास करना चाहिए, इस समझ के साथ कुछ परिचालन जोखिम हमेशा मौजूद रहेंगे।

क) कारण के आधार पर :-

कारण के आधार पर परिचालनात्मक जोखिम का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है:-

लोगों के द्वारा उत्पन्न कारण	लापरवाही / अक्षमता/ अपर्याप्त प्रशिक्षण कार्यनिष्ठा में कमी
प्रक्रिया उन्मुख करना (लेन -देन आधारित)	व्यवसाय के परिमाण में उतार-चढ़ाव संगठनात्मक जटिलता/ उत्पाद जटिलता
प्रणाली उन्मुख कारण (परिचालनात्मक नियंत्रण आधारित)	कार्यभार का अपर्याप्त रूप से पृथक्करण / अपर्याप्त कार्य प्रक्रियाएं प्रबंधकीय पर्यवेक्षण में कमी
बाह्य कारण (प्रौद्योगिकी उन्मुख कारण)	निर्बल प्रौद्योगिकी और संचार /खराब डिजाइन/ नियमित जांच न होना स्वचलन प्रणाली की कमी/ तकनीकी खराबी

ख) घटना के आधार पर :

घटना के आधार पर परिचालनात्मक जोखिम निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं:-

आंतरिक धोखाधड़ी :

संपत्ति अथवा विनियमों, नीतियों एवं कानून के दुर्विनियोजन एवं धोखाधड़ी का कोई भी कृत्य एवं उसके कारण होने वाली हानियाँ, जिनमें भीतरी कोई पक्ष शामिल हो।

बाह्य धोखाधड़ी : किसी तीसरे पक्ष द्वारा धोखाधड़ी, संपत्ति अथवा कानून के दुर्विनियोजन के कारण होने वाली हानियाँ।

कार्यालयीन प्रथाएँ तथा कार्यस्थल सुरक्षा :

कार्यालयीन प्रथाओं में विसंगति अथवा पक्षपात से होने वाली हानियाँ तथा स्वास्थ्य एवं सुरक्षा कानूनों अथवा व्यक्तिगत चोट के दावों के भुगतान के कारणों से होने वाली हानियाँ।

ग्राहक, उत्पाद तथा व्यवसाय कार्य प्रणाली :

किसी विशिष्ट ग्राहक वर्ग की व्यावसायिक अनिवार्यता, उत्पाद के डिजाइन अथवा कार्य में लापरवाही की वजह से भी परिचालन जोखिम उत्पन्न हो सकता है।

भौतिक आस्तियों की क्षति :

प्राकृतिक आपदाओं अथवा अन्य कारणों की वजह से भौतिक आस्तियों की क्षति एक बड़ा परिचालन जोखिम है क्योंकि इसकी वजह से सामान्य कामकाज रुक सकता है।

व्यवसाय व्यवधान एवं प्रणाली की विफलता :

व्यवसाय में व्यवधान आने से होने वाला जोखिम अथवा प्रणालियों की विफलता जैसे किसी सूचना प्रौद्योगिकी के सिस्टम का विफल हो जाना।

निष्पादन, वितरण तथा प्रक्रिया प्रबंधन :

व्यापारिक प्रतिपक्षकारों और विक्रेता वर्ग के साथ संबंधों से लेनदेन प्रक्रियाओं अथवा प्रक्रिया प्रबंधन में विफलता से होने वाली हानियाँ।

परिचालनात्मक जोखिम की पहचान :-

किसी भी जोखिम प्रबंधन के सामान्यतः निम्नलिखित चरण होते हैं:-

बैंकों के लिए अपने प्रभावशाली एवं कुशल संचालन के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे भविष्य में संभावी जोखिमों का पता लगाएं और समय रहते आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें, तभी वे किसी विशिष्ट जोखिमपूर्ण घटना के कारण होने वाली हानि पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। कोई भी बैंक किसी जोखिम को एक बार टालकर निश्चित नहीं हो सकता जबकि उसे जोखिमों के प्रति सचेत रहना होगा और बार-बार होने वाले परिचालन जोखिमों के प्रति पूर्वानुमान लगाने होंगे। समय-समय पर परिचालन जोखिमों के प्रबंधन के प्रति नयी-नयी जोखिम पद्धतियाँ अपनानी होंगी।

परंपरागत, कम्प्यूटरीकृत एवं दूरसंचार बैंकिंग के अंतर्गत जोखिम के निम्न रूप हो सकते हैं-

- परिचालनात्मक जोखिम के अंतर्गत बैंक की कार्यप्रणालियों एवं पद्धतियों के अनुपालन में चूक होने के कारण हानि हो सकती है।
- बैंक के कार्यनिष्पादन में त्रुटि के कारण हानि होने की संभावना हो सकती है।
- बैंकों में परिचालनात्मक जोखिम के अंतर्गत धोखाधड़ी, अनधिकृत व्यवहारों के कारण भी हानि हो सकती है।

- बैंक में कार्यों एवं दायित्वों के सुचारु निर्धारण न होने के कारण हानि की सम्भावना बनी रहती है।
- परिचालनात्मक जोखिम के अंतर्गत प्राकृतिक आपदाओं से बैंक की मूल्यवान मशीनों, संयंत्रों एवं उपकरणों की हानि की संभावना बनी रहती है।
- बैंक के कम्प्यूटर में दर्ज एवं उसके संचार नेटवर्क से गुजरने वाली जानकारी में ग्राहकों से संबंधित बहुत ही संवेदनशील वित्तीय तथा अन्य आंकड़े होते हैं, जिनके अनावश्यक प्रकटन पर बैंक की प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- बैंक की कम्प्यूटर व संचार प्रणाली के विफल होने से बैंक के कार्यकलापों एवं कारोबार में व्यवधान आ सकते हैं, जिससे ग्राहकों में असंतोष एवं कारोबार की हानि हो सकती है।
- बैंकों में आउटसोर्सिंग सेवाओं के कारण जोखिम की संभावना बनी रहती है।
- बैंकों द्वारा अनिश्चित एवं अकुशल योजना के कारण व्यवसाय में कमी हो सकती है।

परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता :-

परिचालन जोखिम प्रबंधन बेहतर जोखिम नियंत्रण प्रदान कर सकता है और जोखिम अपरिहार्य होने पर संगठनों को बेहतर शमन करने की स्थिति प्रदान कर सकता है। इससे व्यवसाय या एजेंसी की भविष्य की दिशा के बारे में बेहतर निर्णय लेने में भी मदद मिल सकती है। लेकिन प्रभावी होने के लिए, ऐसी प्रक्रिया को कठोर और संपूर्ण होने की आवश्यकता है।

परिचालनात्मक जोखिम असहायता एवं असक्षमता का जोखिम है एवं इनसे जुड़े मुद्दे काफी जटिल एवं अधिक लागत वाले हैं। वित्तीय सेवाओं के अविनियमन, वैश्वीकरण एवं कम्प्यूटरीकरण ने नए-नए उत्पाद एवं प्रणालियां विकसित की हैं। बैंक सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों का आयुवर्ग भी काफी महत्वपूर्ण है। जटिलताओं को समझने में काफी समय लगता है। जोखिम प्रबंधन मानव जीवन का एक ऐसा महत्वपूर्ण अंग है जो इसे अन्यो से अलग करता है और उसके अस्तित्व और विकास में सहायता करता है। यह सत्य है कि जोखिम हर जगह है, लेकिन वित्तीय जगत में इस जोखिम को संख्यावाची बनाने और उसका प्रबंधन करने के कई उपाय किये गए हैं। यहाँ पर इस बात को समझना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि जोखिम प्रबंधन के द्वारा जोखिम को कम किया जा सकता है, लेकिन शून्य नहीं किया जा सकता।

प्रभावी परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन की चुनौतियाँ :-

भारतीय बैंकों का वर्तमान पूंजी आधार और चलनिधि स्थिति बेसल-III के शुरुआती दौर की तुलना में आमतौर पर सुखद स्थिति में है,



तथापि इसमें कुछ चुनौतियां हैं जिनका समाधान करने की आवश्यकता है। बैंकों की स्थिति मापने में आस्ति गुणवत्ता बहुत ही महत्वपूर्ण मापदंड है और आस्तियों से जुड़ा प्रावधानीकरण कवरेज है जिसे बैंकों की तनावग्रस्त आस्तियों की तुलना में रखा जाता है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली में आस्ति गुणवत्ता में विवेकसम्मत मानदंड, सरफेसी (SARFAESI) अधिनियम 2002, कॉरपोरेट डेट रिस्ट्रक्चरिंग (CDR) व्यवस्था, ऋण सूचना कंपनी इत्यादि के आने से काफी सुधार हुआ है। यदि बैंकों की रणनीतियां, कारोबारी मॉडल, योजना एवं परिचालन और जोखिम प्रबंधन कमजोर, अप्रयुक्त अथवा अप्रचलित या समष्टि आर्थिक परिवेश के अनुरूप नहीं है तो उनकी आय या तो कम होगी अथवा उन्हें नुकसान होगा।

परिचालनात्मक जोखिम के प्रबंधन पर नीतियाँ

बैंक के परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन नीति कागठन किया है जो बैंक के बोर्ड द्वारा विधिवत अनुमोदित है। बोर्ड द्वारा अपनाई गई अन्य नीतियाँ जो परिचालनात्मक जोखिम को संभालती हैं इस प्रकार :

- सूचना प्रणाली सुरक्षा नीति
- फोरेक्स जोखिम प्रबंधन नीति
- अपने ग्राहक को जानें पर नीति दस्तावेज और धन शोधन निवारण (एएमएल) कार्यविधियाँ
- अविराम आईटी कारोबार तथा विपदा पुनःप्राप्ति योजना (आईटी बीसीडीआरपी)

बैंक द्वारा अपनाई गई परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन नीति में परिचालनात्मक जोखिम के प्रबंधन के लिए संगठन संरचना तथा विस्तृत प्रक्रियाओं की रूपरेखा वर्णित है। नीति का मूल्य उद्देश्य बैंक के दैनिक जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं में भूमिकाओं के स्पष्ट नियतन के जरिये परिचालनात्मक जोखिम को प्रभावी ढंग से पहचानने, निर्धारित करने, प्रबोधित करने तथा नियंत्रित/कम करने और भौतिक परिचालनात्मक सहित परिचालनात्मक ऋण जोखिमों की समय पर रिपोर्टिंग के द्वारा परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन प्रणाली को

एकीकृत करना है। बैंक में परिचालनात्मक जोखिम को व्यापक तथा सुदृढ़ व सुस्पष्ट आंतरिक नियंत्रित फ्रेमवर्क के द्वारा संभाला जाता है।

व्यापार निरंतरता योजना (बिज़नेस कंटीन्यूटी प्लान –बीसीपी)

बदलती हुई व्यापार प्रक्रियाओं, तकनीक पर बढ़ती निर्भरता तथा नए प्रकार के जोखिमों के परिप्रेक्ष्य में एक व्यापार निरंतरता योजना (बिज़नेस कंटीन्यूटी प्लान) का होना परिचालन जोखिम के प्रबंधन की एक पूर्व शर्त है जिसे संक्षेप में बीसीपी कहा जाता है। बीसीपी परिचालन व्यवसाय व्यवधान एवं प्रणाली की विफलता के प्रतिकूल प्रभावों को न्यूनतम करने की एक अप्रतिम आवश्यकता है। वर्तमान में बैंकों में विभिन्न प्रकार के सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण, सर्वर तथा विभिन्न सॉफ्टवेयर उपयोग में लाए जाते हैं। अनेक प्रकार की मशीनें भी प्रयोग में आती हैं जैसे कि नकदी सत्यापन हेतु एवं चेक समाशोधन हेतु। कोर बैंकिंग सर्विस (सीबीएस) के अंतर्गत पूरी बैंक प्रणाली सॉफ्टवेयर आधारित हो गई है। ऐसे में परिचालन जोखिम का प्रबंधन एवं एक समुचित व्यापार निरंतरता योजना (बीसीपी) का होना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

परिचालनात्मक जोखिम प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए वैश्विक उपाय :-

वैश्विक वित्तीय संकट के बाद बेसल III के रूप में एक एकीकृत सुधार पैकेज को वैश्विक विनियामक पैकेज के रूप में प्रवर्तित किया गया ताकि बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ एवं आघात सहन करने योग्य बनाया जा सके। ये सुधार बैंक के जोखिम प्रबंधन के संबंध में पूंजी चलनिधि, लीवरेज और समष्टि विवेकपूर्ण पहलुओं को देखते हैं। प्रभावी जोखिम प्रबंधन में बेसल III की भूमिका उसकी विलक्षणताओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

मानकीकृत मापन दृष्टिकोण (बेसल III) के तहत परिचालनात्मक जोखिम कम करना :

परिचालन जोखिम त्रुटिपूर्ण या विफल प्रक्रियाओं, नीतियों, प्रणालियों या घटनाओं के कारण होने वाले नुकसान का जोखिम है जो व्यवसाय संचालन को बाधित करता है। कर्मचारियों की त्रुटियाँ, धोखाधड़ी जैसी आपराधिक गतिविधियाँ और भौतिक घटनाएँ उन कारकों में से हैं जो परिचालन जोखिम को ट्रिगर कर सकते हैं। परिचालन जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया को परिचालन जोखिम प्रबंधन के रूप में जाना जाता है। बीमाकर्ताओं के लिए यूरोपीय सॉल्वेंसी II निर्देश द्वारा अपनाई गई परिचालन जोखिम की परिभाषा, बैंकों के लिए बेसल II नियमों से अपनाई गई भिन्नता है: “इस तथ्य के कारण मूल्य में बदलाव का जोखिम की अपर्याप्त या विफल आंतरिक के लिए वास्तविक नुकसान होता है प्रक्रियाओं, लोगों और प्रणालियों,

या बाहरी घटनाओं (कानूनी जोखिम सहित) से, अपेक्षित नुकसान से भिन्न होता है।”

यह महत्वपूर्ण है कि परिचालनात्मक प्रबंधन प्रणाली को पर्याप्त स्वतंत्रता एवं प्रतिष्ठा दी जाए। शायद इसी उद्देश्य से मुख्य जोखिम अधिकारी की नियुक्ति भी की गई है, लेकिन मूल उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हुई है। साथ ही, बोर्ड के स्तर की जोखिम समितियों को दायित्व को सार्थक तरीके से निभाने की जानकारी होनी चाहिए।

बैंक स्तर पर परिचालनात्मक जोखिम के महत्वपूर्ण पहलुओं की निदेशक मंडल को जानकारी होनी चाहिए और उससे निपटने के लिए निदेशक मंडल द्वारा नीति निर्धारित की जानी चाहिए।

बैंक में व्यापक परिचालनात्मक जोखिम की पहचान और उसका आकलन किया जाना चाहिए। नए उत्पादों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं, पद्धतियों और प्रणालियों को लागू करने से पहले यह तय किया जाना आवश्यक है कि इनमें परिचालन जोखिम को नियंत्रित करने की प्रक्रिया अपनायी गयी है।

बैंकों में परिचालनात्मक जोखिमों को मापने हेतु आवश्यक उपाय किये जाने चाहिए ताकि परिचालन जोखिम को समय रहते नियंत्रित किया जा सके।

बैंकों में परिचालनात्मक जोखिम एवं हानि को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक प्रणाली समय-समय पर स्थापित की जानी चाहिए।

परिचालनात्मक जोखिम का दायरा व्यापक है, और इसमें जोखिम के अन्य वर्ग भी शामिल हो सकते हैं, जैसे धोखाधड़ी, सुरक्षा, गोपनीयता संरक्षण, कानूनी जोखिम, भौतिक (जैसे बुनियादी ढांचे का बंद होना) या पर्यावरणीय जोखिम। परिचालन संबंधी जोखिम भी इसी तरह व्यापक रूप से प्रभावित हो सकते हैं, जिसमें वे व्यवसाय की अस्थिरता को बढ़ाते हुए ग्राहक संतुष्टि, प्रतिष्ठा और शेयरधारक मूल्य को प्रभावित कर सकते हैं।

जोखिम आधारित पूंजी ढांचे की मदद के लिए साधारण सुरक्षा कवच सुविधा प्रदान करने के रूप में एक अंतराष्ट्रीय सुसंगत लीवरेज अनुपात लागू किया गया है ताकि प्रणाली में अत्यधिक लीवरेज निर्माण को रोका जा सके।

उपसंहार :

बैंकिंग व्यवसाय में जोखिम अपरिहार्य होने के कारण जोखिम प्रबंधन बैंकिंग गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जोखिम की सन्निहित संभावना को कम करने के लिए एहतियाती कदम उठाना ही मोटे तौर पर जोखिम प्रबंधन है। परिचालनात्मक जोखिम रहित बैंकिंग की कल्पना असंभव है। इस अर्थ में बैंक एवं जोखिम का चोली दामन का संबंध है, वे एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं।



आलेख

वित्तीय समावेशन में वृद्धि वर्तमान स्थिति, चुनौतियां और भविष्य

वित्तीय समावेशन धीरे-धीरे दुनिया भर में आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन के एक महत्वपूर्ण चालक के रूप में स्थापित हो गया है। औपचारिक वित्त तक व्यापक पहुंच आर्थिक झटकों की संवेदनशीलता को कम करती है, मानव पूंजी में निवेश को बढ़ाती है और रोजगार सृजन को बढ़ाती है। औपचारिक वित्तीय सेवाओं तक अपर्याप्त पहुंच के कारण, व्यक्तियों और व्यवसायों को अपनी मौद्रिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीमित संसाधनों या धन के महंगे, अनधिकृत स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। वृहद स्तर पर, अधिक वित्तीय समावेशन सभी के लिए टिकाऊ और समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

इस बात पर रुझान बढ़ रहा है कि समग्र आर्थिक उत्पादन में सुधार और राष्ट्रीय स्तर पर गरीबी और आय असमानता को कम करने में वित्तीय समावेशन का कई गुना प्रभाव कैसे पड़ता है। लैंगिक समानता और महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण के लिए वित्तीय समावेशन महिलाओं के बीच सबसे महत्वपूर्ण है। अपनी वित्तीय स्थिरता पर अधिक नियंत्रण के साथ, महिलाएं खुद को और अपने परिवार को गरीबी से बाहर आने में मदद कर सकती हैं। इससे अनौपचारिक क्षेत्र से गरीबी और शोषण में गिरने का जोखिम कम हो सकता है और मापनीय और उत्पादक आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होने की उनकी क्षमता बढ़ सकती है। समावेशी विकास की अवधारणा विकास के परिणामस्वरूप उपलब्धियों से प्राप्त लाभों को साझा करने की प्रक्रिया में शामिल होने से शुरू होती है। समावेशी विकास का लक्ष्य विकास प्रक्रिया में सभी क्षेत्रों की भागीदारी सुनिश्चित करना।

देश में विद्यमान लगभग सभी क्षेत्रों का देश के आर्थिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जो बदले में समावेशी विकास के लिए जिम्मेदार है। राष्ट्र के समावेशी विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाले महत्वपूर्ण क्षेत्र वित्तीय, कृषि, कॉर्पोरेट क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल, विमानन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और फार्मास्यूटिकल्स प्रौद्योगिकी है।



शशि कान्त पाण्डेय

वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
 अंचल कार्यालय, लखनऊ

वित्तीय समावेशन में मूल रूप से एक व्यक्ति की उचित लागत पर लेनदेन, भुगतान, बचत, ऋण और बीमा जैसे वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच शामिल है। इसमें स्वास्थ्य देखभाल या शिक्षा में निवेश करना, व्यवसाय शुरू करना या उसमें सुधार करना, जोखिमों का प्रबंधन करना और 'वित्तीय झटके' को झेलना भी शामिल है, जिससे बाद में उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार होता है। इसलिए, लेनदेन खाता अन्य व्यावसायिक सुविधाओं के लिए एक द्वार के रूप में कार्य करता है। औपचारिक वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच एक यथार्थवादी जीवन शैली की सुविधा प्रदान करती है, जिससे परिवारों और व्यवसायों को अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों की योजना बनाने में सहायता मिलती है। वित्तीय सेवा प्रौद्योगिकी स्टार्टअप के लिए भारत में बड़े पैमाने पर अप्रयुक्त बाजार क्षमता है, क्योंकि 20 प्रतिशत आबादी बैंकों से जुड़ी नहीं है, और वर्तमान में 59 प्रतिशत भुगतान नकद में किया जाता है। मोबाइल का उपयोग 64 प्रतिशत से बढ़कर 72 प्रतिशत होने की उम्मीद है, और इंटरनेट की पहुंच लगातार बढ़ रही है।

वित्तीय समावेशन में उभरती प्रवृत्तियाँ

वित्तीय समावेशन का दृष्टिकोण समावेशी और लचीले बहु-हितधारक-नेतृत्व वाले विकास का समर्थन करने के लिए सभी नागरिकों को सुरक्षित और पारदर्शी तरीके से वित्तीय सेवाएं उपलब्ध, सुलभ और किरायायती बनाना है। वित्तीय समावेशन ने हाल ही में नए आयाम हासिल किए हैं। वित्तीय क्षेत्र के विशेषज्ञों ने लाखों लोगों के लिए वित्तीय सेवाओं तक औपचारिक पहुंच के बढ़ते महत्व को आर्थिक विकास और अंततः, देश के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में समझा है। वृहद स्तर पर वित्तीय समावेशन दुनिया को बदलने के लिए 2030 तक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।



दरवाजे पर प्रचुर अवसर दस्तक दे रहे हैं। हालाँकि, एक ही समय में कई चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। सरकारी संस्थानों, नीति निर्माताओं, बैंकों, सूक्ष्म-वित्त संस्थानों और वित्त उद्योग के अन्य खिलाड़ियों समेत सभी हितधारक चालू वर्ष में वित्तीय समावेशन के लिए ढेर सारे डिजिटल समाधान लाने के लिए तैयार हैं। दुनिया भर में, विकासशील देश विशेष रूप से अल्प-सेवित और बैंकिंग सुविधाओं से वंचित आबादी को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने के लिए वित्तीय प्रौद्योगिकी में विभिन्न आविष्कारों का उपयोग कर रहे हैं।

विभिन्न डिजिटल प्रौद्योगिकी कंपनियाँ इन पहलों को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। आधुनिक उपकरण, विविध उत्पादों और सेवाओं के साथ, क्राफायती कीमत पर भारत की बैंक रहित ग्रामीण आबादी तक पहुँच प्रदान करने के लिए एक रोमांचक संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं। दुनिया भर में पिछले साल की तुलना में फिनटेक को अपनाने की दर 53 प्रतिशत से बढ़कर 64 प्रतिशत हो गई है, जिसमें भारत और चीन सबसे आगे हैं।

भारत में 1.3 अरब से अधिक लोगों के पास विशिष्ट आधार पहचान है। लेन-देन मूल्य के मामले में भारतीय फिनटेक बाजार की पहुंच 2023 में लगभग 66.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 137.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है। एक मजबूत तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, फिनटेक तेजी से आगे बढ़ रहा है। हालाँकि, लंबी और जटिल प्रक्रियाएँ, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, खराब कनेक्टिविटी और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ बड़ी चुनौतियाँ पेश कर रही हैं। वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में कई प्रकार के कारक काफी हद तक योगदान दे रहे हैं। गेम-चेंजर्स को चलाने वाले दो प्रमुख घटक हैं - डिजिटल वित्तीय सेवाएँ और खुदरा एजेंट।

डिजिटल वित्तीय सेवाओं में सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो डिजिटल चैनलों के माध्यम से प्रदान की जाती है, जिसमें बचत, भुगतान, निधि अंतरण, क्रेडिट, सूक्ष्म-बीमा आदि शामिल हैं। यह मॉडल आसान पहुंच की सुविधा देता है और लागत प्रभावी है।

खुदरा एजेंट या व्यवसाय संवाददाता/सुविधाकर्ता नियामक ढांचे के भीतर मूल्य वर्धित सेवाएँ, जैसे बिल भुगतान, टिकटिंग आदि प्रदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

फिनटेक डिजिटल नवाचार हैं जो वित्तीय बाजारों में संभावित रूप से परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर रहे हैं। वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) के एक हालिया अध्ययन में फिनटेक के कुछ संभावित लाभों पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें प्रभावशीलता, जोखिम शमन और अधिक वित्तीय पहुंच शामिल है। फिनटेक, जिसमें हाई-एंड हार्डवेयर और अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर सेवाएँ शामिल हैं, वित्तीय समावेशन को और बढ़ाएगी।

इसने फिनटेक से जुड़ी कुछ प्रमुख चुनौतियों की भी पहचान की है, जैसे विभिन्न उपयोग के मामलों के साथ एक विकसित तकनीक को विनियमित करने की कठिनाई, विनियमित क्षेत्र के बाहर गतिविधि की निगरानी करना और तकनीकी पहल से उत्पन्न होने वाले उभरते जोखिमों को पहचानना। डिजिटल समाधान आने वाले दिनों में वैश्विक वित्तीय क्षेत्र को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक माना जाता है। भुगतान, ऋण, परिसंपत्ति प्रबंधन और बीमा से संबंधित नवाचार भी सेवारत बाजार खिलाड़ियों और शुरुआती दोनों के लिए विविध अवसर लाते हैं। दूसरी ओर, नवप्रवर्तन ग्राहकों, वित्तीय संस्थानों और वित्तीय सेवा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नए जोखिम भी उत्पन्न कर सकता है। फिनटेक से जुड़ी नियामक अस्पष्टताएँ विकास में बाधा बन सकती हैं। इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए, विभिन्न न्यायक्षेत्रों के नियामक अधिकारियों सहित अंतर्राष्ट्रीय मानक-निर्धारण निकाय (बीसीबीएस, एफएसबी, सीपीएमआई, डब्ल्यूबीजी, आदि), राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों संगठनों के सहयोग से फिनटेक विकास की आक्रामक जांच करने के लिए आगे कदम उठा रहे हैं।

चुनौतियाँ

भारत जैसे देश में वित्तीय समावेशन का संचालन एक कठिन कार्य है; इसकी विशाल आबादी और विविधता पूर्ण भौगोलिक स्थिति के कारण, ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचना और वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना एक कठिन कार्य है। हालाँकि इससे गरीबों को सेवाओं का लाभ उठाने का अवसर मिलता है, लेकिन कम आय के कारण यह उनके लिए अप्राप्य लगता है। एक और बड़ी चुनौती सेवा प्रदाताओं में विश्वास की कमी है। लैंगिक अंतर एक और चुनौती है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। डिजिटल भुगतान उपकरण हाल के समय का सर्वश्रेष्ठ फिनटेक नवाचार है। दूसरा कारक माइक्रोफाइनेंस संस्थानों का विनियमन है। उनके परिचालन खर्चों की एक सीमा होती है इससे आबादी तक पहुंचने और वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। नवीन फिनटेक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से तेज भुगतान और बेहतर ग्राहक जुड़ाव जैसी बेहतर वित्तीय सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। पीओएस जैसे मौजूदा उपकरणों का निरंतर एकीकरण और बेहतर ग्राहक सेवा, जो व्यक्तिगत हैं, वित्तीय समावेशन को सबसे आगे बढ़ाने में काफी मदद कर सकते हैं। डिजिटल वित्तीय प्रौद्योगिकी में हो रहे नवाचार बहुत आशाजनक हैं

और वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को प्राप्त करने का आश्वासन देते हैं। सरकार और बैंक संस्थान वित्तीय स्वतंत्रता और पहुंच को आगे बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति का लाभ उठा रहे हैं। वित्तीय प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई कंपनियां काम कर रही हैं। उनका लक्ष्य डिजिटल भुगतान, बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और एक आसान वित्तीय दृष्टिकोण के लिए विविध प्रौद्योगिकियां प्रदान करके वित्तीय गतिविधि में बदलाव लाना है। वर्तमान में, हमारे पास इवोल्यूट का डिजिटलआर्म है, जो स्पिरिटस पे नाम का एक ऑल-इन-वन सेवा मॉडल है, जो डिजिटलीकरण और प्रौद्योगिकी के बीच अंतर को पाटता है और लाखों लोगों को वित्त की मुख्यधारा में लाने की सेवा प्रदान करता है।

आगे की राह

अंतिम छोर तक डिलीवरी प्रदान करने के लिए हर गांव तक व्यापक पहुंच: हर गांव तक व्यापक पहुंच हासिल करने के लिए सेवाओं की निरंतर डिलीवरी के लिए वित्तीय आउटलेट/टच प्वाइंट पर मजबूत और कुशल डिजिटल नेटवर्क बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है।

अनुकूलन उत्पाद और सेवाएँ: फिनटेक और बीसी नेटवर्क को बढ़ाकर प्रभावी वितरण सुनिश्चित करके वंचित समाज को वित्तीय सेवाओं का एक गुलदस्ता प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक, सेक्टर-विशिष्ट अनुकूलित फिनटेक वित्तीय उत्पादों को डिजाइन और विकसित करना। इसे हासिल करने के लिए बैंक को बीसी के लिए क्षमता निर्माण का प्रयास करना चाहिए।

आपसी सहयोग: बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को अपने ग्राहक अनुभव और परिचालन उत्कृष्टता को बेहतर बनाने के लिए फिनटेक/स्टार्ट-अप के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करना होगा। बैंक अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी प्राप्त करने के लिए भुगतान, डेटा विश्लेषण और जोखिम प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में फिनटेक गतिविधि भी शुरू कर सकते हैं। क्लिफायती दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए सुदूर क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी-संचालित वित्तीय सेवाओं का व्यापक उपयोग मांग और आपूर्ति के संतुलन की गारंटी देगा।

नवोन्मेष: भारत में, IDRBT ने RBI के सहयोग से एक नियामक सैंडबॉक्स बनाने और बनाए रखने के लिए एक अनुसंधान और विकास संस्थान के रूप में एक अद्वितीय स्थान हासिल किया है ताकि डिजिटल नवप्रवर्तकों को अंतिम रूप से अपनाने के लिए अपने वित्तीय समाधानों का परीक्षण करने में सक्षम बनाया जा सके। बैंक इस संबंध में संस्थान के साथ सक्रिय रूप से जुड़ सकते हैं। बीमा कंपनियों सहित नवप्रवर्तन प्रयोगशालाएँ स्थापित की जा सकती हैं। लागत प्रभावी तरीके से बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए बीमा कंपनियां 'इंश्योर-टेक' जैसे स्टार्टअप के साथ मिलकर काम कर सकती हैं।

ई-शक्ति पोर्टल को बढ़ावा देना: बैंकों ने ई-शक्ति पोर्टल को डेटा भंडारण के लिए बहुत उपयोगी पाया है क्योंकि यह वास्तविक समय के आधार पर है और एक बटन के क्लिक पर एसएचजी के बारे में सभी आवश्यक जानकारी मिल जाएगी, जिससे ऋण स्वीकृत करने में बहुत समय की बचत होगी। भविष्य में एसएचजी के डिजिटलीकरण के लिए ईशक्ति प्लेटफॉर्म को उपयोगकर्ता के अनुकूल, आउटपुट-उन्मुख और 'वन स्टॉप सॉल्यूशन' के रूप में स्थापित करने के लिए तकनीकी आधुनिकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

वित्तीय साक्षरता: वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन किसी देश में वित्तीय स्थिरता के दो गुण हैं। सतत वित्तीय समावेशन विकास के लिए वित्तीय साक्षरता एक आवश्यक घटक के रूप में स्थापित की गई है। समाज के सभी वर्गों के लोगों को वित्तीय शिक्षा प्रदान करने और दूरदराज के क्षेत्रों में जहां बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, जागरूकता पैदा करने के लिए एक अच्छी तरह से समझाई गई वित्तीय साक्षरता योजना (एफएलपी) आवश्यक है।

ग्राहकों की सुरक्षा: डिजिटल वित्तीय सेवाओं से उभरते जोखिमों के कारण, हैकिंग, स्मिशिंग, फ्रिशिंग, विशिंग, क्लोनिंग, फार्मिंग, मैलवेयर इत्यादि की घटनाएं बढ़ रही हैं, और इसलिए एक मजबूत ग्राहक सुरक्षा प्रणाली महत्वपूर्ण है। डेटा सुरक्षा और सूचना/साइबर सुरक्षा भी नए क्षेत्र हैं, जिनसे ग्राहक सुरक्षा नियामक ढांचे के तहत निपटने की जरूरत है।

बीसी को पुरस्कार और सम्मान: बीसी की प्रोत्साहन संरचना में सुधार, कम से कम ब्रेक-ईवन, अनुभवी बीसी की अवधारण और व्यवसाय में कियोस्क और कियोस्क प्रबंधन कंपनी की स्थिरता सुनिश्चित करेगा। सूक्ष्म ऋणों के प्रसंस्करण और ऋण वसूली प्रक्रिया में बीसी की भूमिका पर जोर देने की जरूरत है और उनके प्रदर्शन को जोड़ने के लिए प्रोत्साहन/कमीशन के भुगतान की एक स्वचालित प्रणाली शुरू की जानी चाहिए।

संक्षेप में कहें तो, यह लेख बैंक खातों की तेजी से सार्वभौमिक पहुंच के साथ-साथ क्रेडिट, निवेश, बीमा और पेंशन जैसे विभिन्न वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच और खतरों का प्रभावी ढंग से सामना करने के साथ एक स्थायी भविष्य के लक्ष्य के साथ-साथ अधिक वित्तीय समावेशन के हमारे प्रयासों पर जोर देता है। जैसे साइबर सुरक्षा, गलत बिक्री, डेटा गोपनीयता और उचित वित्तीय शिक्षा के माध्यम से वित्तीय प्रणाली में विश्वास का समर्थन करना। इससे बैंकिंग और गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थानों को अपने ग्राहक आधार और उत्पादों को बढ़ाने और अपनी बैलेंस शीट में विविधता लाने में भी सुविधा होगी, और इन प्रयासों को वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया में एक मजबूत शिकायत निवारण तंत्र द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए।



कविता

चुनावी दंगल



आदित्य कुमार
ग्राहक सेवा सहयोगी
अध्ययन व विकास केंद्र, राँची

चुनाव का मौसम आया है,
जनता के बीच एक हंगामा छाया है।
हर गली, हर नुक्कड़ पर,
नेताओं का जमघट साया है।
वो वादे, वो भाषण बड़े-बड़े,
सपनों का खजाना दिखाते हैं।
रोज़गार, विकास, और समृद्धि के,
मीठे-मीठे गीत सुनाते हैं।
लालच के मिठाई बांटते,
चुनावी वादों की लहर उठाते।
वोट की खातिर हाथ जोड़कर,
जनता के सामने झुक जाते हैं।
पर जब चुनाव बीत जाता है,
सपने सारे टूट जाते हैं।
नेताओं के वादे खो जाते हैं,
जनता फिर से ठगे जाते हैं।
इस बार सोच-समझ कर,
निर्णय हमें लेना है।
झूठे वादों के चक्कर में,
फिर ना हमें फंसना है।
अपने वोट की कीमत जानो,
सच्चे नेता को चुनो।
जो देश को प्रगति की राह पर,
सचमुच आगे बढ़ा सके, ऐसे को चुनो।
चुनाव का चयन सोच-समझ कर,
भविष्य अपना संवारो।
एक मजबूत और समृद्ध देश का,
सपना साकार करो।



रवि कुमार
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, धनबाद



कविता

माँ की ममता

स्नेह प्यार से भरा होता है, ऐसा और कोई कहाँ होता है?
माँ हम सबको प्यारी होती है, पूरे जग में वो सबसे न्यारी होती है।
जुदा होकर माँ से, किसने खुशियाँ पायी है,
आँचल में भरकर माँ लाखों दुआएं लायी है
दुआ लगती माँ की जिसको, ऐसा खुशनसीब हर बेटा कहाँ होता है
माँ नहीं होती जिसकी, बदनशीब ऐसा हर कोई कहाँ होता है
बदनसीबी उसकी छाई है, माँ की ममता जिसने तुकराई है।
ईश्वर की शक्ति भी घबराई है, जब माँ ने अपनी ममता दिखाई है,
क्या आंधी! क्या तूफान! माँ साथ है तो नहीं होना परेशान
परवाह नहीं क्या परेशानी आयी है,
माँ की आंचल में पूरी दुनिया समाई है।
दिल में बसा लो माँ की ममता, देखो फिर कुदरत का करिश्मा,
हर कोई तुमसे प्यार करेगा, नफरत तुमसे कोई क्या करेगा,
इतिहास गवाह है, माँ का प्यार सबसे जुदा है,
जीवन हमारा माँ के आंचल तले ही बसा है
माँ की ममता सबसे जुदा, धरती पर हमारा यही खुदा है।
माँ की ममता सबसे जुदा है।





आलेख

भारतीय अर्थव्यवस्था : कल, आज और कल

भूमिका

14 -15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को जब घड़ी की सुइयों 12 बजा रहीं थीं तो तत्कालीन अन्तरिम सरकार के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू संविधान सभा में अपना प्रसिद्ध भाषण ट्रस्ट विद डेस्टिनी (नियति से वादा) दे रहे थे। उस दूरदर्शी भाषण की एक पंक्ति भारतीय अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में तब तो नहीं (मात्र 2.7 लाख करोड़ जीडीपी का आकार था) किन्तु आज (विश्व की पाँचवी बड़ी अर्थव्यवस्था हैं, नौमिनल जीडीपी के आधार पर एवं तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था वास्तविक जीडीपी के आधार पर) सही साबित होती प्रतीत हो रही है, और वह प्रेरित करने वाली पंक्ति है -जब पूरा विश्व सो रहा होगा तब भारत जीवन और स्वतन्त्रता की नयी और उजली चमकती सुबह के साथ उठेगा। आइये अर्थव्यवस्था एवं उसके कुछ महत्वपूर्ण घटकों के बारे में जाने।

भारतीय अर्थव्यवस्था : एक संक्षेप में

किसी राष्ट्र के द्वारा अपने नागरिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से, उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुए अर्थ को केंद्र में रखकर बनाई गयी व्यवस्था ही अर्थव्यवस्था कहलाती है। अर्थव्यवस्था तीन प्रकार की होती है-पूँजीवादी, समाजवादी और मिश्रित। भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है।

भारत की अर्थव्यवस्था को और अच्छे से समझने के लिए इसे हम तीन संरचनात्मक क्षेत्रों में विभाजित करते हैं। प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र।

भारत हमेशा से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था को कृषक अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है। इसकी प्रमुख वजह है कि इस क्षेत्र का भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हमेशा ही प्रमुख योगदान रहा है एवं ये क्षेत्र भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश की आधी से अधिक आबादी को हमेशा से ही स्थानीय स्तर पर ही प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभाता आया है। इसलिए कृषि क्षेत्र को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी भी



सुमित कुमार

ग्राहक सेवा सहयोगी
सारस्वत खत्री पाठशाला शाखा

कहा जाता है। जीडीपी में योगदान की दृष्टि से सेवा क्षेत्र का हिस्सा सर्वाधिक है किन्तु रोजगार देने के मामले में कृषि क्षेत्र अग्रणी भूमिका निभाता है।

अर्थव्यवस्था के तृतीयक क्षेत्र में परिवहन, संचार, आईटी, व्यवसाय और अन्य सेवा प्रदाता संबन्धित क्षेत्र आते हैं। तृतीयक क्षेत्र में ऐसी गतिविधियां आती हैं जो प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में मदद करती हैं। तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सर्वाधिक योगदान देता है।

अर्थव्यवस्था दो प्रकार की होती है- व्यष्टि एवं समष्टि। व्यष्टि का अर्थ होता है सूक्ष्म या छोटा, जब हम किसी देश के अर्थव्यवस्था के सिर्फ एक भाग जैसे संचार या आटोमोबाइल उद्योग की अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते हैं तो यह व्यष्टि अर्थशास्त्र कहलाता है। वहीं जब पूरे अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया जाता है तो यह समष्टि अर्थशास्त्र कहलाता है।

सकल घरेलू उत्पाद किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का मापक होता है। किसी देश के द्वारा एक निश्चित अवधि में उत्पादित हुई सभी अंतिम वस्तु एवं सेवाओं की कुल मौद्रिक मूल्य को उस देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) कहते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था : आर्थिक सुधारों (1991) के पहले तक

पहली शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक भारत देश की अर्थव्यवस्था प्राचीन एवं मध्ययुगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी जिसका सम्पूर्ण विश्व की एक-तिहाई से लेकर एक-चौथाई सम्पदा पर नियंत्रण था। जिसके फलस्वरूप भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। मुगल काल (1526 से 1858



तक) में भी भारत ने अभूतपूर्व समृद्धि प्राप्त की थी। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, सन 1820 में भारत की अर्थव्यवस्था का वैश्विक अर्थव्यवस्था में 16% की हिस्सेदारी थी जिसे अंग्रेजों के लालच और लूट खसोट की नीति ने 5 दशकों में (1870 तक) घटाकर 12% और 1947 तक मात्र 4% पर ला छोड़ा। 15 अगस्त, 1947 को जब सत्ता का हस्तांतरण हुआ तब भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार मात्र 2.7 लाख करोड़ था जोकि वैश्विक अर्थव्यवस्था का मात्र 4% था। 1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव में मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव रखा गया था। इसी क्रम में भारत सरकार ने 15 मार्च, 1950 को योजना आयोग नामक एक सरकारी संस्था की स्थापना की जिसके पदेन अध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री होते थे और इस संस्था का प्राथमिक उद्देश्य था। यह संस्था 13 अगस्त 2014 को भंग करके नीति आयोग में रूपांतरित हो चुकी है देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए नीतियाँ और योजनाएँ बनाना और वो भी इस प्रकार से कि हमारे देश के मानव एवं वस्तु संसाधनों का बेहतर तरीके से इस्तेमाल हो सके जिससे लोगों के जीवन जीने के स्तर, प्रति व्यक्ति आय, युवाओं का पलायन एवं रोजगार के साधन बढ़ाएँ जा सकें। ये योजनाएँ पाँच वर्षों के लिए बनानी जाती थीं, जिन्हे पंचवर्षीय योजनाओं के नाम से जाना जाता था। पंचवर्षीय योजनाएँ केंद्रीयकृत आर्थिक और सामाजिक विकास कार्यक्रम थीं जो यूएसएसआर में प्रचलित योजनाओं के आधार पर बनाई गयी थीं। पहली पंचवर्षीय योजना वर्ष 1951 में लायी गयी थी। यह कहना गलत न होगा कि ये योजनाएँ कुछ हद तक तत्कालीन समस्याओं का हल देने में सफल भी रहीं थीं। प्रारम्भ में इस बात पे ध्यान केन्द्रित किया गया था कि देश के पास उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल अधिक से अधिक केंद्र एवं राज्य शासित औद्योगिक प्रतिष्ठानों के निर्माण में करें, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ें, त्वरित रूप से देश में निर्माण बढ़ें, लोगों की आय बढ़ें, आयात खर्च कम हो, बजट एवं चालू खाते का घाटा कम हों

इत्यादि। इस प्रयास का फल यह हुआ कि औद्योगिक उत्पादन की दर वर्ष 1960 में 12.1% हो गयी जहाँ लगभग 5% के आस पास रहती थी। पंचवर्षीय योजनाओं के पूर्व वास्तविक जीडीपी के आंकड़ों का अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि जीडीपी की औसत विकास दर 1951/52 से 1959/60 के बीच 3.6%, 1960/61 से 1969/70 के बीच 3.2%, 1970/71 से 1979/80 के बीच 3.4% और 1980/81 से 1987/88 के बीच 4.9% थी (केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन 1988 के आंकड़ों के अनुसार)। 1 अप्रैल 1935 को भारत के केन्द्रीय बैंक - भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना- बैंक नोटों के निर्गम को विनियमित करना और रिज़र्व बनाए रखना ताकि भारत में मौद्रिक स्थिरता बनाई रखी जा सके और सबसे महत्वपूर्ण मौद्रिक नीति तथा कर्ज व्यवस्था का संचालन करना जिससे देश को लाभ हो सके, उद्देश्य से की गयी थी। देश में बैंको की वित्तीय हालत को ठीक करने एवं बैंकिंग फ़र्मों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 वर्ष 1949 में पारित किया गया। इसके इतर इन चार दशकों(1951-1991) के दौरान कई और महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ हुईं जैसे- एसबीआई की स्थापना(1 जुलाई, 1955), कंपनीज एक्ट 1956 का गठन वर्ष 1956 में, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान की स्थापना (2 मई, 1951- प्रशांत चंद महालनोबिस को भारतीय सांख्यिकीय का जनक माना जाता है), हरित क्रांति(1968-अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए अति आवश्यक कदम था एवं भारत में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन थे), तत्कालीन 14 बड़े निजी बैंको का राष्ट्रीयकरण(19 जुलाई, 1969), 26 सितंबर, 1975 के दिन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विकसित करने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, व्यापार, उद्योग और अन्य उत्पादक गतिविधियों के विकास हेतु सस्ता एवं सुलभ तरीके से कर्ज और अन्य सुविधाएँ देने के उद्देश्य से क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना की गयी, 14 अप्रैल, 1980 को शेष 6 बड़े बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया(भारत में दो बार बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया ताकि बैंक शहरों के अलावा भारत के ग्रामीण और बैंक सेवाओं से वंचित क्षेत्रों में पहुँचें और वहाँ की स्थिति में सुधार करें तथा कृषि एवं लघु उद्योगों को अर्थव्यवस्था के विकास का लाभ मिलें)। 12 जुलाई, 1982 को राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना हुई। कृषि सहकारिता, समन्वित ग्रामीण विकास का संवर्धन करने, ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि सुनिश्चित करने जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, सूक्ष्म एवं लघु उद्योग, कुटीर और ग्राम उद्योगों (भारत में औद्योगीकरण से पूर्व गावों में लोग अपने जीविकोपार्जन हेतु शारीरिक श्रम से जुड़े कार्य करते थे) को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक विकास बैंक के रूप में की गयी थी। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी- भारत में स्वयं सहायता समूह की शुरुआत वर्ष 1984 में प्रोफेसर युनुस के द्वारा की गयी थी जिसका

मूल उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता फैलाना, उन्हें उनकी क्षमता का बोध कराना एवं उसका विकास करना एवं सबसे महत्वपूर्ण, ग्रामीण एवं कम पढ़ी-लिखी महिलाओं को उनके निवास पर ही रोजगार प्रदान करके आर्थिक रूप से सशक्त बनाना) एवं किसानों को सस्ता एवं सुलभ कर्ज देने के लिए विभिन्न सहकारी, वाणिज्यिक, ग्रामीण, क्षेत्रीय तथा वित्तीय संस्थानों को पुनर्वित्त सहायता प्रदान करना भी राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना का एक उद्देश्य था।

2 अप्रैल, 1990 को भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) की स्थापना लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुई थी। ये एक नियामक संस्थान है जो भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग(एमएसएमई- सूक्ष्म उद्योग जिनमें प्लांट और मशीनरी में अधिकतम निवेश की सीमा 1 करोड़ और वार्षिक टर्नओवर 5 करोड़, लघु उद्योग जिनमें प्लांट और मशीनरी में अधिकतम निवेश की सीमा 5 करोड़ और वार्षिक टर्नओवर 10 करोड़, मध्यम उद्योग जिनमें प्लांट और मशीनरी में अधिकतम निवेश की सीमा 50 करोड़ और वार्षिक टर्नओवर 250 करोड़ होता है) का संचालन, नियमन एवं अनुमति प्रदान करती हैं। सिडबी का प्राथमिक उद्देश्य बैंकों को एमएसएमई और एसएसआइ को व्यापार के विस्तार करने के उद्देश्य से धन प्राप्त करने और कार्यशील पूंजी संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद प्रदान करना है।

भारतीय अर्थव्यवस्था : आर्थिक सुधारों (1991) से वर्तमान (2023) तक

नेहरू सरकार की 1963 की औद्योगिक नीति के अनुसार, किसी अधिकृत संस्था के द्वारा- किसी कार्य को करने या किसी वस्तु को रखने, उस पर स्वामित्व जमाने या उसका क्रय-विक्रय करने की औपचारिक अनुमति चाहिए होती थी जिसे अनुज्ञा या परमिट (licence) कहते थे। धीरे-धीरे सभी कामों में अनुज्ञा की आवश्यकता पड़ने लगी जिससे लाल-फीताशाही व्यापार पर हावी हो चली और प्रगति के कार्य मंद पड़ने लगे, इस दौर को लाइसेन्स राज या इंसपेक्टर राज कहा गया। इस सरकारी अति-हस्तक्षेप को प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव जी की सरकार ने जून 1991 में इस प्रक्रिया पर काफी हद तक रोक लगा दी, जिसे भारत में उदारीकरण की नीति या आर्थिक सुधारों की शुरुआत माना जाता है। आर्थिक सुधारों का परम उद्देश्य अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप को न्यूनतम करना था और आर्थिक समस्याओं के बाज़ार आधारित समाधान को बढ़ावा देना था। यह कदम भारतीय अर्थव्यवस्था को नयी दिशा प्रदान करने वाला था। इस उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण मॉडल (एलपीजी) को पूरे देश में लागू किया गया। इस एलपीजी नीति के तहत भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संस्थाओं से संपर्क किया और अपने देश में विदेशी निवेश एवं व्यापार पर लगे

प्रतिबंधों को काफी हद तक निवेश के अनुकूल किया एवं भारत की आर्थिकी को पुराने सोवियत मॉडल से खुले बाज़ार आधारित मॉडल में तब्दील किया अर्थात् आयात-निर्यात पे कस्टम दरों को कम किया गया, लंबी अवधि के लिए उदार विदेश व्यापार नीति अपनायी गयी, भारतीय मुद्रा को आंशिक रूप से परिवर्तनीय बनाया गया तथा सबसे प्रमुख विदेशी निवेश की सीमा को बढ़ाया गया, इन कदमों के फलस्वरूप भारत में व्यापार, रोजगार, विदेशी मुद्रा भंडार एवं आर्थिक विकास दर में तेज वृद्धि दर्ज की गयी और लाखों लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले। भारत सरकार के द्वारा उठाए गए इन ठोस आर्थिक कदमों को आर्थिक सुधारों के नाम से जाना गया। प्रसिद्ध आर्थिक सुधार भारतीय अर्थव्यवस्था में मील का पत्थर साबित हुए, क्योंकि इसके पूर्व भारत आर्थिक भुगतान संतुलन की गंभीर समस्या से उत्पन्न हुई आर्थिक मंदी से जूझ रही थी। सरकार ने विशेष क्षेत्रों के बेहतर नियंत्रण के लिए कुछ नियामकों की स्थापना की जैसे-

वर्ष 1992 में पूंजी बाज़ार नियामक सेबी की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य प्रतिभूति बाज़ार के निवेशकों के हितों का ध्यान रखना एवं बाज़ार का विकास तथा नियमन करना था।

वर्ष 1997 में दूरसंचार सेवाओं के क्षेत्र में पारदर्शिता एवं स्वच्छ वातावरण लाकर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करना एवं उनमें गुणात्मक सुधार लाते हुए, उसे विश्व-स्तरीय सेवा का सम्मान दिलाने के उद्देश्य से नियामक ट्राई की स्थापना हुई।

वर्ष 2003 में भारत में पेंशन क्षेत्र को बढ़ावा देने, विकसित करने और विनियमित करने के लिए भारत सरकार द्वारा पेंशन नियामक पीएफ़आरडीए की स्थापना हुई।

अटल बिहारी बाजपायी प्रशासन के दौरान, व्यापक उदार सुधार हुए, एनडीए गठबंधन ने होटल, बीएसएनएल, मारुति सुजुकी और हवाई अड्डों सहित सरकारी स्वामित्व वाले व्यवसायों का निजीकरण शुरू किया। गठबंधन ने कर कटौती नीतियों को भी लागू किया, घाटे और ऋणों को कम करने के उद्देश्य से राजकोषीय नीतियाँ बनवाईं, और सार्वजनिक कार्यों के लिए पहल बढ़ाई।

वर्ष 2008 में वैश्विक आर्थिक संकट आया जिससे भारत भी अछूता नहीं रहा। यह अमेरिका में चलनिधि की कमी से पैदा हुआ। यह बड़ी वित्तीय संस्थाओं के पतन, राष्ट्रीय सरकारों द्वारा बैंकों की जमानत और दुनिया भर में शेयर बाज़ार की गिरावट का कारक बना। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार खत्म हो गया। मांग में भारी कमी हो गयी और औद्योगिक विकास के पहिये जाम हो गए। लाखों लोगों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा। कृषि उत्पादन में भी 60% तक की कमी हो गयी। वित्त वर्ष 2005-06 एवं 2006-07 में भारत की आर्थिकी 8.1% एवं 7.7% की तेज विकास दर प्राप्त कर रही थी



वहीं 2007-08 में ये वैश्विक मंदी की आहट से गिरकर 3.1% हो गयी। इस वर्ष भारत की जीडीपी 12वें स्थान पर थी। लेकिन इसका असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर ज्यादा समय तक नहीं रहा और 2009-10 में ये बढ़कर 7.9% और 2010 में 8.5% की उच्च दर को प्राप्त कर ली जबकि इसी वर्ष वैश्विक अर्थव्यवस्था की दर 9.3% थी। ये भारत की मजबूत आर्थिक नीतियों का ही असर था जो भारतीय अर्थव्यवस्था इतने बड़े तूफान को भी झेल गयी। फिर यह 5.2%(2011 में) से 6.4%(2013 में) के बीच मध्य गति से विकासशील बनी रही।

वर्ष 2014 के अगस्त माह में प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत समाज के ऐसे तबके के खाते शून्य शेषराशि पर युद्धस्तर पर खोले गए जिनके बैंको में कभी कोई खाता नहीं था अर्थात यह आबादी पूरी तरह से अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा से कटी हुई थी। भारत की आजादी के साठ साल बाद भी सिर्फ 40% आबादी के बैंक खाते थे एवं 650000 लाख गावों में से सिर्फ 6% में ही बैंक शाखाएँ थी। केंद्र सरकार के द्वारा दिया जाने वाला लाभ भी लाभार्थियों को पूरी तरह से नहीं मिल पाता था एवं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता था। इस योजना के तहत अब तक (29/11/2023) 51 करोड़ बैंक खाते खोले गए एवं इनमें 2,08,855 करोड़ रुपये जमा हो चुके हैं। ये योजना वित्तीय समावेशन के तहत आती है, अर्थात समाज के पिछड़े एवं कम आय वर्ग वाले लोगों को ऋण, भुगतान, बीमा, धनप्रेषण आदि आधारभूत सेवाएँ उनके द्वारा वहनीय लागत पर प्रदान करना। इसी क्रम में प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना तथा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के माध्यम से निम्न दर पर बीमा, अटल पेंशन योजना से सस्ती पेंशन योजना उपलब्ध कराई गयी है।

वर्ष 2016 में सरकार ने कंपनियों और व्यक्तियों के दिवालियापन समाधान (आईबीसी-2016) के लिए समयबद्ध प्रक्रियाएँ बनाने के लिए दिवाला और दिवालियापन संहिता को आगे बढ़ाया।

1 जुलाई, 2017 को वस्तु और सेवा कर अधिनियम को मंजूरी दे दी, जिसका उद्देश्य कई अप्रत्यक्ष करों को एकीकृत कर संरचना से बदलना था। इस अधिनियम से सरकार के राजस्व आय में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गयी।

वर्ष 2019 से 2021 तक कोरोना महामारी ने सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। 2019 में विकास दर गिरकर 3.1% तथा 2020 में -5.8% हो गयी (जोकि 2018 में 6.5% थी)। लेकिन इसका असर बहुत लंबा नहीं टिक पाया और 2021 के आखिरी तिमाही के उन्नत परिणामों और सरकार के द्वारा एमएसएमई तथा अन्य उद्योगों को दिए गए भारी भरकम आर्थिक पैकेज के फलस्वरूप 2021 में विकास दर 9.1% रही। भारत ने अपनी कुशल आर्थिक रणनीति, मुद्रास्फीति तथा देश में वैक्सीन प्रबंधन एवं मित्र देशों से वैक्सीन मैत्री के जरिए कोरोना काल में अपने वसुधैव कुटुंबकुम की भावना को सर्वोपरि रखते हुए देश का नाम ऊंचा किया।

2023(जब भारत की आजादी का अमृत महोत्सव काल चल रहा था) में भारत ने विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का सम्मेलन जी-20 आयोजित करके एक नए एशियन सूर्य के उदय का संदेश वैश्विक शक्तियों को दिया। इस सम्मेलन के पहले दिन ही सभी सदस्य देशों की सर्वसम्मति से घोषणा पत्र जारी करना, एक नए वैश्विक महाशक्ति के उदय का प्रमाण है। जी-20 का सफल आयोजन भारत को वर्ष 2035 में ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों के आयोजन के लिए अपनी दावेदारी प्रस्तुत करने में मदद करेगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य तथा अंतिम शब्द-

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 10 वें विविध गुजरात सम्मेलन में यह उम्मीद जताई है कि भारत की अर्थव्यवस्था वर्ष 2028 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर(जोकि वर्तमान में 3.7 ट्रिलियन डॉलर है) यानि विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था होगा और 2047 तक जोकि भारत की आजादी का शताब्दी वर्ष है, 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगा एवं भारतीय प्रधानमंत्री जी के विज़न - वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। वर्ष 2028 तक भारत, अमेरिका और चीन के बाद तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा। निःसन्देह भारत की अर्थव्यवस्था जिस गति से विकास कर रही है, ये वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास में अग्रणी भूमिका निभाएगी एवं वैश्विक विकास का इंजन बनेगी। भविष्य में भारत एक नए विश्व क्रम को जन्म देगा।



कविता

धरा



निहारिका वशिष्ठ
ग्राहक सेवा सहयोगी
एच 54 कर्नॉट पैलेस शाखा

माँ तो माँ है ये धरती
स्नेह तुम्हारा मांगे है,
प्रेम करो रखो ख्याल तुम
बस इतना ही चाहे है।

वस्त्र है इसके हरे-भरे वन
जल ही है इसका शृंगार,
नीरस ना करो इसका जीवन
मत समझो इसको तुम भार।

चाहें हम शुद्ध वायु-जल
पर ना करते कोई प्रयत्न,
भावी जीवन के उद्धार के लिए
तुम कर डालो कोई जतन।

एक पेड़ लगाओ चार
कर दो धरती का उद्धार,
जल ही जीवन है मान लो तुम
अपनी गलती पहचान लो तुम।

इस माँ को गले लगाओगे
तब ही सच्चा सुख पाओगे,
धन्य कहेगी तुमको ये धरा
जब अपना कर्तव्य निभाओगे।



हेमा निम्बेकर
ग्राहक सेवा सहयोगी
एच 54 कर्नॉट पैलेस शाखा



कविता

अनुभूति

जिस तरह डूबे हो जब गहराई में तब
आसमान की ऊँचाइयों का अनुमान नहीं होता।

इसी तरह आसमान में उड़ते हुए कभी
सागर की गहराईओं का गुमान नहीं होता।।

कल कल बहते पानी का कोई साहिल कोई किनारा नहीं होता।
पल पल हारने वाले मन का कोई साथी कोई सहारा नहीं होता।।

रोज़ उठती है सागर में ऊँची बड़ी लहरें
जिनका कोई मुकाम नहीं होता।

मेहनत और लगन से काम करने वालों का
कभी कोई काम नाकाम नहीं होता।।

मल मल के बिछोने पे सोने वालों को
कभी काँटों के बिस्तर की चुभन का आभास नहीं होता।

रात की शीतल चांदनी में नहाने वालो को दिन
के तेज तपते सूरज का सामना करने का साहस नहीं होता।।

भीड़ में खड़े होके दर्शक बन किसी की कला
निहारते हुए मंच की महत्वता का कभी ज्ञान नहीं होता।

नेता बन बैठे ताकत के नशे में चूर व्यक्ति को कभी
अपनी बड़ी से छोटी भूल का भी भान नहीं होता।।

मुशायरे में बैठा वाह-वाह करने वाला हर शख्स
असल में शायर नहीं होता।

यह भी तो सच है दोस्तों को तर्क देने वाला
कभी भ्रम का शिकार नहीं होता।।



कविता

पापा की बेटी



ब्रिजेश कुमार श्रीवास्तव
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

मैं पापा की बेटी हूँ।
माँ तो केवल पिता की अर्धांगिनी है।
मैं तो दोनों के प्यार की रागिनी हूँ।
बचपन में माँ के आँचल में
बचपन में माँ के आँचल में
तो कभी पिता के कन्धों पर बरोरा था मेरा।
पिता के आँखों की चमक का पर्याय
माँ के होंठों की मुस्कराहट,
घूँघरू की झनकार था मेरा।।
समाज की विषम परिस्थितियों का घेरा
समाज की विषम परिस्थितियों का घेरा
तो कभी आधुनिकता की चाहत में जीवन का आधार था।
दुनिया की भीड़ में पहचान बनाने का
पिता का छोटा सा सपना साकार था।।
विद्या का महत्व पिता ने बताया
तो संस्कार का परिचय माँ से हुआ।।
बड़ी हुई तो शहर छोटा हो गया और
माँ का आँचल बड़ा हो गया।।
जिस आँचल में घुटने से पैरों पर चलने का सफर तय हुआ
शादी के बाद वो आँगन मेहमान
तो ससुराल मेजबान हो गया।
माँ के प्यार ने जमाने की रोशनी में घूमने का एहसास कराया
तो पिता के झूठे झाड़ ने
तो पिता के झूठे झाड़ ने
कठिनाईयों के अंधेरों में खोने से बचाया
मायके की शान हूँ या ससुराल की पहचान
यह परम्परा है या प्रकृति।।
पर सत्य तो यही है कि मैं पापा की बेटी हूँ
माँ- पापा के प्यार की रागिनी हूँ।।



राजेश कुमार दास
सहायक महाप्रबंधक
प्र.का. बेंगलूरु



कविता

जिंदगी

जब जब मेरी ख्वाइशें दम तोड़ी है
तब तब निराशा के खामोशी में गुम गई मेरी जिन्दगी है।।
जैसे जैसे तुफानों में समंदर के किनारे
बैठी मुशाफिर करती उसे शांत हो जाने की बंदगी है।।

मुड के देखता हूँ बीते हुए लम्हों को,
जगमगाती हुई अनुभवों के आँने को
चलते चलते गिरना, गिरके फिर उठना
नयी नयी उम्मीदों के अल्हड़पन की अठखेलियों को।।

जब जब उत्साह की खिड़की से
उम्मीदों को तरासने की कोशिश की है,
तब तब उम्मीद नई उमंगों में
कलकल निनाद के साथ जिंदगी गुलजार की है।।

जैसे रात के अंधेरों को चीर
दुनिया को करती सूरज की रोशनी है,
रंग बिरंगे कमलों की खुशबू से मोहित
भवरो के गुंजन हैं।।

हंसी में खुशी, दिल की धड़कन, जीने के तरीके
एक नए रूपे में अंगड़ाई लेने लगती है,
अँधेरे के बाद उजाला, गिरने के बाद उठना,
दुख के बाद सुख यही तो जिन्दगी है।।



दिनांक 15 मई, 2024 को आयोजित प्रधान कार्यालय, राजभाषा अनुभाग, बेंगलूरु की 192वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान गृह पत्रिका 'श्रेयस पत्रिका' के 293वें अंक का विमोचन करते हुए श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री डी. सुरेन्द्रन, मु.म.प्र एवं अन्य कार्यपालक गण उपस्थित रहे।



दिनांक 28 मई, 2024 को आयोजित प्रधान कार्यालय के मुख्य सम्मेलन कक्ष में 'डिजिटल भारत में फिनटेक के प्रसार में भारतीय भाषाओं की भूमिका' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन प्रबंधन विभाग ने की। परिचर्चा कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों के कर्मचारी भाग लेते हुए। श्री प्रियांक प्रसून, मंडल प्रबंधक, डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ विभाग मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।



केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking



Together We Can

अपनों से अपनेपन का
स्पर्श केनरा हील

आपका स्वास्थ्य
हमारी प्राथमिकता



- ✚ स्वयं और अपने आश्रितों के स्वास्थ्य बीमा दावों का TPA के माध्यम से निपटान करते समय अस्पताल भर्ती खर्चों की कमी को पूरा करता है।
- ✚ राशि: ₹ 5 लाख तक
- ✚ शाखा में जाने की आवश्यकता नहीं।
24x7 एंड-टू-एंड डिजिटल प्रोसेसिंग

- ✚ चुकौती - अधिकतम 36 महीने
- ✚ परेशानी मुक्त अस्पताल डिस्चार्ज के लिए अस्पताल को सीधे भुगतान

सर्वोत्तम
आपका अधिकार

नियम और शर्तें लागू



www.canarabank.com

1 बैंक
नंबर

1800 1030

